एक नए स्त्रोत के साथ जीवन जीना

श्रृंखला की पहली पुस्तकः

मसीह में एक

रूपांतरित जीवन जीना

बिल लवलेस

क्राइस्ट ईज़ लाईफ मिनिस्ट्रीज़

Copyright © 2010 by Bill Loveless

All rights reserved. This book may not be copied or reprinted for a commercial gain or profit. The use of this material for personal or group study is permitted.

Scripture taken from the Holy Bible, New International Version®, copyright © 1973, 1978, 1984 International Bible Society. Used by permission of Zondervan. All rights reserved.

Scripture taken from the Holy Bible, New Living Translation, copyright © 1996 by Tyndale Charitable Trust. Used by permission of Tyndale House Publishers.

Scripture taken from the New American Standard Bible®, copyright © 1960, 1962, 1963, 1968, 1971, 1972, 1973, 1975, 1977, 1995 by The Lockman Foundation. Used by permission.

Scripture taken from the New King James Version, copyright © 1982 by Thomas Nelson, Inc. Used by permission. All rights reserved.

Scripture quotations marked (GNT) are from the Good News Translation in Today's English Version—Second Edition, copyright ©1992 by American Bible Society. Used by permission.

Christ Is Life Ministries

Website: www.christislifeministries.com

Email: bill@christislifeministries.com

एक नए स्त्रोत के साथ जीवन जीना

विषय सूची

इस अध्ययन का प्रारूप ....

अध्याय एक - एक 'साधारण' मसीही जीवन और 'सच्चे' मसीही जीवन जीने के बीच क्या अंतर है?...........

अध्याय दो - परमेश्वर में होकर अपना जीवन जीने के लिए परमेश्वर की और आपकी क्या भूमिका है?....

अध्याय तीन - विश्वास के मार्ग और मसीह को अपने जीवन के रूप में समझने के विषय में महत्वपूर्ण सत्य ....

अध्याय चार - विजय, स्वतंत्रता और चंगाई के निमित्त परमेश्वर के वायदों का अनुभव करना.......................

अध्याय पाँच - विश्वास की लड़ाई...

अध्याय छह - विश्वास के मार्ग के विषय में अपेक्षाएँ...

इस अध्ययन का प्रारुप

एक नए स्रोत से लिविंग लाइफ का अध्ययन करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। शुरू करने से पहले, मेरा मानना है कि आपको इस अध्ययन का प्रारूप देना मददगार सिद्ध होगा। इस अध्ययन में छह पाठ हैं, और प्रत्येक पाठ में पाँच दैनिक पठन होते हैं (पहला दिन, दूसरा दिन इत्यादि)। यदि आप सप्ताह में एक बार मिलते हो, तो आपको पाँच दैनिक पठन को पूरा करने के लिए सात दिन लगेंगे। प्रत्येक पाठ के दौरान **प्रश्न, मनन के लिए आयतें, और एक परमेश्वर** को शामिल करने का अनुभाग होगा।

प्रश्न

प्रश्न मुख्य रूप से आपके द्वारा किए जा रहे विश्वास को सत्य के साथ तुलना करने के लिए तैयार किए गए हैं जो आपने अभी पढ़ा है। ये प्रश्न किसी भी झूठी मान्यताओं को उजागर करने के लिए महत्वपूर्ण हैं जो आपके पास हो सकते हैं।

पवित्रशास्त्र का मनन

कुछ लोग नए युग के अर्थो के कारण 'मनन' शब्द के साथ संघर्ष करते हुए पाये जाते हैं। हालांकि, यह एक बाइबल आधारित शब्द है जिससे हमें शर्मिंदा होने की आवश्यकता नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि हम <u>क्या</u> और <u>किस</u> पर मनन कर रहे हैं। हमारे मनन का लक्ष्य परमेश्वर और उसकी सच्चाई पर होगा। इस अध्ययन के लिए 'मनन' शब्द की मेरी परिभाषा उन सत्यों के बारे में सोचना है जिन्हें आप पढ़ रहे हैं।

परमेश्वर को शामिल करना

प्रत्येक पाठ में ''परमेश्वर को शामिल करना' खंड इस अध्ययन के **सबसे** महत्वपूर्ण भाग हैं। यह अनुभाग आपको पवित्र आत्मा से यह पूछने के लिए तैयार किया गया है कि आपने जो भी पढ़ा हैं, उसके विषय में व्यक्तिगत प्रकाशन, समझ और अमलीकरण प्रदान करें। यह विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण होता है जब आप उन सच्चाइयों को पाते हो जो उनके विपरीत होता है जिनपर आप विश्वास करते हो। (यदि हम उसकी सच्चाई प्रकट करने के लिए परमेश्वर की तलाश नहीं करते हैं, तो हम उन झूठी मान्यताओं से कभी आगे नहीं बढ़ पाएँगे जिनपर हम विश्वास करते हैं।) इसलिए, सुनिश्चित करें कि जब आप अध्ययन करते हो तो परमेश्वर को शामिल करने के लिए समय निकालें।

प्रकाशन

चूँकि मैं पूरे अध्ययन में 'प्रकाशन' शब्द का उपयोग करूँगा, इसलिए मैं यह परिभाषित करना चाहता हूँ कि जब मैं इस शब्द का उपयोग करता हूँ तो मेरा क्या मतलब है। ''प्रकाशन'' का अर्थ केवल यह है कि परमेश्वर **स्वाभाविक** रूप से अपनी सच्चाई लेता है और यह आपके और आपके जीवन की परिस्थितियों के लिए व्यक्तिगत बनाता है। प्रकाशन आपको बौद्धिक समझ से परमेश्वर की सच्चाई की आत्मिक समझ की ओर ले जाता है।

महत्वपूर्ण सत्य

इस अध्ययन के दौरान आप इस महत्वपूर्ण सत्य को याद रखें:

आप जो विश्वास करते हैं उससे परे आप नहीं जीएँगे।
यदि आप जो विश्वास करते हैं वह झूठ है, तो आप वैसा ही जीएँगे।

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि जो आप विश्वास करते हैं वह आपके विचार, आपके व्यवहार और आपके द्वारा चुने गए चुनावों को प्रभावित करता है। इसलिए, इस अध्ययन के माध्यम से परमेश्वर के उद्देश्यों में से एक यह है कि आपकी झूठी मान्यताओं का खुलासा करना, आपके मन को नया करना और यूहन्ना 8:32 के अनुसार आपको स्वतंत्र करना। इसलिए, आपके लिए मेरी प्रार्थना यह है कि आप इस अध्ययन के दौरान अपनी झूठी मान्यताओं से मुक्त करने के लिए परमेश्वर को खोजें और उन प्रतिकूल प्रभावों को भी जो आपके जीवन में वे झूठी मान्यताएँ बना रहे हैं।

अध्याय 1

एक 'साधारण' मसीही जीवन और 'सच्चे' मसीही जीवन जीने के बीच क्या अंतर है?

पहला दिन

परिचय

इस से पहले कि हम इस गहन अध्ययन को आरम्भ करें, मुझे लगता है कि यह आवश्यक है कि आप यह बात जान लें कि मैं जो सत्य आपसे बाँटने जा रहा हूँ वह कोई धार्मिक सत्य नहीं है परन्तु एक ऐसा सत्य है जो मेरी सोच, मेरी इच्छाशक्ति, मेरी भावनाओं, मेरी भक्ति और मेरे आचरण और चुनाव में परिवर्तन लाने में सक्षम है। मैंने बहुत से मसीही लोगों के बीच अपनी सेवकाई दी है और प्रत्यक्ष रूप से उनके जीवन को इस सत्य से स्वतंत्र होते हुए भी देखा है। मुझे विश्वास है कि इसे जानने के बाद आप भी इस सत्य को अवश्य ही ग्रहण करना चाहेंगे। खुशखबरी यह है कि यीशु मसीह ने हर एक मसीही के जीवन में परिवर्तन की प्रतिज्ञा हमें दी है।

अध्याय एक का अवलोकन

- एक साधारण मसीही जीवन और सच्चे मसीही जीवन जीने के बीच का अंतर समझना
- सच्चे मसीही जीवन का सही अर्थ परमेश्वर के सत्य के द्वारा देखना
- परमेश्वर हमारा स्त्रोत है, इस कथन का अर्थ क्या है, यह समझना
- क्रूस के संदर्भ में पाप को और जीवन को सीखना
- और इस विषय को समझना कि कैसे परमेश्वर हमारे जीवन को स्त्रोत बनकर रूपांतरित करता है।

'साधारण' जीवन बनाम 'सच्चा' जीवन

इस अध्याय का शीर्षक अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि सर्वप्रथम हमें यह जानना आवश्यक है कि साधारण मसीही और सच्चे मसीही जीवन में क्या अंतर है? क्यों? वह इसलिये कि एक प्रकार का जीवन जो हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञा की ओर हमें विजय, स्वतंत्रता और रूपांतरण के कार्य को पूर्ण करने की दिशा में बढ़ाती है वही दूसरे प्रकार का जीवन हमें असफलता, और बंधन और अपरिवर्तित जीवन की दिशा में ले जाता है। मैं अपने निजी जीवन के अनुभव को आपके साथ बाँटना चाहूँगा जिससे आप एक साधारण मसीही जीवन और एक सच्चे मसीही जीवन के अंतर को समझ पाएँगे।

मैंने अपने जीवन के तीस वर्ष एक 'साधारण' मसीही जीवन जीकर व्यतीत किये।

इससे पहले कि मैं अपने जीवन के अनुभव को आपके साथ बाँटू मैं आपको साधारण मसीही जीवन की परिभाषा बता दूँ।

साधारण मसीही जीवनः

मुझे यह सिखाया गया कि मुझे एक मसीही जीवन को जीने के लिये क्या करने की आवश्यकता है और कैसे मैं परमेश्वर और मनुष्यों को प्रसन्न कर सकता था और ग्रहणयोग्य बन सकता था।

मैं 18 वर्ष की आयु में मसीही बना। परन्तु 22 वर्ष की आयु तक मैं अपने मसीही जीवन के विषय में गंभीर नहीं हुआ। उस समय मैंने अपने आप से यह प्रश्न पूछा - एक मसीही जीवन को अनुभव करने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?

मैंने इस सवाल से इसलिए पूछा क्योंकि मेरे जीवन में सबकुछ ऐसा था जो मैंने सीखा और फिर निकला और हासिल किया। इसलिए, मैंने सोचा कि इसी ''सीखना और लागू करने'' की मानसिकता को मसीही जीवन जीने के लिए लागू करूं। क्या मेरा प्रश्न आपको तर्कसंगत लगता है?

कुछ उत्तर जो अन्य मसीही लोगों ने मुझे दिये, मैं आपसे बाँटना चाहूँगा।

1. ‘मुझसे यह कहा गया कि मुझे पवित्रशास्त्र में से जो मैं पढ़ता और सीखता हूँ उसे अपने दैनिक जीवन में बाहर जाकर उसी प्रकार जीना है।’
2. ‘मुझे सिखाया गया कि मुझे पाप करना छोड़ना होगा।’
3. ‘मुझे सिखाया गया कि मुझे परमेश्वर के नियमों और आज्ञाओं को मानने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।’
4. ‘यह मेरे वश में हैं कि मैं परमेश्वर की सहायता से खुद को बदलूँ।’
5. ‘मुझे पवित्र बनने के लिये निरंतर प्रयास करना है।’
6. ‘मुझे अपने शारीरिक कार्यों को आत्मिक कार्यो में बदलने का निरंतर खुद ही प्रयास करना है।’
7. ‘यदि मैं निरंतर अधिक प्रयास करूँ तो मुझे स्वतंत्रता और विजय प्राप्त हो सकता है।’

मुझे विश्वास था कि यदि मैं परमेश्वर की सहायता से इस सभी प्रयासों में बढूँगा तो ही मैं एक ‘सफल’ मसीही जीवन जी सकता हूँ और परमेश्वर व मनुष्यों को प्रसन्न कर सकता हूँ। वैसे क्या आपने ऊपर लिखे उदाहरणों में ‘प्रयास’ शब्द पर ध्यान दिया?

प्रश्न – क्या आपको भी कभी इन सभी कार्यों को करने का प्रयास करने के लिये कहा गया जिससे कि आप एक सफल मसीही जीवन जी सके?

एक साधारण मसीही होने के समय मैंने 30 वर्ष यह भरपूर कोशिश की कि मैं इन को संपन्न कर सकूँ। लेकिन समस्या ये थी कि जितना अधिक मैं प्रयास करता था उतना ही अधिक मेरी अवस्था अधिक बिगडती गयी। स्वतंत्रता और विजय और रूपांतरण जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा है उसे अनुभव करने की जगह मैं अधिक निरूत्साहित और निराश होता गया क्योंकि मेरे जीवन में कोई सकारात्मक बदलाव नहीं था। मुझे निरंतर असफलता का एहसास सताता था क्योंकि मैं वह नहीं कर पा रहा था जो मुझसे करने को कहा गया था। इसके अतिरिक्त, मेरे जीवन के कुछ संघर्ष ऐसे थे जिनसे मैं पूरी तरह मुक्त होना चाहता था।

मेरे व्यक्तिगत संघर्ष

इन 30 वर्षों में मैं निरंतर, डर, क्रोध, अयोग्यता और अपरिपूर्णता जैसे व्यक्तिगत संघर्षो से लड़ा। ये संघर्ष इतने शक्तिशाली रूप से मुझ पर प्रभुता करते थे और मेरी सभी भावनाओं और चुनावों पर प्रभाव डालते थे मुझे नियंत्रित करते थे। परन्तु सत्य ये हैं कि मैं इन बन्धनों से स्वतंत्रता चाहता था। आखिर परमेश्वर ने हमें यूहन्ना 8:32 में यह प्रतिज्ञा दी है।

‘तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।’

यहाँ फिर मुझे सिखाया गया कि यदि मैं पूरे मन से कोशिश करूँ तो परमेश्वर की सहायता से मैं खुद को स्वतंत्र कर सकता हूँ। परन्तु सारी कोशिशों के बावजूद मैं खुद को इस डर, क्रोध, अयोग्यता और अपरिपूर्णता की भावना से स्वतंत्र नहीं करा पाया। बेहतर होने के बजाय मेरी हालत अधिक बिगड़ने लगी। कई वर्षो तक अपने आप को इस परिस्थिति से निकालने के कई प्रयासों के बाद मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि मेरे लिये यह काम नहीं कर रहा (और ना कभी मेरे अपने प्रसास सफल होंगे।)

सत्य यह था कि इन तीस वर्षो के दौरान मैंने यह निश्चय किया कि यह मसीही जीवन मुझे नहीं पाना क्योंकि यह मुझे परिवर्तित नहीं कर रहा, ना ही यह मेरी अपेक्षा के अनुसार कार्य कर रहा है और ना ही स्वतंत्रता और विजय की परमेश्वर द्वारा दी गई प्रतिज्ञा को मुझमें पूर्ण होने दे रहा है। मुझे यह लगा कि परमेश्वर ने मुझे त्याग दिया है और अब मैं खुद पर छोड़ दिया गया हूँ मेरी अवस्था पहले से भी अधिक दयनीय हो गई जब मैंने उद्धार पाया था। मैं बेहद निराश हो गया यहाँ तक कि मुझे खुदकुशी के विचार आने लगे।

क्या यही था वह बहुतायत का जीवन जो परमेश्वर ने मेरे लिये रखा था? मैं कहाँ गलत था? मुझसे क्या गलती हो गई थी? क्या मसीही जीवन की ऐसा कोई प्रमुख सत्य था, जो मैं नहीं देख या समझ पा रहा था?

आपकी क्या दशा है? क्या आपको भी ऐसी कुछ चीज़े सिखाई गई, मेरे समान, जो आपको करनी थी जिससे आपके जीवन में कोई परिवर्तन आ सके? अगर हाँ – तो मुझे आपसे कुछ प्रश्न पूछने हैं:

- क्या आप अपने मसीही जीवन में विजय पाने के लिये निरंतर किसी संघर्ष से होकर गुजर रहे हैं?
- क्या आपके जीवन में कोई ऐसा पाप का ऐसा बंधन है जिससे आप स्वतंत्र नहीं हो पा रहे हैं।

- क्या कोई ऐसा पाप या बुरी आदत है जिससे बाहर निकलने के आपके सारे प्रयास विफल हो रहे हैं?
- क्या आपको ऐसा कोई आभास होता है कि आपके जीवन में कुछ कमी है अथवा आपको मसीही जीवन में कुछ अधिक की आवश्यकता है?

यदि आपने उत्तर 'हाँ' में दिया है तो यह सम्भव है कि आप भी मेरी ही तरह एक साधारण मसीही जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सत्य यह हैं कि साधारण मसीही जीवन जीने से आप कभी एक परिपूर्ण, सुदृढ़ और रूपांतरित जीवन नहीं पा सकते। यह साधारण मसीही जीवन केवल निम्नलिखित प्रतिफल उत्पन्न करेगाः

- अधिक कुंठा
- अधिक असफलता
- अधिक बंधन
- अधिक मोहभंग
- अधिक आंतरिक अशांति
- अधिक बुरी स्थिति (कोई परिवर्तन या रूपांतरण नहीं)

ऊपर लिखी सूची को पढ़ने के पश्चात् आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि यह अवश्य ही वह जीवन नहीं है जो परमेश्वर ने हमारे लिये रखा है।

यह 'साधारण' मसीही जीवन केवल अधिक असफलता, अधिक बंधन और अपरिवर्तित जीवन ही उत्पन्न करता है। क्या इस प्रकार का जीवन परमेश्वर की हमारे लिये सुइच्छा है या कोई अन्य प्रकार का जीवन भी है जो परमेश्वर हमें देना चाहता है?

प्रश्न – क्या आप ऐसा 'साधारण' मसीही जीवन जी रहे हैं। तो आपका मसीही जीवन आपको कैसा लग रहा है? निराश? हताश? मोह भंगित? अधिक अभिलाषी या घटी का अहसास है? त्याग भावना या और परिश्रम की इच्छा – कैसा महसूस कर रहे हैं?

इस प्रकार जब हम साधारण मसीही जीवन के परिणाम पर ध्यान करें तो हमारे मन में एक सवाल यह उठता है? क्या परमेश्वर ने हमारे जीने के लिये किसी अन्य ही प्रकार का जीवन रखा है? अच्छी खबर यह है कि 'हाँ' एक और जीवन है जिसे परमेश्वर चाहता है कि हम जीएं। और वह है 'सच्चा मसीही जीवन'। आइये हम इस सच्चे मसीही जीवन का अर्थ देखें।

एक 'सच्चा' मसीही जीवन क्या है?

इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले हम इस बात पर थोड़ा मनन करें और समझ लें कि यीशु मसीह और पौलुस इस सच्चे मसीही जीवन के विषय में क्या कहते हैं?

यीशु ने इस सच्चे मसीही जीवन के विषय में कहा है।

यीशु ने कहाः

"मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ।" यूहन्ना 14:6

"...पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ।" यूहन्ना 11:25

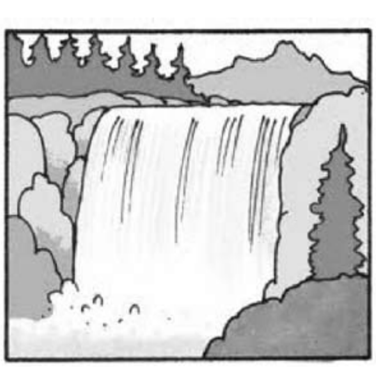

इन दो आयतों में यीशु क्या कह रहा है? मुझे लगता है यह स्पष्ट है कि यीशु ही जीवन है। यीशु के इस कथन का क्या अर्थ है जो उसने कहा कि मैं ही जीवन हूँ? कई वर्षों तक मैं इन आयतों को पढ़कर यही समझता था कि यीशु मेरे अनन्त जीवन का स्त्रोत है। हालांकि यह सम्भव है कि यीशु इन आयतों से हमसे कुछ अधिक कहना चाहते हैं? आइये हम यह देखते हुए थोड़ा और गहराई से विचार करें कि पौलुस प्रेरित क्या कहता है?

प्रेरित पौलुस इस 'सच्चे मसीही' जीवन के विषय में हमसे क्या कहता है?

पौलुस इस सत्य को जो 'सच्चे मसीही' जीवन को थोड़ा और व्यक्तिगत स्तर पर ले जाती है, कुलुस्सियों 3:4 में लिखता है:

''...मसीह जो <u>तुम्हारा</u> जीवन है ..... ''

पौलुस इस उपर्युक्त पद में क्या कहता है? उसके कहने का अर्थ है कि मसीह का जीवन इस अनन्त जीवन से बढ़कर है जो उसने उद्धार पाने के समय हमको दिया था। वह कहना चाहता है कि ''अबसे मसीह हमारा जीवन है''। अब आप अपना सिर खुजा रहे होंगे और पूछ रहे होंगे, ''पौलुस क्या कहना चाहते हैं'' इस कथन का क्या अर्थ है कि मसीह मेरा जीवन है? क्या पौलुस इसी जीवन की ओर इशारा कर रहा है? क्या वह इसी सच्चे मसीही जीवन के संदर्भ में उल्लेख कर रहा है? मुझे लगता है इस का उत्तर हमें फिलिप्पियों 1:21 में मिलता है जहाँ पौलुस कहता है:

''क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना <u>मसीह</u> है''

पौलुस कहता है कि उसके लिये जीवन खुद मसीह है। यीशु और पौलुस हमें यह आश्चर्यजनक सत्य का प्रकाशन देते हैं कि,

---

''सच्चा मसीही जीवन
एक व्यक्ति है और वह खुद मसीह है।''

क्या आप अब इस बात को समझे कि यीशु मसीह खुद ही एक सच्चा मसीही जीवन है? एक क्षण के लिये आप इस बारे में विचार कीजिये। अगर सच्चा मसीही जीवन एक व्यक्ति है तो क्या इसका यह अर्थ हुआ कि सच्चा मसीही जीवन दरअसल, कोई कार्य सूची नहीं है जिसे हमें पूर्ण करके समाप्त करना है, या कोई नियम है जिन्हें मानना है, खुद को पाप से बचाना है या अपना जीवन परमेश्वर के योग्य बनाना है ताकि उसके लिये ही जी सके? मुझे विश्वास है कि यीशु मसीह व पौलुस कि सच्चा मसीही जीवन कोई ऐसा जीवन नहीं जिसे हमें उत्पन्न करना हैं। बल्कि उसे केवल यीशु मसीह खुद ही हममें उत्पन्न कर सकते हैं।

सत्य यह है कि सच्चा मसीही जीवन कोई साधारण मसीही जीवन जीना नहीं है। यह वास्तव में सच्चा जीवन जीना है। समस्या यह है कि हम अपने आप यह जीवन नहीं जी सकते हैं। यह 'सच्चा मसीही जीवन' केवल मसीह के द्वारा सम्भव है। आइये, मैं आपको अपना यह अनुभव बताता हूँ कि मैंने कैसे इस सच्चे मसीही जीवन को जाना।

आखिरकार मैंने यह जान ही लिया कि 'सच्चा' मसीही जीवन जीने का असली अर्थ क्या है?

यह बात मैं नहीं जानता था कि उन 30 वर्षो के दौरान परमेश्वर मेरी खुद का अंत करने की प्रक्रिया में लगा था जिसमें मैं अपने स्वयं के प्रयासों से एक सच्चा मसीही जीवन जीने की कोशिश कर रहा था। अक्टूबर 4, 1998 में, रविवार के एक दिन जब मैं अपने कलीसिया की पार्किंग में बैठा था, एक विचार अचानक मेरे मस्तिष्क में एक प्रश्न के रूप में घूमता हुआ आया। वह प्रश्न था ''क्या तुम अपने प्रयास के अंत तक पहुँच गये हो? क्या आप अपनी ताकत और अपनी योग्यता पर निर्भर होकर मसीही जीवन जीने का प्रयास करते हुए थक पहुँच गये हो? मेरे मन में कोई संदेह नहीं थी कि यह प्रश्न प्रभु का आत्मा मुझसे कर रहा था? मेरा उत्तर था – बहुत हुआ, मुझसे नहीं होगा। परमेश्वर का समय उत्तम व सही है, उस दिन हमारे कलिसिया में जो प्रचारक आये उनका नाम था इयान थॉमस और उन्होंने इसी सच्चे मसीही जीवन के विषय में प्रचार किया। जब वे प्रचार के लिये खड़े हुए तो उनके मुख से पहले शब्द ये ही निकले,

---

''आपको परमेश्वर ने कभी भी सच्चे मसीही जीवन को अपनी सामर्थ में जीने के लिये नहीं बुलाया, जो जीवन यीशु मसीह खुद आपमें और आपके द्वारा जीना चाहता है।''

मैं इन शब्दों से आश्चर्यचकित था क्योंकि पिछले 30 वर्षों में मैंने कभी किसी को कही भी यह कहते नहीं सुना था कि यह सच्चा मसीही जीवन जीना आपकी सामर्थ में संभव नहीं है। उस दिन पवित्र आत्मा मुझसे इयान थोमस के द्वारा जो बोल रहा था वह यही महत्वपूर्ण सत्य था:

महत्वपूर्ण सत्य
केवल वह एक मनुष्य जिसने सच्चा मसीही जीवन जीया वह यीशु मसीह खुद ही है।

इस सत्य ने आपको भी अचंम्भित किया होगा जैसे मुझे किया जब मैंने इसे पहली बार सुना था। बावजूद इसके, क्या यही सत्य नहीं है? किसी और ने कभी वह सच्चा मसीही जीवन नहीं जीया सिवाय खुद यीशु मसीह के। अतः हम ये कैसे सोच भी सकते हैं कि हमारे लिये यह सम्भव होगा। आप इस निम्नलिखित कथन के विषय में विचार कीजियेः

अपनी योग्यता से हम एक प्रकार का
साधारण मसीही जीवन जी सकते हैं,
''केवल मसीह यीशु सच्चा जीवन जी सकते हैं।''

यह कथन एक और प्रश्न को हमारे सामने खड़ा करता है- यदि मसीह यीशु केवल इस सच्चे जीवन को जी सकते हैं तो मैं भला कैसे इस सच्चे जीवन को जीऊं? आगे चलकर हम इस को देखेंगे कि कैसे परमेश्वर का वचन हमें इस प्रश्न का उत्तर खोजने में मदद करता है।

प्रश्नः क्या यह पवित्रशास्त्र के सत्य जो यीशु मसीह के सच्चे मसीही जीवन के विषय में हमने जानें, वह हमारे विश्वास से मेल खाते हैं। यदि नहीं, तो हम जो मसीही जीवन जी रहे हैं वह हमारे जीवन को कैसे बदलेगा यदि हमारा यह विश्वास है कि केवल यीशु मसीह ही सच्चे मसीही जीवन को सचमुच जी सकता है।

उपर्युक्त आयतों पर मनन कीजिये और परमेश्वर से माँगिये कि वह आपको उन के द्वारा यह प्रकाशन दें कि आप अब तक एक 'साधारण' मसीही जीवन जी रहे हैं या यीशु मसीह को अपने द्वारा 'सच्चा' मसीही जीवन जीने दे रहे हैं।

परमेश्वर को शामिल करना : यदि यह सत्य आपको नया लगे तो कृपया कुछ समय निकालें, प्रभु के संग बैठें व उससे पूछिये कि वह आपको इस सत्य पर व्यक्तिगत प्रकाशन दे वा समझाएं। परमेश्वर से कहिये कि वह आपको इस सत्य के विषय में और गहराई से समझाएं कि यह सच्चा मसीही जीवन है क्या? यदि यह सत्य उन बातों से जो आपने अब तक विश्वास किया है, मेल नहीं खाती है तो कृपया परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि वह आपको यह प्रकाशन दें कि जो अभी आपने पढ़ा वह सत्य है कि नहीं। अगले अनुभाग में हम इस बात पर गहराई से मनन करेंगे कि इसका क्या अर्थ है- कि मसीह हमारा जीवन है।

दूसरा दिन

'मसीह आपका जीवन है' इस कथन का क्या अर्थ है?

अगला प्रश्न जो आपके मन में उठेगा वह है - ''इस बात का क्या अर्थ है कि मसीह मेरा जीवन है''।

मुझे विश्वास है कि इसका उत्तर हमें 1 कुरिन्थियों 1:30 में मिलेगाः

''वह मसीह यीशु में आपके जीवन का मूल स्त्रोत है।''

परमेश्वर इस पद के प्रथम भाग में हमें अपने प्रश्न का उत्तर देते हैं। जब वह कहते हैं कि ''वह मसीह में हमारे लिये जीवन का मूल स्त्रोत है।'' यदि हम स्त्रोत की परिभाषा देखें तो वह यह कि ''वह जो उत्पादन कर सकता है।'' यह आपके लिये सम्भवतः एक नया सत्य हो क्योंकि अधिकतर मनुष्यों ने इस शिक्षा को गलत ग्रहण किया है जिस प्रकार मैंने भी यही शिक्षा पाई थी कि हमें परमेश्वर की सहायता से खुद इस मसीही जीवन को जीना है। आप देखिये कि सच्चे मसीही जीवन को जीने का एक ही मूल स्त्रोत है।

सत्य यह है कि वह स्त्रोत परमेश्वर खुद है,
हम नहीं जिसके द्वारा हमें मसीही जीवन जीना है।

दो अन्य वाक्यों को देखें जो बताते हैं कि मसीही जीवन जीने के लिए परमेश्वर आपका स्रोत हैः

''क्योंकि हम उसी में जीवित रहते और चलते फिरते, और स्थिर रहते हैं।''
प्रेरितों के काम 17:28

''क्योंकि उस की ओर से और उसीके द्वारा और उसी के लिये सब कुछ है।''
रोमियों 11:36

इन अन्य कई आयतों में से यह दो पद वे हैं जो हमें स्पष्ट रूप से यह सिखाते हैं कि परमेश्वर हमारे मसीही जीवन जीने का मूल स्त्रोत है। अब आप इस बात को सोच रहे होंगे कि व्यवहारिक रूप से यह कैसे संभव होगा? तो आइये हम ऐसे चार उदाहरण देखें जो हमें इस बात का अर्थ समझाते हैं कि परमेश्वर हमारा स्त्रोत है।

- परमेश्वर आपकी हर एक घटी को पूरी करने वाला स्त्रोत है। फिलिप्पियों 4:19
- परमेश्वर आपके पाप के ऊपर सामर्थ का स्त्रोत है। 1 यूहन्ना 3:6
- परमेश्वर उसके सत्य पर विश्वास करने के लिए आपके मन को नया करने वाला मूल स्त्रोत है। रोमियों 12:2
- परमेश्वर हमारे जीवन को परिवर्तित करने की प्रतिज्ञा देने वाला और उसे अपने जीवन में अनुभव करने की सामर्थ देने वाला स्त्रोत है। फिलिप्पियों 1:6

क्या उपर्युक्त वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये आपने खुद से प्रयत्न किया है? यदि हाँ तो वह आपके लिये कैसे कार्य कर रहा है? यदि हम अपने आप से ईमानदार हैं तो हम इस बात से इंकार नहीं करेंगे कि यह काम नहीं कर रहा – हमें सफलता नहीं मिल रही यदि परमेश्वर हमारी सारी मसीही दौड़ का मूल स्त्रोत नहीं है तो हम परमेश्वर के सत्य और उसकी प्रतिज्ञाओं का पूरा अनुभव नहीं पा सकते

परमेश्वर आपके मसीही जीवन को जीने के लिए स्रोत होने का अर्थ है कि केवल परमेश्वर ही अपनी सच्चाई और उनके वायदों को आपके जीवन में एक अनुभवात्मक वास्तविकता बना सकते हैं।

प्रश्नः क्या आपने इस बिन्दु तक यह विश्वास किया है कि एक सच्चे मसीही जीवन जीने के लिए आपको परमेश्वर की मदद से एक स्रोत बनना है? यदि ऐसा है, तो आप इस सच्चाई पर कैसे विश्वास करेंगे कि आपके मसीही जीवन के लिए वही स्रोत है?

मनन करें – 1 कुरिन्थियों 1:30, प्रेरितों के काम 17:28 और रोमियों 11:36

परमेश्वर को शामिल करनाः इन उपर्युक्त तीन आयतों को लें और पवित्रात्मा से इन पर गहराई से प्रकाशन मांगें जिससे आप समझ सके कि परमेश्वर किस प्रकार से सच्चे मसीही जीवन का स्त्रोत है?

स्रोत बनने के लिए परमेश्वर हमारी मदद क्यों नहीं करते?

मैंने कई मसीही लोगों को यह कहते सुना है – ''परमेश्वर हमारी सहायता करेगा''। अनजाने में वह यह कह रहे हैं कि मेरी परेशानियों का हल निकालने के लिये परमेश्वर मुझे स्त्रोत बनने में मदद करेगा। मुझे परिवर्तित जीवन जीने के लिये मेरी मदद करेगा। हम इसे इस तरह भी कह सकते हैं कि परमेश्वर मेरी सहायता करेगा कि मैं खुद की सहायता कर सकूं। यह एक झूठी शिक्षा है क्योंकि यह परमेश्वर की योजना कभी नहीं थी कि मनुष्य अपने जीवन के परिवर्तन या सफलता का स्त्रोत खुद बने। सोचिये इस तथ्य को कि ''यदि परमेश्वर खुद ही स्त्रोत है, सर्वसामर्थी है तो वह क्यों यह चाहेगा कि मनुष्य खुद स्त्रोत बने। आप देखिये – परमेश्वर ने हमें ऐसा ही बनाया है। यदि परमेश्वर वह स्त्रोत नहीं है जिसमें हम एक सच्चा मसीही जीवन जी सके तो हमारे मसीही जीवन में केवल अधिक असफलता, अधिक बंधन, अधिक अपरिवर्तित जीवन ही पाया जाएगा। परमेश्वर की युक्ति एक तरफा है और वह यह है कि वह खुद हमारा मूल स्त्रोत है।

परमेश्वर को शामिल करनाः यदि अब तक आपने यह विश्वास किया है कि मसीही जीवन जीने के लिये हमें परमेश्वर की सहायता चाहिये तो आप परमेश्वर से गहराई से प्रकाशन माँगिये। वह आपको यह सिखाएं कि केवल और केवल वही हमारा एकमात्र स्त्रोत है जिससे हम सच्चा मसीही जीवन जी सकते हैं।

मसीही जीवन के विषय में पहली झूठी धारणाः
मनुष्य खुद परमेश्वर की सहायता से एक सफल मसीही जीवन जी सकता है। वह खुद ही अपनी बुद्धि की और परमेश्वर की सहायता से अपने मसीही जीवन का स्त्रोत बन सकता है।

अब जबकि हमने इस तथ्य को जान लिया है कि हमारे सच्चे मसीही जीवन का मूल स्त्रोत परमेश्वर खुद है तो आइये हम आगे बढ़ें और देखें कि ''मसीह हमारा जीवन है'' का क्या अर्थ है?

हम कैसे जानते हैं कि परमेश्वर को हमारा स्रोत बनना है?

इस तथ्य को और गहराई से और बेहतर रूप से समझने के लिये कि परमेश्वर हमारा मूल स्त्रोत है, हमें परमेश्वर की सृष्टि के आंरभिक योजना को देखना होगा। मुझे लगता है ऐसा करने से हमें इस बात का प्रमाण मिलेगा कि सृष्टि के आरंभ से ही परमेश्वर की मनुष्यों के लिये यही योजना थी कि परमेश्वर उसके जीवन का मूल स्त्रोत हो। अगले सत्र में हम चार बातें देखेंगे।

- आदम-हव्वा के पाप में गिरने से पहले उनका मूल स्त्रोत कौन था?
- पाप में गिरते वक्त आदम और हव्वा के साथ क्या हुआ?
- मनुष्य के जन्म के समय उसकी आत्मिक स्थिति कैसी थी?
- परमेश्वर ने मनुष्य में क्या कार्य किया जिससे वह उसका मूल स्त्रोत बन सके।

आइये हम आदम और हव्वा के पाप में गिरने से पहले और बाद के जीवन की दशा देखें।

आदम और हव्वा के पतन से पहले उनका मूल स्त्रोत कौन था?

''और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया'' - उत्पत्ति 2:7

''और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा'' - फिलिप्पियों 4:19

मनुष्य के - सृष्टि के समय, परमेश्वर मनुष्य के जीवन का मूल स्त्रोत बना जब उसने आदम और हव्वा के नथनों में जीवन का श्वास फूँका उत्पत्ति 2:7 के अनुसार इसी के साथ, परमेश्वर उनकी हर शारीरिक, आत्मिक और भावनात्मक सभी आवश्यकताओं का मूल स्त्रोत फिलिप्पियों 4:19 आरम्भ से ही परमेश्वर उनकी सारी आवश्यकताओं को पूरा करने का मूल स्त्रोत था क्योंकि मनुष्य उन्हें पूरी करने के सक्षम नहीं था।

निम्नलिखित रेखा चित्र में परमेश्वर का संबंध जो मनुष्य जाति के पतन के पूर्व था, उसके विषय में व्याख्या है।

आदम और हव्वा पाप में गिरने से पहले उनकी जरुरतों को पूरा करनेवाला परमेश्वर ही उनका मूल स्त्रोत था

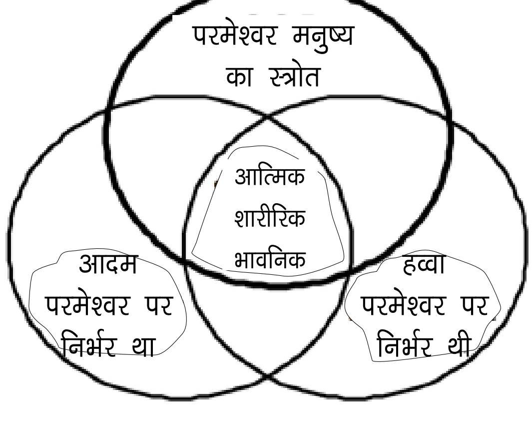

यदि परमेश्वर ही मनुष्य की हर एक आवश्यकता को पूरी करने का मूल स्त्रोत था तो क्या हम यह निष्कर्ष निकाल लें कि आदम-हव्वा पूर्ण रूप से, अपनी सारी आवश्यकताओं के लिये केवल परमेश्वर ही पर निर्भर थे।

परमेश्वर और आदम और हव्वा के बीच संबंध का वर्णन करने के लिए 'निर्भरता' कुंजी शब्द है। वे अपनी हर जरूरत को पूरा करने के लिए पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर थे। इस भाग को हम इस महत्वपूर्ण सत्य से समाप्त करेंगे।

महत्वपूर्ण मूल सत्यः
जिस समय तक आदम और हव्वा पूर्ण रूप से परमेश्वर ही पर निर्भर होकर चले
तब तक केवल परमेश्वर ही उनकी पूर्ति का मूल स्त्रोत था।

परमेश्वर ने आदम व हव्वा को एक स्वेच्छा से चुनाव करने की शक्ति भी दी थी जिससे वे इस बात पर निर्णय ले कि वह निर्भर होना चाहते हैं कि नहीं।

''तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता हैः पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खानाः क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।'' उत्पत्ति 2:16अ-17

मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा देने के लिए, परमेश्वर ने उत्पत्ति 2:16,17 के अनुसार मनुष्य को निर्भर रहने या आत्मनिर्भर होने की स्वतंत्रता दी। चुनाव यह था कि वे बगीचे में एक पेड़ को छोड़कर किसी भी पेड़ कर फल खा सकते थे। यह परमेश्वर मनुष्यों की इच्छा का परीक्षण था कि वह परमेश्वर पर निर्भर रहेगा कि नहीं। अगर उन्होंने परमेश्वर पर निर्भर रहने और अच्छे और बुरे के ज्ञान की बजाय हर दूसरे पेड़ से खाने का फैसला किया होता, तो वे जीवित रहते। हालांकि, अगर उन्होंने अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खा लिया, तो वे मर जाएंगे। हम इसका परिणाम उत्पत्ति 3:6 में जानते हैं।

''तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता हैः पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खानारू क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।'' - उत्पत्ति 3:6

उस समय आदम और हव्वा ने एक पापमय, आत्मनिर्भर निर्णय लिया जो कि रोमियो 5:12 के अनुसार उनकी आत्मिक मृत्यु का कारण बनाः

''इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।'' - रोमियों 5:12

'आत्मिक मृत्यु' का क्या अर्थ है? इस प्रश्न का उत्तर परिभाषित करने के लिये मूल शब्द ''अलगाव'' है। मूल ग्रीक भाषा में अलगाव के लिये जो शब्द मिलता है वह है ''सीवर'' या ''अलग किया जाना।''

आत्मिक मृत्यु का अर्थ है, परमेश्वर से अलगाव या कट जाना।

यह अलगाव दो तरफा थाः

• परमेश्वर के जीवन से अलगाव

*''क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है....**परमेश्वर के जीवन** से **अलग** किए हुए हैं।'' - इफिसियों 4:18*

जिस क्षण आदम और हव्वा ने यह निर्णय लिया कि हम स्वतंत्र होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे और वह पाप किया, उसने उन्हें निकाल दिया और खुद को उनसे अलग कर दिया। भले ही आदम व हव्वा शारीरिक रूप से जीवित थे परन्तु आत्मिक रूप से वे आगे को परमेश्वर की संगति का अनुभव नही कर सकते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि वे आत्मिक रूप से मर गये।

● परमेश्वर से अलगाव मूल स्त्रोत के रूप में

"परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उस का मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" - यशायाह 59:2

जैसा कि हमने देखा कि आदम-हव्वा के जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति का मूल स्त्रोत परमेश्वर ही था और वे पूर्ण रूप से उस पर निर्भर थे। हालांकि पाप के कारण वे परमेश्वर से अलग किये गये। परमेश्वर से अलगाव का परिणाम यह हुआ कि अब परमेश्वर उनकी किसी भी आवश्यकता को पूरी करने के लिये मूल स्त्रोत नहीं था।

इसका अर्थ यह है कि अब मनुष्य अपनी सारी आवश्यकताओं के लिये खुद पर निर्भर था। खुद अपनी सारी जरूरतों को पूरी करे। अपनी समस्याओं का खुद ही हल निकाले और अपने जीवन को सफल बनाने के लिये खुद प्रयास करते रहे

आइये, हम आगे देखेंगे कि किस प्रकार से मनुष्य की परिस्थितियां बदली!

पतन के बाद आदम और हव्वा की स्थिती

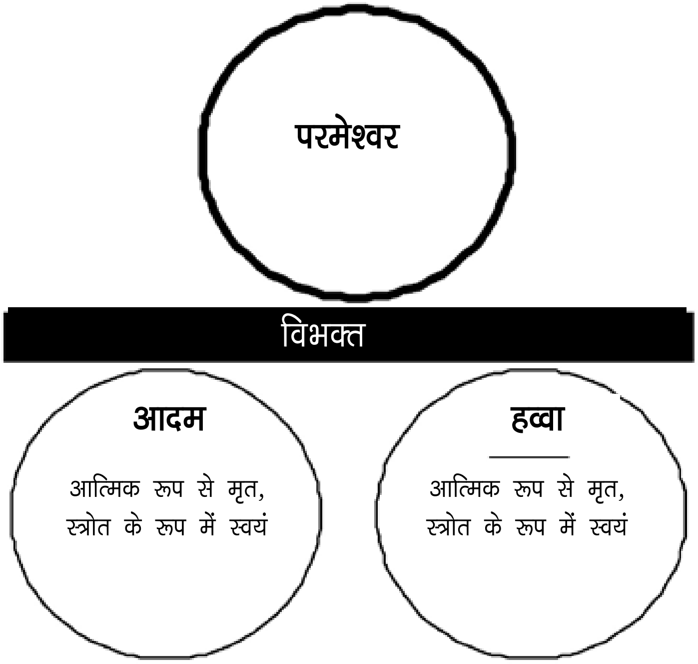

--------------------000 --------------------

तीसरा दिन

समस्या यह है कि हमने आदम-हव्वा से आत्मिक मृत्यु विरासत में पाई है।

इस कथन का अर्थ यह है कि हमने विरासत में आदम-हव्वा से जो आत्मिक मृत्यु पाई है इसलिए हम अपने जन्म से ही परमेश्वर से अलग किये गए हैं। रोमियों 5:12, हमें यह बताता है:

"इसलिये जैसा एक मनुष्य (आदम) के द्वारा ***पाप*** *जगत में आया, और* ***पाप के द्वारा मृत्यु*** *आई, और इस रीति से* ***मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई,*** *इसलिये कि* ***सब ने पाप किया****।" - रोमियों 5:12*

हम रोमियों 5:12 में देखते हैं कि "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।" इसका अर्थ है कि हमने आदम की आत्मिक मृत्यु अपने जन्म के समय से ही पाई है।

आदम और हव्वा के समान ही, हम भी जन्म के समय से परमेश्वर के जीवन और हमारे स्त्रोत के रूप में उससे अलग किए गये हैं।

अगला चित्र इस सत्य को दर्शाता है कि हमने परमेश्वर से हमारे जीवन और स्रोत के रूप में आदम के अलगाव को विरासत में पाया है जिसके परिणामस्वरूप हम आध्यात्मिक रूप से मर गए थे।

शारीरिक जन्म के दौरान मनुष्य ने आदम की स्थिति को विरासत में पाया

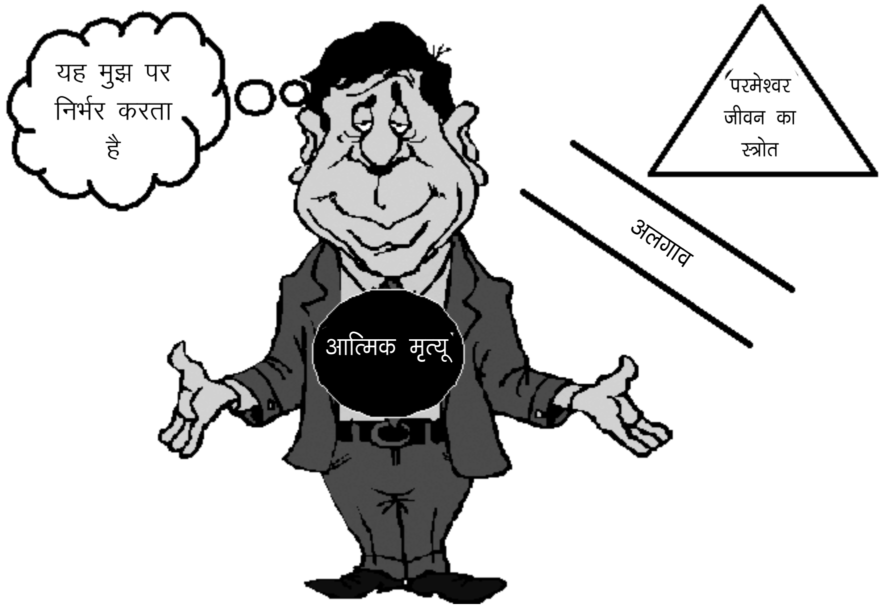

आपने आदम की आत्मिक मृत्यु को विरासत में पाया जिसका परिणाम परमेश्वर के जीवन से और स्रोत के रूप में परमेश्वर से एक अलगाव हुआ। इसी अलग किये जाने के कारण यह आप पर था कि आप अपना खुद का स्त्रोत बनें और अपना जीवन निर्वाह करने का प्रयास करें।

प्रश्नः यदि मूलरूप से सृष्टि के प्रारंभ से मनुष्य को परमेश्वर पर पूर्णतः निर्भर होने के लिए बनाया गया था और मूल स्त्रोत परमेश्वर ही था तो क्या हम अब स्वतंत्र होकर, अपनी समस्या का हल खुद ही निकालकर व अपनी सारी आवश्यकताओं को खुद ही पूरा करने में सक्षम है क्या?

मनन कीजिए – इस सत्य पर कि सृष्टि के प्रारंभ से परमेश्वर ने सृष्टि की रचना इसी आधार पर की थी कि मनुष्य पूर्ण रूप से अपने मसीही जीवन को जीने के लिये परमेश्वर ही को अपना मूल स्त्रोत जानें और उसी पर निर्भर रहे।

परमेश्वर को शामिल करना – परमेश्वर से इस सत्य पर और गहराई से प्रकाशन मांगें कि वह हमारे जीवन की आवश्यकताओं का मूल स्त्रोत कैसे हैं? (विवाह में, नौकरी में, हर परिस्थिति में)।

मनुष्य के लिये जो उसने अदन की वाटिका में खोया था, उसे बहाल करने में लिये परमेश्वर ने क्या किया?

परमेश्वर भली भांति यह जानते थे कि यदि उन्होंने कोई उपाय नहीं निकाला तो मनुष्य सदा काल के लिये परमेश्वर से अलग हो जाएगा – इसलिए परमेश्वर के लिये यह आवश्यक था कि वह मनुष्य के लिये दो चीज़ें दें – उद्धार और अनंत जीवन (और मूल स्त्रोत के रूप में फिर से जुड़ना)। मैं इन दोनों विषयों को एक आरेख के माध्यम से विस्तार से समझाना चाहता हूं, जिसे मैं कहता हूं – क्रूस के दो पक्ष। पहला पक्ष दर्शाता है पाप को और दूसरा पक्ष जीवन को। आइये हम पहले दृष्टि डालें – क्रूस के 'पाप पक्ष पर' जिससे हमें यह ज्ञात हो कि हमारे पाप से निबटने के लिए परमेश्वर ने क्या कार्य पूरा किया।

क्रूस के पाप का पहलू – मसीह हमें अनंत जीवन देने के लिए हमारे पापों के लिए मर गया।

सुसमाचार का शुभ समाचार यह है कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हमारे पापों का बोझ उठाने को आया क्योंकि हमारे पापों का बोझ उठाने के लिये हमें एक मसीहा, एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता थी। उसने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये मृत्यु की सज़ा को सहा और मसीहा पर अपने उद्धार के लिये विश्वास करने से हमें अनंत जीवन प्राप्त होता है।

''वह दया का इतना धनी है कि उसने अपने बेटे के द्वारा हमारे लिए स्वतंत्रता को मोल लिया और हमारे सभी पाप क्षमा कर दिए गये हैं। इफिसियों 1:7

*''जो **पुत्र पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है''** – यूहन्ना 3:36अ*

यीशु मसीह की क्रूस पर हमारे अपराधों के कारण मृत्यु, क्रूस के पाप वाले पक्ष को दर्शाता है।

निम्नलिखित आरेख क्रूस के पाप वाले पक्ष को दर्शाता है।

क्रूस के पाप का पहलू

ध्यान दें: यदि अब तक आपने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण नहीं किया है तो आप इसे अभी कर सकते हैं। आप विश्वास के साथ इस प्रार्थना को जो लिखी है, उसे कहें और माफी और उद्धार को पाएं। ''हे प्रभु, मैं मानता हूं कि मैं एक पापी हूं और मुझे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है। आपके क्रूस पर मृत्यु के कारण जो मेरे पापों के कारण आपने उठाई, मैं विश्वास के द्वारा आपको अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करता हूं। आमीन्।''

क्रूस का जीवन पहलू – परमेश्वर ने स्वयं को एक मनुष्य के रूप में ढ़ाला ताकि वह हमारे जीवन का मूल स्त्रोत बन सके।

हालांकि यीशु मसीह मनुष्य के लिये मरा ताकि मनुष्य को उद्धार मिले, लेकिन परमेश्वर से अलगाव की समस्या अब भी बनी हुई थी और परमेश्वर जीवन का मूल स्त्रोत नहीं बना था।

क्योंकि मनुष्य परमेश्वर से अलग होकर जीने के लिए नहीं बना था। परमेश्वर ने तीन और कामों को पूरा किया जिससे वह फिर से मनुष्यों के लिये मूल स्त्रोत बन सके। यही तीन बातें हैं जिसे मैं क्रूस के जीवन पहलू के रूप में बताने जा रहा हूं। आइये हम क्रूस के जीवन पहलू को खोजें।

क्रूस का जीवन पहलू

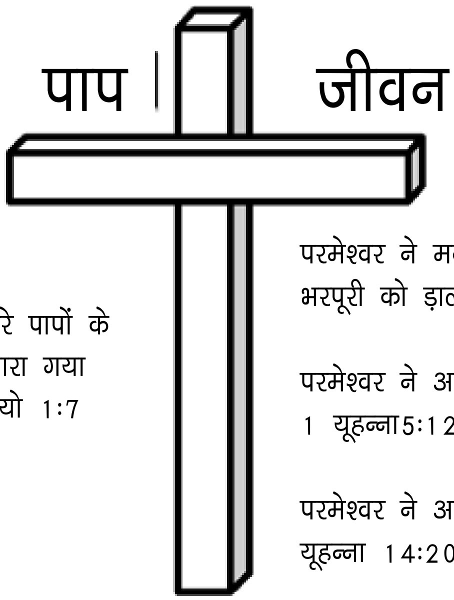

यीशु हमारे पापों के लिए मारा गया इफिसियो 1:7

परमेश्वर ने मनुष्य में अपने स्वयं की भरपूरी को ड़ाला। कुलुस्सियों 2:9,10

परमेश्वर ने अपने जीवन और सामर्थ को आप में ड़ाला है। 1 यूहन्ना5:12, अनुवाद 1:8

परमेश्वर ने अपने आप को आपके साथ एकजुट कर दिया है। यूहन्ना 14:20

1. परमेश्वर ने अपनी परिपूर्णता फिर से मनुष्य में ड़ाल दी।

उद्धार पाने के समय आप केवल यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता ही मानकर ग्रहण नहीं करते बल्कि आप त्रिएक परमेश्वर को ग्रहण करते हैं (पिता, पुत्र और पवित्रात्मा को)। यह हमें कुलुस्सियों 2:9,10 में मिलता हैः

*"क्योंकि **उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती** है। और **तुम उसी में भरपूर हो गए हो** जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।"*

ये आयतें हमें बताते हैं कि यीशु ही में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है और वही यीशु अब आप के अंदर विद्यमान है। इसका अर्थ यह है कि पिता, पुत्र और पवित्रात्मा तीनों आप में वास करते हैं। अब परमेश्वर आपसे अलग नहीं है बल्कि संपूर्ण ईश्वरत्व मनुष्य के अंदर है।

परमेश्वर ने अपनी परिपूर्णता फिर से आप में ड़ाल दी

यह महत्वपूर्ण बात है जो अब आपको समझनी है कि यदि आपने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण कर लिया है तो आप के अंदर ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता वास करती है - पिता, पुत्र और पवित्रात्मा तीनों।

प्रश्नः यदि आप इस सत्य को नहीं समझ पाए हैं कि आपमें परमेश्वरत्व की पूर्णता है, तो अगर आप इस सच्चाई को जान जाते तो आपके जीवन में इसका क्या प्रभाव पड़ता?

मनन करेंः कुलुस्सियों 2:9,10 पर। इस प्रश्न के विषय में सोचें। यदि पिता, पुत्र और पवित्रात्मा मुझ में है तो मुझमें फिर किस बात की कमी है?

परमेश्वर को शामिल करना – परमेश्वर से इस विषय में और गहरा प्रकाशन मांगें कि आप समझ सके कि ईश्वरत्व की परिपूर्णता आपमें वास करती है। इसका अनंत काल में क्या महत्व है?

--------------------000 --------------------

चौथा दिन

2. अब आपके अंदर ही संपूर्ण ईश्वरत्व वास करती है

और उसकी सारी सामर्थ भी क्योंकि जब आपने उसकी संपूर्ण ईश्वरत्व को ही ग्रहण कर लिया तो आप में उसका जीवन और सामर्थ आ गया।

अ. मसीह का जीवन

"जिस के पास पुत्र है, उसके पास जीवन है।" – 1 यूहन्ना 5:12अ

हमने देखते है कि उद्धार पाते समय जो जीवन परमेश्वर ने हमें दिया वह जीवन उसके पुत्र में है।

'मसीह आपका जीवन है' का अर्थ है आपके अंदर संपूर्ण मसीह ही है।

बेशर्त	प्रेम	विजय	मूल्य	स्वीकृति	विश्वास
छुटकारा	धीरज	सामर्थ	शांति	ताकत	सुरक्षा
निडरता	माफी	समझ	बुद्धि	पर्याप्तता	परख
दीनता	निर्भयता	मसीही	आत्मविश्वास	धार्मिकता	विश्राम
निःस्वार्थता	साहस	आशा	दयालुता	विश्वासयोग्यता	आनंद
सौम्यता	नियंत्रण				

'मसीह आपका जीवन है' – का अर्थ है कि मसीह आपका मूल स्त्रोत है आपको उसकी शांति, उसकी स्वीकृति, उसका आनंद उपलब्ध कराने के लिए।

क्योंकि आपके अंदर मसीह खुद वास करता है इसका अर्थ है कि आपमें उसके सारे ऊपर सूचीबद्ध गुण भी मिल जाते हैं जो आपके लिये उपलब्ध हैं। हम अध्याय चार में सीखेंगे कि मसीह के जीवन की विशेषताओं और मनुष्य के जीवन की विशेषताओं में क्या अंतर है। (जैसे कि उदाहरण के लिए – मसीही प्रेम और मनुष्य के प्रेम के बीच अंतर)। हालांकि अभी के लिये इतना ही याद रखिये कि इस पल में आपके अंदर मसीह के सारे गुण उपलब्ध हैं।

प्रश्न – आपके जीवन में मूलतः क्या अंतर आ जाता अगर आप मसीह की शांति, धैर्य, विजय इत्यादि से जी रहे होते जो ऊपर सूचीबद्ध है?

परमेश्वर को शामिल करना – एक या दो मसीहियों के जीवन की विशेषताओं को चुन लें और परमेश्वर से मांगना शुरू करें कि वह उन विशेषताओं को आपके लिए एक जीवित अनुभव बनाने में आपकी सहायता करे।

मनन करेंः निम्नलिखित कथन पर मनन करें। इस मनन का मूल शब्द है 'उसमें'।

परमेश्वर ने मसीह के जीवन की सारी परिपूर्णता आप में डाल दी ताकि आप 'उसमें' होकर जी सके।

ब. परमेश्वर की सामर्थ

इसी के साथ आपने उद्धार पाने के समय में परमेश्वर की अद्भुत शक्ति भी प्राप्त कर ली जैसा कि प्रेरितों के काम 1:8 में लिखा हैः

*''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम **सामर्थ** पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।''*

इस पर क्षण भर के लिए विचार करें कि जबकि आपके अंदर संपूर्ण ईश्वरत्व वास करती है तो आप में उसकी सारी शक्ति भी सदेह वास करती है। परमेश्वर अच्छी तरह जानते थे कि उसकी सामर्थ के बिना मनुष्य का जीवन परिवर्तन असंभव है। इसलिए उसने अपनी सारी सामर्थ को हमारे अंदर डाल दिया ताकि हमारे जीवन परिवर्तित हो जाए। अगले अध्याय में हम विस्तार से परमेश्वर की तीव्रता और उद्देश्य के विषय में चर्चा करेंगे जो हममें सदेह वास करती है।

परमेश्वर ने मसीह-समानता में आपको बदलने के लिए अपनी सामर्थ आपमें डालता ।

निम्नलिखित पृष्ठ पर दिया गया चित्र दिखाता है कि आप परमेश्वर के जीवन और सामर्थ के वाहक हैं।

परमेश्वर ने अपने जीवन और सामर्थ को आप में ड़ाला है।

प्रश्नः यह क्यों आवश्यक था कि परमेश्वर की सामर्थ हमारे अंदर हो? वह क्या है जिसे आप बदलना चाहते हैं - अपना जीवनसाथी, अपनी पारिवारिक परिस्थिति या अपना कार्यक्षेत्र - वह भी अपनी स्वयं की सामर्थ से? क्या यह काम करता है?

मनन करेंः 1 यूहन्ना 5:12 व प्रेरितों 1:8 और प्रश्न पर विचार कीजिए। पूछिये 'यह क्यों आवश्यक था कि परमेश्वर अपनी सामर्थ और जीवन को मेरे अंदर डाले''?

परमेश्वर को शामिल करनाः परमेश्वर से एक अद्भुत अनुभव मांगिये जिसमें आप उसकी सामर्थ को अनुभव कर सके।

3. परमेश्वर ने खुद को हमारे संग कर दिया

न सिर्फ परमेश्वर ने खुद को हमारे अंदर डाल दिया परन्तु उसने इससे भी ज्यादा बड़ा कार्य किया। उसने खुद को हमसे जोड़ लिया। इस सत्य का बोध हमको इन तीन आयतों से होता है।

*इफिसियों 2:5 – "**जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ <u>जिलाया</u>; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।)**"*

*1 कुरिन्थियों 6:17 – "**और <u>जो प्रभु की संगति में रहता</u> है, वह <u>उसके साथ एक आत्मा</u> हो जाता है।**"*

*यूहन्ना 14:20– "उस दिन तुम जानोगे, कि **<u>मैं अपने पिता में</u>** हूँ, और **<u>तुम</u>** मुझ में, और **मैं तुम में**।"*

प्रभु परमेश्वर के साथ एक होना या दैवीय रूप से जुड़ना, इस का अर्थ है कि हम परमेश्वर से फिर कभी अलग नहीं होंगे। दूसरे शब्दों में, आप परमेश्वर से एक बार जुड़ गये, एक हो गये तो आप अब कभी अपने उद्धार को नहीं खोएंगे और यह भी कि आप अब उसके साथ अनंत जीवन में प्रवेश कर चुके हैं जब से आपने उद्धार पाया। इसलिये इब्रानियों 13:5ब में वह कहता हैः

"...मैं तुझे <u>न छोड़ूँगा</u> और न कभी त्यागूँगा।'

<u>मनन कीजिए</u> : इफिसियों 2:5, 1 कुरिन्थियों 6:17 और यूहन्ना 14:20 पर और इस प्रश्न पर विचार करें अगर आप मानते हैं कि आप अपना उद्धार खो सकते हो। "यदि परमेश्वर ने मुझसे अपने आप को जोड़ा है तो यह कैसे संभव है कि मैं उससे अलग हो जाऊं?"

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> यदि आप अपनी अनंत सुरक्षा को लेकर अनिश्चित हैं तो परमेश्वर को खोजें व उससे मांगें कि वह आपको इस बात की निश्चितत्ता दे कि कोई भी शक्ति आप के उद्धार के कार्य को रोक नहीं सकती और कोई भी वस्तु आपको परमेश्वर से अलग नहीं कर सकती।

परमेश्वर ने आप में जो सामर्थ को डाला है उसका परिणाम क्या होगा?

परिणामः

अपना जीवन और सामर्थ को आप के अंदर डालने का परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि वह चाहता है कि अपने जीवन यापन का मूल स्त्रोत खुद न रहकर, परमेश्वर को बनने दें। परमेश्वर खुद ही वह मूल स्त्रोत है जिसमें हमें अपना जीवन जीना है।

एक बार फिर आइये, क्रूस के पाप पक्ष और जीवन पक्ष को देखें।

क्रूस के दो पक्ष

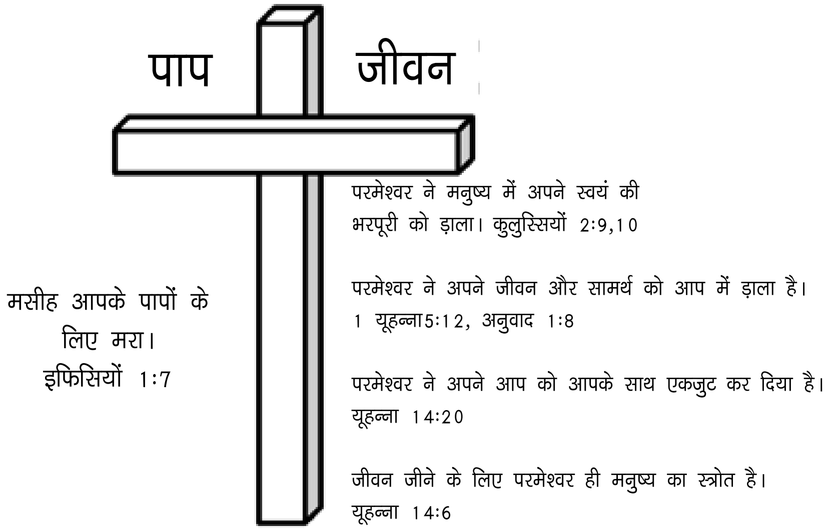

सुसमाचार की सबसे अच्छी खबर यह है कि उद्धार पाने के साथ साथ आप परमेश्वर के साथ एक हो जाते हैं और वह आपके जीवन और सामर्थ का मूल स्त्रोत बन जाता है।

परमेश्वर खुद आपका मूल स्त्रोत बन जाता है जिसमें आप अपना जीवन जी सकते हैं।

आप को खुद अपने जीवन को चलाने के लिए अपनी सामर्थ नहीं लगानी पड़ती।

'यीशु मसीह आपका जीवन है' – का अर्थ है कि वह आप के द्वारा अपना जीवन जीना चाहता है। क्योंकि यीशु मसीह अब आपके अंदर रहता है, वह आपके द्वारा जीवन जीना चाहता है जो केवल वही जी सकता है।

पौलुस इस बात की पुष्टि अपने जीवन के उदाहरण से करता है जो गलातियों 2:20 में हम देखते हैं।

*''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं **जीवित न रहा,** पर **मसीह मुझ में जीवित है**ः*

सोचिए पौलुस इस वचन के द्वारा हमसे क्या कहना चाहता है। जब पौलुस कहता है, ''अब मैं नहीं जीवित हूँ।'' पौलुस यह कहना चाहता है कि वह खुद मसीही जीवन को जीने का स्त्रोत नहीं हो सकता। उसकी योग्यताएँ, बुद्धि और साख को जो यहूदियों के अनुसार बहुत अच्छा था, उसका यह कथन अद्भुत है। वह स्पष्ट रूप से इस बात को मानता है कि उसकी कोई उपलब्धि उसको खुद का स्त्रोत बनने के लिए योग्य नहीं बनाती, इसलिए कि वह यह बात को स्वयं नहीं जी सकता परन्तु मसीह खुद **उसमें** जीवित है और वह उसमें यह जीवन जीता है। पौलुस यह स्वीकार करता है कि इस मसीही जीवन को जीने के लिये उसे मुख्य आवश्यकता है – मसीह की।

'मसीह आप में जीवित है' यह आप के लिए एक नया विचार होगा। मेरे लिए तो यह एक कट्टरपंथी अवधारणा थी, खास करके जब मैं तीस वर्ष इस जीवन को अपनी सामर्थ से जीने का असफल प्रयास करता रहा। जबकि परमेश्वर ने जब मुझे इस सत्य पर गहराई से प्रकाशन दिया कि मसीह अब मुझ में जीवित है, मुझे यकीन हो गया कि मैं वह सच्चा जीवन नहीं जी सकता जो केवल मसीह यीशु मुझमें जी सकता है।

सच्चे मसीही जीवन को जीने की मुख्य कुंजी यही है कि मसीह मुझमें अपने जीवन को जीएं।

मुझे आशा है कि अब तो आप अवश्य ही परमेश्वर से इस महत्वपूर्ण सत्य पर गहरा प्रकाशन माँगेगे। अब आगे का सारा अध्याय हम इस महत्वपूर्ण सत्य का व्यवहारिक अर्थ पता लगाने में बिताएंगे।

प्रश्न – क्या आप इस बात को समझ गये कि मसीही जीवन जीने का अर्थ है मसीह को हम में उस जीवन को जीने देना? यह सत्य आपके जीवन शैली के विषय में आपकी सोच में कैसा बदलाव लाता है?

....

....

मनन करें: इस सच्चाई पर कि आप स्वयं एक मसीही जीवन जी नहीं सकते। केवल आप में रहने वाला मसीह ही आपके जीवन को सही रूप से बदल देगा।

परमेश्वर को शामिल करनाः परमेश्वर से इस सत्य पर और प्रकाशन मांगिये कि मसीह मुझ में कैसे जीवित है।

--------------------000 --------------------

पाँचवा दिन

परमेश्वर आपके जीवन में क्या पूरा करना चाहेगा जब वह आपमें जीवित रहकर इस जीवन को जीता है?

आपके मन में यह प्रश्न जरूर होगा, ''आखिर यह कैसा अनुभव होगा जब परमेश्वर मुझ में जीवित रहकर जीवन जीएगा? इस एक उत्तर तो इस बात में मिलता है कि उसने हमारे जीवन में क्या पूर्ण करने की प्रतिज्ञा की है? आइये, हम कुछ प्रतिज्ञाओं को देखें।

विजय – परमेश्वर आपको पाप पर, शरीर पर, संसार पर और दुष्ट की शक्ति पर विजय पाने का अनुभव देगा।

*परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें **जयवन्त** करता है। 1 कुरिन्थियों 15:57*

स्वतंत्रता – परमेश्वर आपको सभी झूठी मान्यताओं से मुक्त करेगा। पाप के कारण पराजित जीवन शैली से बाहर निकालेगा और आपके आंतरिक संघर्षो से मुक्त करेगा।

*''मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें **स्वतंत्र** किया है; सो इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो।'' – गलातियों 5:1*

चंगाई – परमेश्वर आपके पिछ्ले और वर्तमान घावों को चंगा करेगा।

*भजन 147:3 – ''वह खेदित मन वालों को **चंगा** करता है, और उनके शोक पर मरहम– पट्टी बान्धता है।''*

आपूर्ति – परमेश्वर आपकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा।

*फिलिप्पियों 4:19 – ''और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित **मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा**।''*

आत्मीयता – परमेश्वर आपको एक आत्मीय रिश्ता बनाने हेतु आपको आकर्षित करेगा।

*इफिसियों 1:5 – ''और अपनी इच्छा की **सुमति के अनुसार** हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि **यीशु मसीह के द्वारा** हम उसके लेपालक पुत्र हों।''*

यह कुछ ऐसे वादे हैं जो हमें मसीह में परमेश्वर ने दिये ताकि हमारे में मसीह जीवित रह कर जीवन जी सके।

परमेश्वर हम में जीवित है इसका परिणाम यह होता है कि हम उसके वादों को पूरा होने का अनुमान अपने जीवन में पाते हैं।

प्रश्न : क्या आप अपने मसीही जीवन में परमेश्वर के द्वारा प्रतिज्ञा किया हुआ स्वतंत्रता, चंगाई, छुटकारा और आत्मीयता, जो आप ने प्रभु से चाहा या मांगा था उसको अनुभव कर रहे हैं? यदि अब तक नहीं तो क्या अब आप इन वायदों के अद्भुत अनुभव को लेने के लिये तैयार है?

मनन करें: उन उपर्युक्त प्रतिज्ञाओं पर मनन करें। सोचें विचारें कि आप इन में से किन वायदों को प्राप्त करना चाहते हैं।

परमेश्वर को शामिल करनाः परमेश्वर को शामिल करनाः अगर आप इन वायदों को उस स्तर तक अनुभव नहीं कर रहे हैं जो आप करना चाहते हैं, तो परमेश्वर से इन वायदों को आपके जीवन में एक अनुभवात्मक वास्तविकता बनाने के लिए प्रार्थना करें।

एक और मुख्य प्रतिज्ञाः आपके आत्मिक नियति का पूर्तिकरण

विश्वासी होने के नाते, हमारी और आपकी एक आत्मिक नियति है। रोमियों 8:29, 2 कुरिन्थियों 3:18 और गलातियों 4:19 हमें मसीही होने के नाते हमारी आत्मिक नियति को बताती हैः

*रोमियों 8:29 – ''क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें **पहिले से ठहराया** भी है कि **उसके पुत्र के स्वरुप** में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।''*

*2 कुरिन्थियों 3:18 – ''परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, **हम उसी तेजस्वी रूप में** अंश अंश कर के बदलते जाते हैं।''*

गलातियों 4:19 – ''हे मेरे बालकों, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ।''

आइये, इन तीनों आयतों पर आधारित मैं आपको आत्मिक भविष्य के विषय में कुछ बताऊँ।

आपकी आत्मिक नियतिः यह है कि हम मसीह के तेजस्वी स्वरूप में बदले जाएँ। इसका अर्थ है आप मसीह के समान ही सोचें, विश्वास करें, चुनें और व्यवहार करें।

सोचिये इस विषय में कि आपके जीवन में क्या अंतर आएगा, जब आप मसीह की तरह सोचेंगे, विश्वास करेंगे, चुनेंगे या व्यवहार करेंगे? आप औरों के साथ कैसे संबंध जोड़ते हैं? कैसे व्यवहार करते हैँ या अपनी परिस्थितियों से कैसे निबटते हैं?

मेरा अनुभव यह रहा कि कई मसीही लोग इस निरंतर चलने वाले परिवर्तन के कार्य को अनुभव नहीं कर रहे हैं जो उन्हें मसीह की समानता में परिवर्तित करे। मैं इस बात को समझता हूँ कि क्यों मेरे जीवन के तीस वर्षो तक मैंने भी इस अनुभव को प्राप्त नहीं किया था। कारण यह था कि मैं मसीही जीवन जीने के झूठी धारणा से जी रहा था कि मसीही जीवन जीने का अर्थ क्या है। मुख्य बात यह है कि मसीही जीवन जीने के अर्थ, सच्चाई और विश्वास के सत्य को जाने बगैर कोई बड़ा रूपांतरण नहीं होगा।

क्योंकि आपके भीतर ही परमेश्वर का जीवन और सामर्थ दोनों हैं तो आप भी इसे अनुभव कर सकते है और एक परिवर्तित जीवन जी सकते हैं जिसमें आपकी सोच, आपका विश्वास, आपके चुनाव व आपका व्यवहार मसीह के समान हो जाता है।

<u>याद रखेंः</u> यह कोई रूपांतरण नहीं है जिसे आप अपने जीवन में मसीह से अलग होकर कर सकते हैं या अनुभव कर सकते हैं। यह आपकी खुद की क्षमता में मसीह की समान बनने की कोशिश करने या अनुकरण करने के बारे में भी नहीं है।

<u>प्रश्न :</u> किन बातों में, जो आपके जीवन से संबंधित है, परिवर्तन आएगा जब आप मसीह के समान ही सोचेंगे, महसूस करेंगे, विश्वास रखेंगे या व्यवहार करेंगे?

<u>मनन करें :</u> रोमियो 12:2 और 2 कुरिन्थियों 3:18 पर और इस बिन्दु पर विचार करेंः जब मसीह आप में जीवित है तो वह आपकी सोच, भावना, चुनाव व व्यवहार को कैसे परिवर्तित कर सकता है?

<u>परमेश्वर को शामिल करना</u> : उससे पूछें कि वह आपके जीवन के उन क्षेत्रों को आपको बताएं जिनमें आप रूपांतरण चाहते हैं।

<u>परमेश्वर द्वारा किए गये प्रतिज्ञाओं के पूरे होने का आपके जीवन में क्या परिणाम होगा?</u>

इसका परिणाम यह होगा कि आप एक बहुतायत का जीवन अनुभव करने पाएँगे। यह प्रतिज्ञा प्रभु ने यूहन्ना 10:10 में दी हैः

"...मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और <u>बहुतायत</u> से पाएँ।"

आप इस बहुतायत के जीवन के बार में क्या समझते हैं? मुझे नहीं लगता कि परमेश्वर हमारी बाहरी या सांसारिक बहुतायत के विषय में बोल रहे हैं क्योंकि वह तो आसानी से छीनी जा सकती है। तो क्या यह संभव है कि जिस बहुतायत के जीवन की बात यीशु मसीह कर रहा है वह आंतरिक जीवन है? आइये मैं आपको कुछ ऐसी प्रतिज्ञाएँ याद दिलाऊँ जो हमने अभी देखी और पढ़ी हैं, ताकि हम अधिक गहराई से बहुतायत के जीवन का अर्थ समझ सके। मैं इसे एक प्रश्न के रूप में लूँगा।

यदि आपः

- पाप, शरीर, संसार और दुष्ट पर **<u>विजयी</u> जीवन जी रहे हैं**।
- यदि आप अपने पापी जीवन शैली से **<u>मुक्ति</u>** पा रहे हैं।
- यदि आपने अपने पुराने घावों और वर्तमान घावों की **<u>चंगाई पा ली</u>** है।
- आपकी आवश्यकताओं की ***<u>पूर्ति हो रही</u>*** है।
- यदि आप **<u>परिवर्तित</u>** सोच, चुनाव, भावना और व्यवहार में मसीह के समान बन रहे हैं और
- **<u>परमेश्वर के साथ एक</u> व्यक्तिगत, घनिष्ठ संबंध का अनुभव करना,**

तब भी क्या आप, <u>बहुतायत का जीवन</u> पाना चाहेंगे?

मुझे विश्वास है कि आप भी मेरे समान बहुतायत के जीवन के विषय में विचार करेंगे। इस बात पर भी विचार करें

यदि मसीह खुद ही आपका जीवन है और मसीह का जीवन, बहुतायत का जीवन है तो क्या वह बहुतायत का जीवन आप में मसीह को जीने दे रहा है ताकि आप उन प्रतिज्ञाओं को अनुभव कर सके जो हमें स्वतंत्रता, विजय, चंगाई, परिवर्तन और आत्मीयता प्रदान करता है।

प्रश्नः यदि आज आपसे कोई यह पूछे, कि आप एक बहुतायत का जीवन क्यों जी रहे हैं? तो आपका उत्तर क्या होगा?

हम प्रभु में जीवित है न कि उसके लिए जीवित है।

हमने अभी अभी सीखा कि विषय यह है कि परमेश्वर हमारे द्वारा जीवन जीएँ, हालाँकि साधारण मसीही जीवन जीने के समय मैं यह सोच रहा था कि मसीही जीवन यह है कि हम मसीह के लिए जीएँ। इसका अर्थ यह है कि मेरी यह अवधारणाा थी कि परमेश्वर मुझसे चाहता है कि मैं प्रचार करूँ, चेले बनाऊँ इत्यादि। क्या आपने भी यही सीखा है? सत्य यह है कि आप कुछ भटक रहे हैं। परमेश्वर आपसे यह आशा नहीं करता कि आप वह जीवन जीएँ जो केवल मसीह जी सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह आप पर निर्भर नहीं है कि आप परमेश्वर के लिए कुछ करे। सत्य यह है कि परमेश्वर हमसे कुछ नहीं उम्मीद करता क्योंकि वह खुद ही हमारा प्रबंधनकर्ता और सृष्टिकर्ता है जैसा कि फिलिप्पियों 1ः6 में लिखा है –

''और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।''

क्योंकि परमेश्वर हमारा प्रबंधनकर्ता और सृष्टिकर्ता है इसलिए यह आवश्यक है कि हम उसी में जीएँ न कि उसके लिए। आइये हम इसे ऐसे समझेः

झूठः

हमें परमेश्वर के लिए जीना है और उसके लिए कुछ करना है।

मूल सत्यः

हमें परमेश्वर में जीना है क्योंकि वह हमारे जीवन का मूल स्त्रोत है जिसके द्वारा हम जीवन को जी सकते हैं।

प्रश्न : क्या आप ऐसा मानते हैं कि परमेश्वर को अपने कार्यो को पूरा करने के लिए आपकी आवश्यकता है? इस कथन का क्या अर्थ है कि आपको परमेश्वर में जीना है क्योंकि वह आपका मूल स्त्रोत है? इस बात के जानने से आपके जीवन में क्या अंतर आएगा कि आपको परमेश्वर के लिए नहीं परन्तु परमेश्वर से जीवित रहना है? इसका उत्तम परिणााम यह है कि परमेश्वर खुद आप में जीवित है।

....

....

....

....

इस सत्य का परिणाम समझने के लिए कि परमेश्वर हम में जीवित है

हले तो हमें इफिसियों 1ः5 से यह समझना पड़ेगा कि उसकी मनुष्य के लिए क्या योजना हैः

''और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों।''

परमेश्वर की अपरिवर्तनीय इच्छा यह है कि वह हमें अपनी ओर आकर्षित करे जिससे हम उसके साथ एक व्यक्तिगत आत्मीय रिश्ते में आ सके।

आप देखिए कि आप परमेश्वर के साथ एक रिश्ते में जुड़ने के लिये रचे गये थे। आप माने या न माने, पर परमेश्वर आप से व्यक्तिगत संबंध बनाना चाहता है। इसलिये उसने खुद को आप में जीवित किया और सदा साथ रहने वाले एक रिश्ते को बनाया। सत्य यह है कि परमेश्वर की इस उद्देश्य के पीछे की प्रेरणा यह है कि वह आपसे बेशर्त प्रेम के द्वारा एक गहरा व्यक्तिगत संबंध चाहता है। हम इसे इफिसियों 1:4 में देखते हैं।

*''जैसा उस ने हमें जगत की उत्पति से पहिले उस में **चुन लिया,** कि हम उसके निकट **प्रेम** में पवित्र और निर्दोष हों।''*

इस पद के अनुसार जो सत्य हम पर उजागार होता है वह यह है कि परमेश्वर ने हमसे अनंत प्रेम किया है। एक बार इस तरह सोच के देखिये कि परमेश्वर बहुत प्रत्याशा या पहले से आप के जन्म लेने का इंतज़ार कर रहे थे ताकि आप पर अपना असीम स्नेह लुटा सके। मैं चाहूँगा आप इस वैज्ञानिक तथ्य पर विचार करें। गर्भाधान के समय करीब 50 लाख अनुवांशिक संयोजन संभावित थे और उन में प्रभु ने चाहा कि आप ही उत्पन्न हो। परमेश्वर ने न सिर्फ अपना जीवन आप में डाला ताकि आप उसकी प्रतिज्ञाओं को सच्चाई से अनुभव कर सके बल्कि इसलिये भी कि आप उसके प्रेम को गहराई से अनुभव करें और उसकी इच्छा को जान लें कि वह आपके साथ आत्मीय होना चाहता है।

मनन करें: उपरोक्त इफिसियों 1:5 व 1:4 पर। इस विचार पर गहरा मनन करें कि उसने आप को अपने साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने के लिए रचा है। विचार करें कि वह बेसब्री से आपके जन्म लेने की बाट जोहता है कि आप पर अपना प्रेम उंडेल सके।

परमेश्वर को शामिल करना: यदि आप इस बात से जूझ रहे हैं कि आपका संबंध परमेश्वर से कैसा है तो उससे मांगिए कि वह इस बात की पुष्टि करें कि वह आप से अत्यधिक व अनंत प्रेम करता है।

मेरे साथ क्या हुआ जब मैंने इस सत्य को गहराई से जाना?

जब से मैंने इस सत्य को 4 अक्टूबर 1998 को जाना तब मैंने अपना नया जीवन जीना आरंभ किया जिसमें मैं मसीह को उसका जीवन मुझ में जीने देता हूँ। इसका परिणाम यह हुआ कि परमेश्वर मेरे जीवन को परिवर्तित कर पाया और मेरे विचार, चुनाव, भावनाएँ और व्यवहार में परिवर्तन आने लगा। इस विश्वास से मसीह मुझ में जीवित है, मुझे स्वतंत्रता मिली। मैंने अपने डर, क्रोध और असुरक्षा से मुक्ति पाई। मेरा जीवन इस प्रकार परिवर्तित हुआ कि मैं अपनी अच्छी नौकरी छोड़कर सेवकाई में चला आया ताकि यह सत्य औरों को भी बता सकूं जो आप ही की तरह अपने मसीही अनुभव में बढ़ना चाहते हैं। मेरी प्रार्थना यह है कि अब से आप पवित्र आत्मा की सहायता से इस सत्य की गहराई और प्रकाशन में और बढ़ेंगे कि मसीह हमारे द्वारा सच्चा मसीही जीवन कैसे जीता है।

''साधारण'' जीवन बनाम ''सच्चे'' जीवन का अवलोकन

''साधारण'' जीवन और ''सच्चे'' जीवन के बीच के अंतर का एक अवलोकन प्राप्त करने के लिए अगले पन्ने पर जायें। हम इस पृष्ठ पर वापस आएंगे जब हम इस अध्ययन के बाकी हिस्सों में जाते हैं।

पाठ एक के सारांश बिन्दु

- मसीह स्वयं मसीही-जीवन है। यूहन्ना 14:6
- मसीह आपके जीवन के रूप में का अर्थ है कि परमेश्वर को आपके जीवन जीने का स्रोत होना है। प्रेरितों 17:28
- पतन से पहले जीवन जीने के लिए परमेश्वर आदम और हव्वा का स्रोत था। 1कुरिन्थियों 1:30
- आदम और हव्वा ने परमेश्वर की अवज्ञा करने के लिए एक पापमय, स्वतंत्र निर्णय लिया और आत्मिक रूप से मर गये। रोमियों 5:12अ
- आदम और हव्वा का जीवन और स्रोत के रूप में परमेश्वर से अलगाव मनुष्य को विरासत में मिली। रोमियों 5:12ब
- परमेश्वर ने न केवल हमारे पापों से व्यवहार किया, बल्कि उसने अपने जीवन को मनुष्य में एक बार फिर डाल दिया ताकि वह मनुष्य का स्त्रोत बन सके जिससे कि वह अपना जीवन जी सके। इफिसियों 1:7; 1यूहन्ना 5:12
- हमारे अंदर परमेश्वर का जीवन और सामर्थ हमारे जीवन को बदलने का वादा करता है। 2 कुरिन्थियों 3:18

- इस रूपांतरण प्रक्रिया में परमेश्वर की भूमिका एक आंरभकर्ता और रूपांतरण के कारण और प्रभाव का है। फिलिप्पियों 1:6
- आपके रूपांतरण का अंतिम परिणाम परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत, घनिष्ठ संबंध है। इफिसियों 1:5

'साधारण' जीवन और 'सच्चे' जीवन के बीच का अंतर

'साधारण' जीवन (स्वयं स्रोत के रूप में जीना)	**'सच्चा' जीवन (स्रोत के रूप में मसीह में जीना)**
स्वतंत्र जीवन परमेश्वर पर निर्भर हुए बिना मसीही जीवन जीने का प्रयास करना	**आश्रित जीवन** मसीही जीवन जीने के लिए परमेश्वर को आपके स्त्रोत जानकर हर पल उसपर निर्भर होकर जीना। यूहन्ना 15:5
मसीही जीवन प्रदर्शन का जीवन है मसीही जीवन अनुपालन करने के लिए कुछ नियम है या पूरी करने के लिए कोई जाँचसूची है।	**मसीही जीवन मसीह है** मसीही जीवन स्वयं मसीह है। यूहन्ना 14:6; फिलिप्पियों 1:21
आप मसीही जीवन जीने के लिए स्रोत है यह आप पर निर्भर है कि आप अपनी ताकत और क्षमता का उपयोग करते हूए परमेश्वर की मदद से मसीही जीवन जी सकते है।	**परमेश्वर मसीही जीवन जीने के लिए स्रोत है** आप मसीही जीवन जीने के लिए परमेश्वर के जीवन और सामर्थ को स्रोत के रूप में मानकर जीते हैं। यूहन्ना 14:6; प्रेरितों 17:28
परमेश्वर के लिए जीना अपनी स्वयं की सामर्थ से परमेश्वर को प्रसन्न करने या परमेश्वर से कुछ प्राप्त करने का प्रयास करना (प्यार, स्वीकृति, आदि)।	**परमेश्वर से जीना** मसीह पर उसके जीवन को आपके द्वारा जीने का भरोसा करना गलतियों 2:20
परमेश्वर की मदद से स्व-रूपांतरण विजय, स्वतंत्रता, चंगाई,रूपांतरण, उत्पादन करने के लिए परमेश्वर की सहायता से अपनी मेहनत से कोशिश करना	**परमेश्वर-निर्मित रूपांतरण** विजय, स्वतंत्रता, चंगाई, रूपांतरण, उत्पादन करने के स्त्रोत के रूप में परमेश्वर पर निर्भर रहना। 1 कुरिन्थियों 1:30
परमेश्वर की सहायता से अपने आप पर विश्वास मसीही जीवन का निर्माण करने के लिए परमेश्वर की मदद से आपकी बुद्धि, क्षमता, आत्म-अनुशासन, और इच्छाशक्ति पर विश्वास रखनाा।	**परमेश्वर में विश्वास** इस परिणाम के साथ केवल परमेश्वर पर विश्वास करना कि उसका जीवन और सामर्थ आपमें और आपके द्वारा बहेगी ताकि मसीह की समानता में रूपांतरित होते जाएं। 1 यूहन्ना 5:12, इफिसियों 1:19, 20; इब्रानियों 11:6
परिणाम होता हैः अधिक शरीर, पाप, निराशा, हार, घायलता भ्रम और मसीही जीवन से दूर जाना या जीवन को काम करने के लिए कड़ी मेहनत करना; कोई रूपांतरण नहीं, आत्मनिर्भर मसीही जीवन जीने में जारी रहना निरंतर अशांति और संघर्ष एक समान ही या उससे बदतर	**परिणाम होता हैः** स्वतंत्रता, विजय, चंगाई - गलातियों 5:1; भजन 147:3; 1 कुरिन्थियों 15: 57 परमेश्वर पर बड़ी निर्भरता - यूहन्ना 15:5 उसके साथ गहरी घनिष्ठता - फिलिप्पियों 3:8 मसीह की समानता में रूपांतरित होना - 2 कुरिन्थियों 3:18; रोमियों 8:29 बहुतायत का जीवन - यूहन्ना 10:10

अध्याय - 2

आप में होकर अपना जीवन जीने के लिए परमेश्वर का और आपका क्या भाग है?

पहला दिन

अध्याय दो का अवलोकन

- परमेश्वर का हमारे जीवन में अपना जीवन जीने का भाग
- परमेश्वर का हमारे जीवन में अपना जीवन जीने में मनुष्य का भाग
- यह समझना कि यीशु अपने पिता के साथ सम्बन्ध में कैसे रहता था
- हम निर्भरता के साथ संघर्ष क्यों करते हैं
- हम परमेश्वर से स्वतंत्र होकर क्यों नहीं जी सकते हैं
- विश्वास शब्द के चार अर्थ
- हमारे विश्वास के दो तत्व
- हम विश्वास के साथ क्यों संघर्ष करते हैं

परिचय

मुझे आशा है कि पहले अध्याय ने आपको मसीह आपका जीवन और यह कि वह आपमें अपना जीवन जीना चाहता है - इस विषय में एक स्पष्ट समझ दी होगी, और यह कि वह आप में अपना जीवन जीना चाहता है। इस अध्याय में, हम इस उद्देश्य से यह देखने जा रहे हैं कि मसीह आप में अपना जीवन जीएँ तो परमेश्वर का और आपका क्या भाग है।

आप में जीवन जीने में परमेश्वर का क्या भाग है?

यह अध्ययन का एक महत्वपूर्ण भाग है क्योंकि कई मसीही यह नहीं समझ पाते हैं कि परमेश्वर का उनके जीवन में जीने में उनका और परमेश्वर का क्या भाग है। इसलिए, मैं देखना चाहता हूँ कि बाइबल परमेश्वर के भाग के विषय में क्या कहती है, और फिर हम देखेंगे कि परमेश्वर का हमारे जीवन में जीने में मनुष्य का क्या भाग है।

अपने वायदे को आपके जीवन में एक अनुभवी वास्तविकता बनाने के लिए परमेश्वर आरंभकर्ता और कारण और प्रभाव हैं।

*"और मुझे इस बात का भरोसा है, कि **जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ** किया है..." - फिलिप्पियों 1:6*

पौलुस आपको इस पद के पहले भाग में क्या कह रहा है? वह कह रहा है कि परमेश्वर ने वह कार्य शुरू किया जो वह आप में पूरा करना चाहता है। उसने उद्धार में इस कार्य को शुरू किया या **पहल की**। पिता ने मानव जाति को उनके पापों से बचाने के लिए क्रूस पर मरने के लिए यीशु को भेजकर इस कार्य को पूरा किया। हालांकि, परमेश्वर आपको बचाने से ज्यादा कुछ और भी करने का वादा करता है। फिलिप्पियों 1:6 के दूसरे भाग को देखें:

*"और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने **तुम में अच्छा काम आरम्भ किया** है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।"*
इफिस्सियों 1:6ब

हम फिलिप्पियों 1:6 के दूसरे भाग में देखते हैं कि परमेश्वर ने न केवल कार्य शुरू किया बल्कि वह उस कार्य को पूरा भी करेगा जिसे उसने उद्धार के दौरान आपके साथ शुरू किया था। यह आयत हमें बताती है कि:

परमेश्वर आपके जीवन के वास्तविक परिवर्तन के आरंभकर्ता और कारण और परिणाम हैं।

झूठी धारणा यह है कि हम अपने जीवन में परिवर्तन के आरम्भकर्ता और कारण और परिणाम हैं। दूसरे शब्दों में यदि कोई परिवर्तन होता है, तो यह आपके ऊपर है कि आप अपने आप को (परमेश्वर की सहायता से) बदले। इसी झूठी धारणा के कारण ही इतने सारे विश्वासियों ने या तो छोड़ दिया है या फिर मसीही जीवन जीने के लिए कड़ा संघर्ष कर रहे हैं। सच्चाई यह है कि जब उसके वायदे को पूरा करने की बात आती है तो केवल परमेश्वर ही परिवर्तन का कारण और परिणाम हो सकता है। यह कहने का एक और तरीका यह है कि परमेश्वर आपको जो वायदा करता है वह उसका निर्माणकर्त्ता होगा।

वे कुछ चीजें क्या हैं जो परमेश्वर आप में उत्पन्न करना चाहते हैं? वह चाहता हैं:

- **वह आप को उन पाप के गढ़ों से मुक्त करना चाहता हैं जिन्हें आप दूर नहीं कर सकते हैं। गलातियों 5:1**
- **वह आपके अतीत और वर्तमान के घावों को चंगा करना चाहता है। भजन 147:3**
- **वह आपकी जरूरतों की पूर्ति करना चाहता है। फिलिप्पियों 4:19**
- **वह पाप, संसार, देह और शैतान पर आपको विजय दिलाना चाहता है। 1 कुरिन्थियों 15:57**
- **वह आपके जीवन को रूपांतरण करना चाहता है ताकि आप मसीह की समानता का अनुभव कर सकें। 2 कुरिन्थियों 3:18**
- **वह आपको अपने साथ एक घनिष्ठ संबंध में खींचना चाहता है। इफिसियों 1:5**

अगला चित्र यह दिखाता है कि हमारा जीवन भीतर से बाहर तक परमेश्वर के साथ ही बिताया जाना चाहिए, यह मानते हुए कि परमेश्वर नए मन, विजय, [1]स्वतंत्रता इत्यादि के अपने वायदों को उत्पन्न करने का कारण और परिणाम है।

भीतर से बाहर रहते है

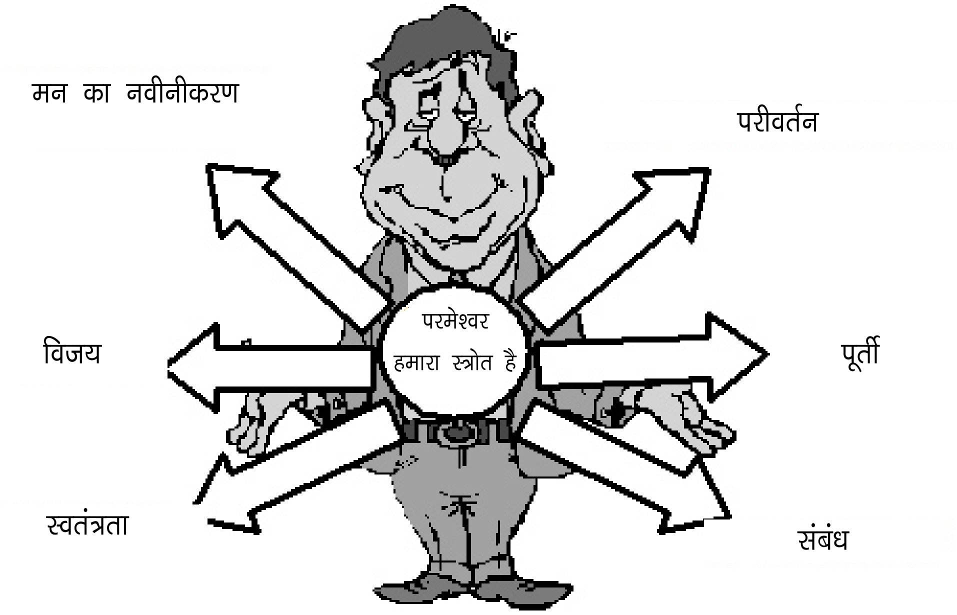

प्रश्नः ऊपर सूचीबद्ध ऐसी कौन सी चीजें हैं जिन्हें आप अधिक अनुभव करना चाहते हैं?

....

....

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> परमेश्वर से उन चीजों को पूरा करने के लिए कहें।

एक और बात जो मैं आपके साथ बाँटना चाहता हूँ वह यह है कि मैंने कई विश्वासियों को यह प्रश्न पूछते हुए सुना है कि, 'क्या परमेश्वर वास्तव में मेरे जीवन को बदलना <u>चाहता</u> है?' फिलिप्पियों 1ः6 में फिर से देखें, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि परमेश्वर ने आपके अंदर उद्धार का कार्य शुरू किया और वह <u>लगातार</u> आपके जीवन को बदलना चाहता है।

''और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा <u>करेगा।</u>'' फिलिप्पियों 1ः6

जो कई मसीहियों के जीवन में सच साबित हुआ है वह यह है कि यह परमेश्वर नहीं है जो अनिच्छुक है। यह मनुष्यों की अनिच्छा है जो परमेश्वर को उनका जीवन नहीं बदलने देती।

<u>प्रश्नः</u> क्या आपको इस बात पर विश्वास है कि आपके जीवन का बदलना आप पर निर्भर करता है? अगर आपने यह विश्वास किया कि परमेश्वर आपके परिवर्तन का कारण और प्रभाव है तो आपने मसीही जीवन कैसे जीया? यह कैसे बदल सकता है?

<u>मनन करेंः</u> फिलिप्पियों 1ः6 पर। अपने भीतर के निर्धारित परमेश्वर के विषय में सोचें जो आपके जीवन को मूल रूप से बदलने के लिए इच्छुक हैं।

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> यदि आप परमेश्वर के साथ संघर्ष कर रहे हैं या अपने जीवन को बदलने के इच्छुक हैं, तो उससे आपको यह समझाने के लिए कहें कि वह सक्षम और इच्छुक है।

आपके जीवन में कभी भी कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं हो पाएगा, अगर परमेश्वर आपके भीतर के कार्य का आरम्भकर्ता और परिवर्तन का सृष्टिकर्ता नहीं है।

<u>दाखलता–डाली का संबंध आपके भाग को प्रकट करता है।</u>

यद्यपि परमेश्वर आपके जीवन में रुपांतरण का स्वयं ही कारण और प्रभाव है, फिर भी आपके पास एक महत्वपूर्ण भाग है इस उद्देश्य से कि वह आपके जीवन में अपना जीवन जी सके। आइये यूहन्ना 15ः5 को देखें ताकि आपको एक बेहतर विचार मिले कि यह भाग क्या हैः

*''**<u>मैं दाखलता हूँ</u>**ः तुम **<u>डालियाँ</u>** हो; जो मुझ में **<u>बना रहता</u>** है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।'' यूहन्ना 15ः5अ*

यीशु कह रहा है कि जैसे भौतिक डाली को जीवन की भौतिक दाखलता पर पूरी तरह से निर्भर रहने के लिए बनाया गया है, और आपको, 'आत्मिक' डाली के रूप में, परमेश्वर पर पूरी तरह से निर्भर रहने के लिए बनाया गया है, सम्पूर्ण जीवन के लिए आत्मिक दाखलता। 'बने रहना' शब्द 'निर्भरता' के लिए एक और शब्द है।

इस बिंदु पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण सत्य समझना काफी महत्वपूर्ण हैः

महत्वपूर्ण मूल सत्यः
परमेश्वर ने मनुष्य को उसके ऊपर निर्भर होने के लिए बनाया।
आपके लिए शुरुआत से ही उसका उद्देश्य था कि आप उस पर निर्भर हों।

मुख्य शब्द 'उद्देश्य' है। याद रखें कि हमारे पहले अध्याय में हमने सीखा था कि शुरुआत से परमेश्वर का उद्देश्य आदम और हव्वा के लिए यह था कि वे हर जरुरत के लिए उस पर निर्भर हो। परमेश्वर का उद्देश्य नहीं बदला। आप भी, परमेश्वर पर पूरी तरह से निर्भर होने के लिए बनाए गए हैं। क्या यह तर्क नहीं है कि अगर परमेश्वर हमारा स्रोत है तो यह हमारा भाग है कि

हम अपने स्रोत पर निर्भर हों? यही कारण है कि यीशु डाली के दाखलता पर पूरी तरह से निर्भर होने के आदर्श उदाहरण का उपयोग करता है।

इसलिए, मसीह में आपके लिए परमेश्वर का उद्देश्य यह है किः

वह आप में अपना जीवन जीएः अपने स्रोत के रूप में परमेश्वर पर कुल निर्भरता की प्रवृति के साथ जीना।

नोटः यूहन्ना 15:5 में 'फलता' शब्द का अर्थ 'उत्पन्न करना' नहीं है। 'फलता' शब्द का अर्थ है 'ले जाना।' मुख्य बिन्दु यह है कि डाली फल नहीं देती है। दाखलता फल उत्पन्न करने के लिए स्रोत है जबकि डाली अभिकर्ता है जिसके माध्यम से फल उत्पन्न होता है।

मुख्य बिन्दु

जब आप परमेश्वर पर निर्भरता की प्रवृति के साथ चलते हैं, वह आपके स्रोत के रूप में, आपके भीतर स्वतंत्रता, विजय, और चंगाई आदि के अपने वायदों को उत्पन्न करता है।

वह मसीह की समानता में परिवर्तित होने की आपकी आत्मिक नियति को पूरा करता है।

प्रश्नः क्या आपने इस बात पर विश्वास किया है कि आपको फल उत्पन्न करना हैं? यदि हाँ, तो यह आपके मसीही जीवन के प्रति आपके दृष्टिकोण को कैसे बदलेगा। यदि आपको लगता है कि आपका भाग 'निर्भरता' है और परमेश्वर का भाग आप में फल का 'उत्पादन' करने का है? हमारी संस्कृति हमें जो बताती है उससे किस तरह परमेश्वर पर निर्भर होना भिन्न है?

मनन करेंः मुझे पता है कि यूहन्ना 15:5 एक बहुत ही परिचित आयत है, और मसीही लोग इस पद की अनन्त गहराई को महसूस किए बिना कि यीशु क्या कह रहा है इस पर उतावली से चढ़ते हुए प्रतीत होते हैं। इसलिए, इस पद पर ध्यान से धीरे-धीरे और जानबूझकर समय व्यतीत करें।

परमेश्वर को शामिल करनाः परमेश्वर से कहें कि वह आपको डाली - दाखलता के सम्बन्ध के अनन्त प्रभावों की गहरी आत्मिक समझ दे क्योंकि यह परमेश्वर पर आपकी निर्भरता से संबंधित है।

--------------------000 --------------------

दूसरा दिन

निर्भरता को बेहतर तरीके से समझने के लिए, देखते हैं, कि यीशु ने कैसे जीवन व्यतीत किया।

आप इस बात पर सोच रहे होंगे कि निर्भरता कैसी दिखती है। निर्भरता की पूर्ण समझ हासिल करने के लिए, देखते हैं कि यीशु ने संसार में अपना जीवन कैसे बिताया था। हमें पहले यह समझने की जरूरत है कि यीशु ने 'परमेश्वर-मनुष्य' के रूप में परमेश्वर होने के अपने विशेषाधिकार को अलग कर दिया था। हम इसे फिलिप्पियों 2:6,7 में देखते हैंः

*''जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन **अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया,** और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।''*

इसका अर्थ यह नहीं है कि जिस समय यीशु इस धरती पर था वह पूरी तरह से परमेश्वर नहीं था। इसका अर्थ विशेष रूप से यह है कि यीशु ने मनुष्य के रूप में रहने के लिए पिता के समान होने के अपने अधिकार को छोड़ दिया था। फिर यीशु ने पिता के साथ अपने संबंध को कैसे जीया?

आइए उन तीन आयतों को देखें जो यीशु के अपने पिता के साथ के रिश्ते का वर्णन करते हैंः

*"इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ, **पुत्र आप से कुछ नहीं** कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।" – यूहन्ना 5:19*

***"मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता**; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ।" – यूहन्ना 5:30*

*"तब यीशु ने कहा, कि जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और **अपने आप से कुछ नहीं करता,** परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ।" – यूहन्ना 8:28*

इन आयतों में से प्रत्येक में सामान्य विषय यह है कि यीशु ने कहा कि वह पिता से अलग होकर **कुछ भी नहीं कर सकता** था। दूसरे शब्दों में, यीशु इस संसार में रहते हुए भी पिता पर अपने स्रोत के रूप में हर क्षण के लिए निर्भर था। इसका क्या अर्थ है कि यीशु पिता द्वारा अपने स्रोत के रूप में जीवन जी रहा था?

इसका अर्थ यह है कि यीशु अपने स्वयं के जीवन और सामर्थ द्वारा कार्यशील नहीं था बल्कि अपने पिता के जीवन और सामर्थ द्वारा था।

क्या इसका अर्थ यह हो सकता है कि यीशु नहीं, बल्कि परमेश्वर था जो यीशु के संसार पर कार्य पूरा करने का स्रोत था? हम इसका उत्तर यूहन्ना 14:10 में देखते हैं जब यीशु कहता हैः

*'क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु **पिता मुझ में रहकर अपने कार्य करता है**।'*

यह पद हमें यह बता रहा है कि यीशु का लंगड़ों को ठीक करना, अंधों को आँखें देना और मृतकों में से लाजर को जी उठाना, पिता के **जीवन** और **सामर्थ** से था। दूसरे शब्दों में, यीशु पिता पर निर्भर रहता था, जिसके परिणामस्वरूप पिता ने मसीह के **माध्यम** से चमत्कार किए। यीशु का अपने पिता के साथ सम्बन्ध दाखलता और डाली के सम्बन्ध का आदर्श उदाहरण था।

यदि यीशु की निर्भरता के कारण पिता का **जीवन और सामर्थ** उसके द्वारा बह निकला जिससे वह चमत्कार कर पाया, तो वही जीवन और सामर्थ आप के साथ क्या कर सकता है अगर आप परमेश्वर पर निर्भर होकर चलते हैं? यह हमें निम्नलिखित प्रश्नों की ओर ले जाता हैः

यदि यीशु, एक मनुष्य के रूप में, अपने पिता पर स्रोत के रूप में पूर्ण समर्पण में रहता था जिसके परिणामस्वरूप पिता अपने जीवन में यीशु में और उसके द्वारा रहता था, तो आपको कैसे जीवन जीना चाहिए?

मुख्य बिन्दुः यीशु न केवल हमारे पापों के लिए मरने आया था। बल्कि वह हमें यह दिखाने के लिए भी आया था कि हमें कैसे जीना चाहिए।

प्रश्नः विजय, स्वतंत्रता, चंगाई और परिवर्तन के विषय में परमेश्वर के वायदों का वर्णन करते हुए हमने अध्याय एक में यह चर्चा की, कि आपको क्या लगता हैं कि यदि आप उस पर निर्भर रहना चुनते हैं तो परमेश्वर आपके जीवन में क्या उत्पन्न करेगा?

....

....

....

मनन करेंः यूहन्ना के आयतों पर मनन करें और इस प्रश्न के विषय में सोचें, 'यदि यीशु जो हमारा उदाहरण है वह अपने पिता के जीवन और सामर्थ पर पूरी तरह से निर्भर रहता है, तो परमेश्वर हमसे कैसे जीने की अपेक्षा करता है?'

परमेश्वर को शामिल करनाः आप अभी तक यीशु और उसके पिता के बीच रिश्ते और परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते के संबंध में इस अमलीकरण के विषय में समझ नहीं सके हैं। इसलिए, परमेश्वर से आपको यह बताने के लिए प्रार्थना करें कि पिता के साथ यीशु का सम्बन्ध आपके दैनिक जीवन में आपके साथ कैसे लागू होता है।

हम परमेश्वर पर निर्भर होने के लिए क्यों संघर्ष करते हैं?

जब मैंने मसीह को अपने जीवन में जीने की अनुमति देने की अपनी नई यात्रा शुरू की, तब मैं पूरी तरह से उस पर निर्भर होने लिए संघर्ष कर रहा था। कई मसीही लोगों के बीच सेवकाई करने के बाद, मैंने पाया कि हम सभी परमेश्वर पर निर्भर होने के लिए संघर्ष करते हैं। क्यों? मैं आपको तीन सबसे आम कारण बताता हूँ कि हम सभी निर्भरता के लिए क्यों संघर्ष करते हैं।

1. संसार कहता है कि आपको स्वतंत्र होना चाहिए।

निर्भरता के साथ हमारे संघर्ष का एक पक्ष यह भी है कि हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जो यह चिल्लाता रहता है कि, 'स्वतंत्र, स्वाधीन और आत्मनिर्भर बनो।' हम संसार द्वारा स्वतंत्र होने के सन्देश द्वारा बहाए जाते है और हमारे दिमाग को परिवर्तित किया जाता है कि जब परमेश्वर पर निर्भर होकर जीवन जीने की बात आती है तो हम संघर्ष करते हैं।

2. संसार यह भी संदेश देता है कि निर्भरता कमजोरी के समान होती है।

न केवल संसार 'स्वतंत्र होने' के विषय में चिल्लाता रहता है, बल्कि यह संदेश भी देता है कि 'निर्भरता' 'कमजोरी' के समान होती है। क्योंकि कोई भी अपने आप को (विशेष रूप से पुरुष) कमजोर के रूप में नहीं देखना चाहता है, तो वे अपनी स्वतंत्रता में 'मजबूत' होना चुनते हैं। (आपकी जानकारी के लिएः निर्भरता = कमजोरी, एक झूठी धारणा है।)

3. मनुष्य के श्रृंगार का एक भाग यह भी है जो परमेश्वर पर निर्भर होने का विरोध करता हैः देह।

जब तक हम बचाए नहीं गए, हम परमेश्वर से स्वतंत्र होकर जी रहे थे। इसलिए, फिर हमने यह सीखा कि मसीही जीवन निर्भरता के विषय में है, तो हमारे भीतर जिसे 'देह' कहा जाता है (रोमियों 7:18 देखें) जो परमेश्वर पर निर्भर होने का विरोध करती है। देह केवल हमारे भीतर की एक प्रवृति है जो यह कहती है, 'मुझे जीवन जीने के लिए परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मैं इसे अपने आप कर सकता हूँ।'

देह में जीना परमेश्वर पर निर्भर होने का विरोध करने का # 1 कारण है।

हम अध्याय चार में देह के विषय में और बात करेंगे, लेकिन यह जानना महत्वपूर्ण है कि हमारे अंदर एक ऐसा भाग है जो हमेशा परमेश्वर पर निर्भर होने का विरोध करता है।

सच्चाई यह है कि मनुष्य को परमेश्वर से स्वतंत्र होकर जीने के लिए बनाया नहीं गया था।

आइये यूहन्ना 15:5 पर वापस जाएँ और इस पद के आखिरी कुछ शब्दों को देखें जहाँ यीशु कहता हैः

"...... क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते"

मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ। 'जब डाली दाखलता से अलग हो जाती है तो डाली के साथ क्या होता है?' तब वह सूखने लगती है क्योंकि वह अब दाखलता पर निर्भर नहीं है और अब वह दाखलता से जीवन नहीं प्राप्त कर रही है। यदि आप एक आत्मिक डाली के रूप में, मसीह से स्वतंत्र होकर जीने का प्रयास करने का निर्णय लेते हैं, तो आप क्या उम्मीद कर सकते हैं?

यीशु का क्या तात्पर्य है जब वह यह कहता है कि 'क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते?' यूहन्ना 15:5 का यह भाग कई मसीहियों के लिए समस्या पैदा करता है। क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य परमेश्वर से अलग होकर कई चीजों को करने में सक्षम है। जैसा कि हमने पहले अध्याय में भी चर्चा की थी, कि नौकरी कैसे करनी है, शौक या खेल, या अपने वित्त का प्रबंधन करने के विषय में मनुष्य जानता है। तो यीशु का क्या अर्थ है?

यीशु का तात्पर्य है कि उससे अलग होकर आप वह 'जीवन' उत्पन्न नहीं कर सकते जिसका वायदा परमेश्वर आपसे करता है।

परमेश्वर पर <u>निर्भर</u> न होने के कारण, यह होगाः

- पाप पर कोई **सामर्थ नहीं**।
- आपकी देह पर कोई **जीत नहीं**।
- आपके पाप को पराजित करने के तरीको में कोई **स्वतंत्रता नहीं**।
- आपके अतीत या वर्तमान के घावों की कोई **चंगाई नहीं**।
- आपके जीवन में उत्पन्न आत्मा का कोई **फल नहीं**।
- आपके जीवन में कोई **परिवर्तन नहीं**।
- परमेश्वर के साथ कोई **घनिष्टता नहीं**।

आप इस सूची को धीरे-धीरे पढ़ना चाहेंगे और अगर आप स्वतंत्र रूप से परमेश्वर पर निर्भर होकर जीना चुनते हैं तो परिणाम समझ आने लगेंगे।

<u>मनन करेंः</u> यूहन्ना 15:5ब पर और इस विषय में सोचें कि यह आयत अनसुलझे संघर्षो पर कैसे लागू हो सकती है, जिनका सामना आप अपने संबंधों में कर रहे हैं, पाप के तरीकों के लिए जिन पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं, या अपने जीवन में बदलाव देखना चाहते हैं।

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> परमेश्वर से अपने जीवन के ऐसे क्षेत्रों (नौकरी, विवाह, परिवार इत्यादि) को प्रकट करने के लिए कहें जहाँ आप उससे स्वतंत्र होकर रह रहे हैं। आप उसे आपको यह समझाने के लिए कहें कि यदि आप उसके जीवन और सामर्थ पर निर्भर नहीं होंगे तो आप उसकी स्वतंत्रता, विजय, चंगाई और परिवर्तन का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

मुख्य बिन्दु

समस्या यह है कि आपकी अपनी सामर्थ, ताकत, क्षमता और इच्छाशक्ति से रहना मसीही जीवन का उत्पादन नहीं कर सकता है जो केवल परमेश्वर ही उत्पन्न कर सकता है।

-------------------000 -------------------

<u>तीसरा दिन</u>

<u>परमेश्वर पर निर्भरता = परमेश्वर पर विश्वास।</u>

*'**<u>विश्वास</u>** के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है।' इब्रानियों 11:6*

मैं परमेश्वर **<u>पर</u>** विश्वास से चलने को परमेश्वर पर निर्भर होने के साथ जोड़ता हूँ। यदि आप किसी भी समय के लिए मसीही रहे हैं, तो आप जानते हैं कि हमारे मसीही जीवन में हमारा भाग विश्वास है। हालांकि, मुझे पता चल रहा है कि लोगों के पास विश्वास के मुद्दे के विषय में कुछ गलतफहमी या झूठी मान्यताएं हैं।

मैं इसका कारण यह बताता हूँ कि विश्वास के विषय में वे जो विश्वास करते हैं उसका परिणाम स्वतंत्रता, विजय, चंगाई या परिवर्तन में नहीं होता है। इसलिए, जब आप इस अध्याय से होकर जाते हैं, तो विश्वास के विषय में आप जो विश्वास करते हैं उस पर नजर डालें और परमेश्वर से कहें कि वह आपके विश्वास के विषय में हर झूठी धारणा को प्रकट कर दे। यहाँ पहला प्रश्न यह है जो आप स्वयं से पूछ सकते हैंः

'क्या मैं विश्वास से चलने के विषय में जो विश्वास करता हूँ वह मेरे जीवन को बदल रहा है?'

मैं क्यों कहता हूँ कि निर्भरता = विश्वास है? मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। जब आपको दाँतों की समस्या होती है, तो यह दंत-चिकित्सक की आवश्यकता को उत्पन्न करता है। आप अपनी समस्या से निपटने के लिए उस दंत चिकित्सक पर पूरी तरह से निर्भर होते हैं। या यह कहने का एक और तरीका है कि आप निर्भर हैं क्योंकि आपको अपने दंत चिकित्सक की क्षमता पर विश्वास

है जो आप अपने लिए स्वयं नहीं कर सकते हैं। यही परमेश्वर के साथ भी है। विश्वास साधरणतः यह है कि आप अपने जीवन को पूर्ण करने के लिए परमेश्वर पर निर्भर है जो वह पूर्ण करने का वायदा करता है (और आप नहीं कर सकते)।

मसीह के जीवन में रहने के लिए पौलुस के हिस्से को देखने के लिए गलातियों 2:20 पर एक और नजर डालें:

"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर ***मसीह मुझ में जीवित*** *है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल* ***उस विश्वास से*** *जीवित हूँ, जो* ***परमेश्वर के पुत्र*** *पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।" – गलातियों 2:20*

पौलुस कहता है कि मसीह को आपके अंदर रहने की अनुमति देने का उसका भाग विश्वास से है। संक्षेप में, पौलुस कह रहा है कि उसे केवल मसीह पर ही निर्भर होना चाहिए जो केवल मसीह ही कर सकता है। आप देखते हैं, कई मसीहियों ने मुझसे पूछा है, "**मैं** मसीही जीवन कैसे जी सकता हूँ?" यह गलत प्रश्न है। सच्चाई यह है कि क्योंकि मसीह वह व्यक्ति है जो आपके जीवन में जीने वाला है, तो प्रश्न यह होना चाहिए,

---

'मैं मसीह को अपने जीवन में जीने की अनुमति कैसे दूँ?'

जवाब है कि मसीह पर निर्भर होने के द्वारा या मसीह पर विश्वास करने के द्वारा। हम इस अध्याय के अंत में देखने जा रहे हैं कि विश्वास के विषय में उनकी झूठी मान्यताओं के कारण इतने सारे मसीही क्यों परिवर्तित नहीं हो रहे हैं।

विश्वास से चलने का परिणाम यह होता है कि मसीह आपके जीवन में अपना जीवन जीता है ताकि बहुतायत का जीवन उत्पन्न कर सके जिसे वह आपके लिए करने का वायदा करता है।
विश्वास मसीहियों के लिए 'कैसे करें' है।

विश्वास से जीने से पवित्र आत्मा आपके भीतर इन बातों को उत्पन्न कर सकता है:

- **पाप के तरीको को हराने की स्वतंत्रता।**
- **देह, पाप की शक्ति, शैतान, और दुष्ट शक्तियों पर विजय।**
- **अतीत या वर्तमान के घावों की चंगाई।**
- **मसीह की समानता में परिवर्तन।**
- **परमेश्वर के साथ घनिष्टता।**

विश्वास को परिभाषित करने के चार तरीके

विश्वास की गहरी समझ हासिल करने के लिए, मैं आपको चार व्यावहारिक परिभाषाएँ देना चाहता हूँ जिसने बीते वर्षो में मुझे मदद की हैं। मुझे आशा है कि वे आपके लिए भी वैसे ही करेंगे।

1. विश्वास एक आश्वासन और एक दृढ़ विश्वास है।

अब **विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है**। इब्रानियों 11:1

स्ट्रांन्ग लेक्सिकन में इब्रानियों 11:1 में 'आश्वासन' शब्द के कुछ अर्थ – मन की दृढ़ता, संकल्प, आत्मविश्वास और दृढ़-विश्वास हैं। 'दृढ़ विश्वास' निश्चितता का प्रतीक है। इन सभी शब्दों को एक साथ जोड़ने से, विश्वास की एक परिभाषा निम्नानुसार है:

"विश्वास
एक आश्वासन, आत्म विश्वास, और निश्चितता है कि परमेश्वर वह है जो कहता है कि वह जो वायदे करता है उसे पूरा करता है और करेगा।"

<u>अमलीकरणः</u> इस परिभाषा का एक अमलीकरण हो सकता है, 'मुझे विश्वास है कि मैं अपना उद्धार नहीं खो सकता क्योंकि परमेश्वर वह है जो यह कहता है कि उसने जो वायदे मुझसे किए हैं, यूहन्ना 6:37-40 के अनुसार कि मैं अपना उद्धार नहीं खो सकता।'

<u>प्रश्नः</u> परमेश्वर में आपके पास कितना आश्वासन और विश्वास है कि वह कौन है और वह क्या चाहता है और आपके जीवन को पूर्ण करने में सक्षम है? क्या परमेश्वर पर निर्भरता की कमी आपके आश्वासन और आत्मविश्वास की कमी का संकेतक होगी?

<u>मनन करें:</u> इब्रानियों 11:1 पर और उन परिस्थितियों के विषय में सोचें जहाँ आप पूरी तरह से आश्वस्त नहीं है और जहाँ आत्म विश्वास की कमी हो सकती है कि परमेश्वर उन क्षेत्रों में कार्य कर रहा है या नहीं।

परमेश्वर को शामिल करनाः उस क्षेत्र में, परमेश्वर से आपको अधिक आश्वासन और विश्वास देने के लिए कहें कि वह जो कहता है कि वह है और वह आपके जीवन में वो पूरा करेगा जो वह वादा करता है।

2. <u>विश्वास एक सहमति और एक उम्मीद है।</u>

<u>विश्वास</u>
(जैसा कि मैथ्यू हेनरी की कमेंटरी में परिभाषित किया गया है)
'एक दृढ़ संकल्प और उम्मीद है कि परमेश्वर उन सभी बातों को पूरा करेगा
जो उसने मसीह में हमारे साथ वायदा किया है।'

मुझे यह परिभाषा सुदृढ़ता और उम्मीद शब्दों के कारण पसंद है। हम परमेश्वर के पास पहले स्थान में क्यों आते हैं? हम परमेश्वर के पास इसलिए आते हैं क्योंकि हम कुछ स्तर पर विश्वास करते हैं कि परमेश्वर वह है जो वह कहता है कि जो वायदे उसने हमारे साथ किए हैं उन्हें वह पूरा करता है और करेगा। दूसरे शब्दों में, हम कुछ हद तक परमेश्वर की हमारे अंदर उसके वायदों को निर्मित करने की क्षमता के प्रति सहमत होते हैं।

हालांकि, हमारे बाकी के जीवन में हमारे अविश्वास के कारण हमें आगे समझाने के लिए परमेश्वर की आवश्यकता होगी। 'दैवीय सहमति' हमारे परिवर्तन का एक आवश्यक भाग है। पौलुस ने अब्राहम के विषय में बात की कि वह रोमियों 4:21 में जो कुछ भी वायदा करता है, उसे करने की क्षमता और सामर्थ के प्रति राजी हो रहा हैः

*'पूरी तरह से राजी **<u>किया जा रहा</u>** है कि **<u>परमेश्वर ने जो वायदा किया</u>** था वह **<u>उसे करने की सामर्थ रखता</u>** है।'*

<u>अमलीकरणः</u> इस परिभाषा का एक अमलीकरण हो सकता है, 'जब मैं परमेश्वर पर निर्भर होकर चलता हूँ, तो मुझे परमेश्वर द्वारा यह समझाया जा रहा है कि वह मुझसे प्रेम करता है और वह मेरे जीवन को बदल देगा।'

<u>प्रश्नः</u> आप कैसे परमेश्वर की क्षमता और अपने जीवन को बदलने की इच्छा से सहमत हैं? क्या आपको आगे और ईश्वरीय दृढ़ता की आवश्यकता है?

<u>मनन करें:</u> रोमियों 4:21 और फिलिप्पियों 1:20 पर। इस प्रश्न के विषय में सोचें, 'आपके जीवन में कौन से ऐसे क्षेत्र हैं जिसके लिए आपको परमेश्वर के प्रेम, चरित्र और/या वायदों के विषय में और अधिक दृढ़ता की आवश्यकता है?'

परमेश्वर को शामिल करनाः जिन क्षेत्रों के विषय में आपने सोचा था उन में आगे बढ़ने के लिए परमेश्वर से पूछना शुरू करें।

3. <u>विश्वास यह भरोसा करना है कि 'मैं नहीं कर सकता,' लेकिन 'परमेश्वर कर सकता है।'</u>

<u>मैं नहीं कर सकता</u> – *'...क्योंकि मुझ से **अलग** होकर तुम **कुछ भी नहीं** कर सकते' यूहन्ना 15:5ब*

<u>परमेश्वर कर सकता है</u> – *'और मुझे इस बात का भरोसा है, कि **जिस ने** तुम में **अच्छा कार्य <u>आरम्भ</u>** किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक **<u>पूरा करेगा</u>**।' फिलिप्पियों 1: 6*

हमें सबसे पहले 'मैं नहीं कर सकता' के स्थान पर आना चाहिए क्योंकि सच्चाई यह है कि <u>केवल 'परमेश्वर</u>' हमारे जीवन में परिवर्तन के अपने वायदे को उत्पन्न कर सकता है। एक और मार्ग जो सच्चाई को इंगित करता है कि परमेश्वर कर सकता है। भजन 37:5:

*'अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़ और उस पर भरोसा रख, वही पूरा **करेगा**।'*

<u>विश्वास</u>

यह समझता है कि अपने जीवन में जो आप नहीं कर सकते वह केवल परमेश्वर आपके जीवन में कर सकता है और फिर विश्वास करें कि वह कर सकता है।

परमेश्वर हमें अपने वचन में बार-बार बताता है कि वह कर सकता है, और जो कार्य उसने आरम्भ किया है उसे पूरा भी करेगा।

<u>अमलीकरणः</u> इस परिभाषा का एक अमलीकरण यह हो सकता है, 'मैं अपने डर से स्वयं को मुक्त नहीं कर सकता, लेकिन जब मैं विश्वास से चलता हूँ, परमेश्वर मुझे मुक्त कर सकता है (और करेगा)।'

<u>प्रश्नः</u> ऐसी कौन सी तीन चीजें हैं जिन्हें आप जानते हैं कि आप नहीं कर सकते हैं, लेकिन परमेश्वर ने करने का वायदा किया है?

....

....

<u>मनन करेंः</u> यूहन्ना 15:5ख और फिलिप्पियों 1:6 पर और इस विषय में सोचें कि आप मसीही जीवन जीने के संबंध में ऐसा क्या करने की कोशिश कर रहे हैं जो आप नहीं कर सकते

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> जो आप नहीं कर सकते उसके लिए परमेश्वर पर भरोसा करना शुरू करें कि वह ऐसा करें।

4. <u>विश्वास परमेश्वर के साथ सहयोग है।</u>

*''मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि **मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं।**'' - यूहन्ना 5:30*

विश्वास का अर्थ है कि आपने परमेश्वर के साथ <u>सहयोग</u> करने का निर्णय लिया है। इसका अर्थ है कि अब आप परमेश्वर के कार्य में <u>विरोध</u> नहीं करेंगे या आप वह करने की कोशिश नहीं करेंगे जो केवल परमेश्वर कर सकता है। सहयोग विश्वास की प्रवृति है जो कहती है, 'हे प्रभु, मैं आप पर भरोसा कर रहा हूँ कि आप मेरे जीवन में जी सके और अपनी इच्छा के अनुसार मेरा जीवन बदल सके।'

<u>विश्वास</u>

परमेश्वर के साथ उसकी इच्छा के अनुसार आपके जीवन को बदलने का आपका एक इच्छापूर्ण सहयोग है।

<u>अमलीकरणः</u> मान लीजिए कि आप अपर्याप्तता के साथ संघर्ष करते हैं। परमेश्वर के साथ सहयोग इस तरह दिख सकता है, 'हे प्रभु, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे सहयोग करने और मुझे अपर्याप्तता से मुक्त करने में आपके कार्य का विरोध न करने की इच्छा दें।'

<u>प्रश्नः</u> आपके जीवन के कौन से ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें आप परमेश्वर के साथ सहयोग नहीं कर रहे हैं या आपके अन्दर उसके कार्य का विरोध कर रहे हैं?

....

....

<u>मनन करेंः</u> ऊपर यूहन्ना 5:30 पर और स्वयं से पूछें, 'मैं अपने जीवन के इन क्षेत्रों में परमेश्वर के कार्य का विरोध क्यों कर रहा हूँ जब वह मुझे मुक्त करने, मुझे विजय देने, और मेरी जरूरतों को पूरा करने का वायदा करता है?'

परमेश्वर को शामिल करना: परमेश्वर से कहना शुरू करें कि वह आपको आपके जीवन में उसके परिवर्तनकारी कार्य के प्रति प्रतिरोध छोड़ने की इच्छा दें।

अगला चित्र विश्वास की चार परिभाषाओं का सारांश देता है।

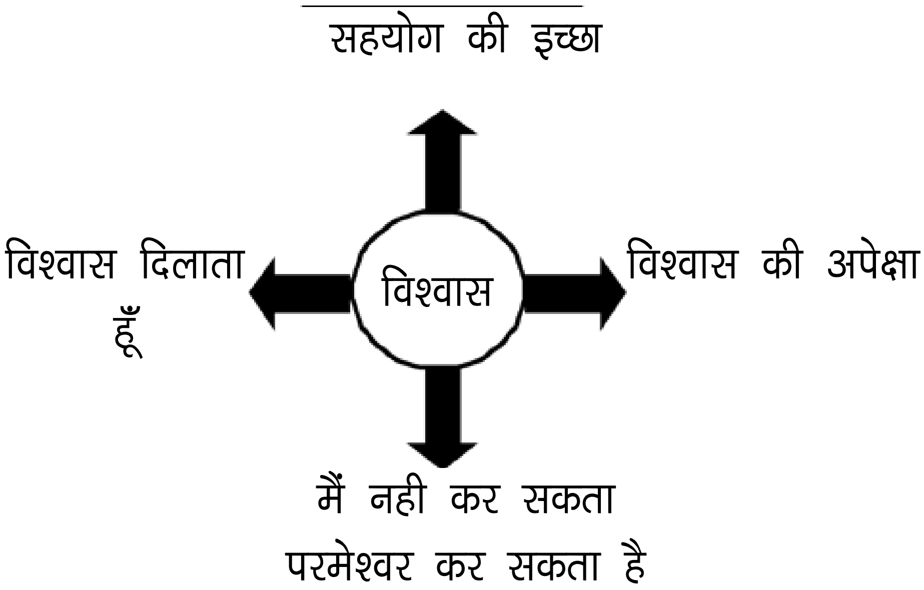

प्रश्न: विश्वास की परिभाषाओं में से कौन सी एक आपके लिए सबसे व्यावहारिक है? क्यों?

....

....

मनन करें: विश्वास की चार परिभाषाओं पर और परमेश्वर से आपको गहन प्रकाशन और विश्वास से चलने की इच्छा देने के लिए कहें।

--------------------000 --------------------

चौथा दिन

विश्वास के विषय में तीन महत्वपूर्ण सत्य

विश्वास पर हमारा अध्ययन पूरा करने से पहले, आइये विश्वास के विषय में तीन और महत्वपूर्ण सत्य देखें।

1. यह आपके ऊपर है कि आप विश्वास उत्पन्न करें?

यह उत्तर देने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि बहुत से मसीही लोग मानते हैं कि मसीही जीवन जीने के लिए आवश्यक विश्वास उत्पन्न करना उन पर निर्भर करता है। आइये यूहन्ना 19:30 में क्रूस पर यीशु के आखिरी तीन शब्दों को देखकर इस प्रश्न का जवाब देखना शुरू करें:

'यह पूरा हुआ।'

क्रूस पर हमारे प्रभु के इन अंतिम तीन शब्दों में मसीहियों के रूप में आपके और मेरे लिए अनन्त महत्व है। अर्थ यह है कि मसीह ने एक बार में ही हम सभी के पापों का सामना किया है। हालांकि, एक और अर्थ है जो हमारे मसीही चाल से संबंधित है। मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ: 'आप एक पूर्ण कार्य में क्या जोड़ते हैं?' कुछ भी नहीं!

दूसरे शब्दों में, परमेश्वर आपको अपने पूरे किए हुए कार्य में कुछ भी जोड़ने के लिए नहीं कह रहा है। परमेश्वर को आपसे कुछ भी हासिल करने की आवश्यकता नहीं है। आपका भाग जैसा कुलुस्सियों 2:6 में बताया गया है सिर्फ प्राप्त करना हैः

*'सो जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु **करके ग्रहण** कर लिया है, **वैसे ही उसी में** चलते रहो।'*

यह विश्वास पर कैसे लागू होता है? कुलुस्सियों 2:9,10 को देखें जो हमने अध्याय एक में अध्ययन किया थाः

'क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदा वास करती है। और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।'

कुलुस्सियों 2:9,10 के आधार पर निम्नलिखित एक महत्वपूर्ण सत्य हैः

अगर आपको मसीह में पूर्णता दी गई है, तो इसका अर्थ है कि आपके पास मसीह के विश्वास की पूर्णता है।

फिलिप्पियों 4:19 के साथ इस पद को जोड़ेः

*'और मेरा **परमेश्वर** भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित **मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा**।'*

क्योंकि परमेश्वर आपके विश्वास की पूर्ति का स्रोत है, तो विश्वास करने या निर्माण करने के लिए वह आप पर निर्भर नहीं है। क्योंकि मसीह आप में है, और आप मसीह में हैं, तो आप में उतना विश्वास है जिसकी आपको कभी आवश्यकता होगी। कुलुस्सियों 2:6 के अनुसार आपका भाग उस विश्वास को प्राप्त करना है जो पहले से ही आपका है।

अच्छी खबर!
परमेश्वर आपसे विश्वास उत्पन्न करने की उम्मीद नहीं करता है।
वह उम्मीद करता है कि आप उसकी विश्वास की आपूर्ति को प्राप्त करें।

प्रश्नः क्या आप मानते हैं कि मसीही जीवन जीने के लिए जो आवश्यक विश्वास चाहिए उसे उत्पन्न करना आप पर निर्भर करता है? आपके लिए वह विश्वास प्राप्त करना जो आप ही का है उत्पन्न करना आसान होगा या अपेक्षित विश्वास को उत्पन्न करने की कोशिश करना?

2. 'अल्प' विश्वास से यीशु का क्या अर्थ है?

*'उस ने उन से कहा, **हे अल्पविश्वासियों, क्यों डरते हो**? तब उस ने उठकर आन्धी और पानी को डांटा, और सब शान्त हो गया।' मत्ती 8:26*

इस पद में 'अल्प' विश्वास से यीशु का क्या अर्थ था कि शिष्य पूरी क्षमता से अपने विश्वास का **उपयोग** नहीं कर रहे थे। क्यों? इस बिंदु पर, शिष्यों के पास मसीह का सारा विश्वास नहीं था क्योंकि उन्हें पिन्तेकुस के दिन से पहले उनके भीतर परमेश्वर की पूर्णता प्राप्त नहीं हुई थी।

दूसरी तरफ, आप के भीतर मसीह के जीवन की पूर्णता है, जिसके परिणामस्वरूप आप के अन्दर उसका पूरा विश्वास शामिल हैं। प्रश्न यह है, 'क्या आप अपने भीतर विश्वास की पूर्णता का अधिक से अधिक अभ्यास करेंगे, या आप शिष्य की तरह बनेंगे और 'अल्प विश्वास' के साथ जीएंगे?'

प्रश्न यह नहीं है कि 'आपके पास कितना विश्वास है?' प्रश्न यह हैः
''क्या आप उस विश्वास की पूर्णता का अभ्यास कर रहे हैं जो आपके पास पहले से ही मसीह में है?'

<u>प्रश्नः</u> विश्वास के बारे में यह जानकर आपके दृष्टिकोण को कैसे बदल सकते है कि आपमें उस विश्वास की भरपूरी है जो आपको मसीह में चाहिए?

....

....

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> परमेश्वर को एक गहरी समझ के लिए खोजें कि आपके पास वह विश्वास है जो आपको चाहिए और यह कि आपका हिस्सा उस विश्वास की पूर्णता का अभ्यास करना है जो आपके पास पहले से है।

<u>3. आपके जीवन में परमेश्वर का काम आपके विश्वास पर आकस्मिक होना जरूरी नहीं है।</u>

''हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में हैं; ***उसने <u>जो</u> चाहा वही किया है।****'' भजन 115:3*

आपके जीवन में परमेश्वर का काम जरूरी नहीं कि आपके अपने विश्वास का प्रयोग के अनुरूप हो। परमेश्वर संप्रभु है, और वह आपके जीवन में जो कुछ भी चाहता है वह कर सकता है चाहे आप विश्वास से चल रहे हों या नहीं। यहाँ तक कि जब हम विश्वास से नहीं चलते हैं, तौभी यह परमेश्वर को हमारे जीवन में काम करने से नहीं रोकता है। (मैं इसे 'अनुग्रह' कहता हूँ।) लेकिन, मैं आपको व्यक्तिगत अनुभव से बता सकता हूँ कि जब मैं पिछले कुछ साल अधिक बोध के साथ विश्वास से चला बनाम अपने मसीही जीवन के पहले तीस साल, तो मैंने पाया कि परमेश्वर ने उसके परिवर्तन को मेरे जीवन में तेजी दी है। याद रखने के लिए एक महत्वपूर्ण सत्य हैः

जब आप विश्वास से चलते हैं तो आपके जीवन में परमेश्वर की रूपांतरण की प्रक्रिया गति पकड़ती जाती है।

<u>विश्वास में हमेशा एक उद्देश्य होना चाहिए।</u>

विश्वास में कई वस्तुएँ हो सकती हैं। जब आप अपनी कार ड्राइव करते हो, तो आपको अपने ब्रेक पर विश्वास होता है, या आपको उस इमारत पर विश्वास होता है जिस पर आप हर दिन काम करते हैं, या उस कुर्सी पर विश्वास होता है जिसपर आप बैठते हो। तो यह विश्वास नहीं है जो कुंजी है।

कुंजी आपके विश्वास का उद्देश्य है। मसीहियों के रूप में हमारे विश्वास का उद्देश्य यीशु होना चाहिए। हम इसे निम्नलिखित आयतों में देखते हैंः

''और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले ***<u>यीशु</u> की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये <u>जो</u> उसके आगे धरा था,*** *लज्ज़ा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।'' – इब्रानियों 12:2*

''और उसी के नाम ने, उस ***विश्वास के द्वारा जो <u>उसके नाम पर</u> है,*** *।'' – प्रेरितों 3:16*

<u>समस्या यह है कि हमारे विश्वास का एक और उद्देश्य है।</u>

मुझे पता है कि यदि आप कुछ समय से मसीही जीवन जी रहे हैं, तो आप जानते हैं कि हमारे विश्वास का उद्देश्य यीशु मसीह होना चाहिए। कई मसीही लोगों (जो 10, 20, 30 साल से मसीही हैं) की सेवा करने के परिणाम के रूप में, मैंने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया और देखा है कि उनके विश्वास का अन्य एक वस्तु भी होता है। वह वस्तु उनकी स्वयं की बुद्धि, क्षमता और इच्छाशक्ति

होती है। इस कथन के बारे में सोचेंः

अगर आपको लगता है कि मसीही जीवन जीना यह परमेश्वर की मदद से आप पर निर्भर करता है तो क्या यह संभव है कि आपके विश्वास की असली वस्तु आपकी बुद्धि, क्षमता और इच्छा शक्ति है?

मुझे आपको एक उदाहरण देने दें। यदि आप मानते हैं कि मसीही जीवन जीने के लिए परमेश्वर की सहायता से यह आप पर निर्भर हैं, तो आप विजय, स्वतंत्रता और रूपांतरण के परमेश्वर के वादे ले लेंगे और अपने जीवन में उन वादों को एक अनुभवी वास्तविकता बनाने के लिए अपनी क्षमता और इच्छाशक्ति में कोशिश करेंगे।

संक्षेप में, आपने जो किया है वह अपने आप में विश्वास रखना है, और आपने परमेश्वर से उन वायदों को अपने जीवन में वास्तविक बनाने के स्रोत बनने में आपकी मदद करने के लिए कहा है।

हालांकि, हम जो जानते हैं क्या सच है? हम पाठ एक से इस बात को जानते हैं कि 1 कुरिन्थियों 1:30 हमें बताता है कि परमेश्वर हमारे जीवन में रहने का स्रोत है और वह हमें स्वयं अपना स्रोत बनने में मदद नहीं करेगा। इस बिंदु पर, मैं आपसे यह प्रश्न पूछकर इसे व्यक्तिगत बनाना चाहता हूँः

यदि आप अपनी शक्ति और इच्छाशक्ति में सच्चे मसीही जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं क्या आप किसी वास्तविक रूपांतरण का अनुभव कर रहे हैं?

आज इतने सारे मसीहियों को सिखाए गया हैं जैसा कि मैं भी था, कि हमें अपने जीवन में परमेश्वर की सच्चाई को 'लागू' करनी होगी। हालांकि यह बहुत आत्मिक लगता है, मैं इसकी व्याख्या इस तरह कर सकता हूँ कि मुझे परमेश्वर की सच्चाई लेनी चाहिए और अपने स्वयं के बुद्धि, क्षमता, आत्म-अनुशासन और इच्छाशक्ति का उपयोग करके इसे अपने जीवन में काम करने की कोशिश करनी चाहिए। इसके साथ समस्या यह है कि अगर इसे कार्य में लाना मेरे ऊपर निर्भर है, और मैं असफल हो जाऊंगा क्योंकि मैं इसे काम में लाने में समर्थ नहीं हो पाऊँगा!

सच्चाई यह है कि हम पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर हैं कि वह अपनी सच्चाई लें और इसे हमारे जीवन में काम करने दें।

निम्नलिखित प्रश्न आपको यह निर्धारित करने में मदद कर सकते हैं कि आपका विश्वास की चाल कैसी है।

क्या आपके विश्वास का चलन निर्मित कर रहा हैः

- आपको हराने वाले पापमय प्रारूप और शैतान पर निरंतर जीत?
- अपने पापपूर्ण व्यवहार से निरंतर आजादी?
- आपके अतीत या वर्तमान की घायलता से निरंतर चंगाई?
- मसीह की समानता में निरंतर रूपांतरण?

यदि आप पिछले प्रश्नों में से प्रत्येक को 'हाँ' में उत्तर नहीं दे सकते हैं, तो यह संभव है कि आप अपनी क्षमता में विश्वास बनाम परमेश्वर की क्षमता में विश्वास रख रहे हों? मैं आपको यह किसी अपराधबोध या शर्मिंदा करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। इन प्रश्नों के पूछने का कारण यह है कि जब हम मसीह में विश्वास से चलते हैं, तो हम निरंतर जीत, स्वतंत्रता, चंगाई और रूपांतरण को उत्पन्न करेंगे और अनुभव करेंगे। परमेश्वर में विश्वास रखने बनाम अपनी क्षमता में विश्वास रखने के नतीजे को देखने के लिए निम्नलिखित आरेख देखें।

अपने आप पर विश्वास। अपने स्त्रोत के रूप में/ परमेश्वर की मदद जीवनरहित, सामर्थरहित, अपरिवर्तित जीवन (लगभग एक समान ही)

अपने स्त्रोत के रूप में परमेश्वर पर विश्वास – जीवन, सामर्थ, रूपांतरण

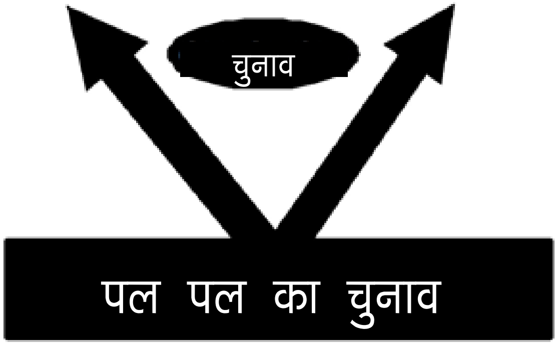

आप कौन सा चुनाव करेंगे?

अपने आप पर विश्वास रखने का नतीजा यह होगा कि आप मसीह के जीवन या उसकी सामर्थ का अनुभव नहीं करेंगे और वास्तविक परिवर्तन आपके जीवन में कभी नहीं होगा। हालांकि, परमेश्वर में स्रोत के रूप में विश्वास से जीने से मसीह के जीवन और सामर्थ का अनुभव होगा जिसके परिणामस्वरूप आप कट्टरपंथी परिवर्तन का अनुभव करेंगे।

परमेश्वर को शामिल करनाः पवित्र आत्मा से आपको यह बताने के लिए कहें कि आपके विश्वास का वास्तविक उद्देश्य आपकी क्षमता और/या आपकी इच्छाशक्ति या परमेश्वर की क्षमता में है या नहीं।

प्रश्नः ऊपर दिए गए चित्र से क्या पता चलता है कि यदि आप स्वयं अपने विश्वास की वस्तु हैं तो इसके क्या परिणाम होंगे?

....

....

परमेश्वर को शामिल करनाः यदि आप पाते हैं कि आप वास्तव में परमेश्वर की क्षमता के बजाय अपनी क्षमता में विश्वास से चल रहे हैं, तो उसे अपने स्रोत के रूप में निर्भर रूप से चलने की इच्छा देने के लिए कहें।

-------------------000 -------------------

पाँचवा दिन

हम परमेश्वर में विश्वास रखने के कारण क्यों संघर्ष कर रहे हैं?

*'उन्होंने उस से कहा, **परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?'** यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, **जिसे उस ने भेजा है, विश्वास करो**।' यूहन्ना 6:28-29*

आगे बढ़ने से पहले हम, मेरा मानना है कि पिछले तीन सालों में मैंने जो खोजा है वह जानना महत्वपूर्ण है कि हम मसीहियों के रूप में परमेश्वर पर विश्वास रखने में क्यों संघर्ष करते हैं।

1. हम मसीही जीवन में 'सीखना और करना' की मानसिकता को लाते हैं।

मेरा मानना है कि यह # 1 कारण है कि हम विश्वास के मुद्दे पर क्यों संघर्ष करते हैं। क्यों? क्योंकि हमारी अपनी क्षमताओं के कारण विश्वास पर चलना बहुत आसान है क्योंकि इस तरह हम जीवन जीते हैं। अपने जीवन के विषय में सोचें। अब तक आप कैसे जीवन जी रहे थे? हम में से अधिकांश के लिए, हम जीवन के विषय में सीखते हैं, और फिर हमने जो कुछ सीखा है उसके

विषय में उसे पूरा करते पर जाते हैं।

उदाहरण के लिए, आप सीखते हैं कि अपना कार्य कैसे करें, और फिर आप इसे करते हैं। आप सीखते हैं कि गोल्फ, मछली या शिकार कैसे खेलें, और आप जाते हैं और उन्हें करते हैं। आप सीखते हैं कि अपने बच्चों को कैसे बढ़ा किया जाए और उसका इस्तेमाल करें जो आपने उन्हें सिखाने के लिए सीखा है। मुख्य यह है कि आप अपनी स्वयं की बुद्धि और 'सीखने' की क्षमता और फिर 'करने' की क्षमता का उपयोग कर रहे हैं। यही वह तरीका है जिससे हम सभी अपना जीवन जीते हैं। प्रश्न यह है, 'क्या यह 'सीखना और करने' की मानसिकता मसीही जीवन जीने में काम आती है?' इस प्रश्न के विषय में सोचेंः

क्या आप ऐसा विश्वास करते हैं कि आपको मसीही जीवन जीने के विषय में परमेश्वर की सच्चाई को सीखने की जरुरत हैं और फिर अपनी क्षमता में (परमेश्वर की सहायता से) बाहर जाए और उसे करें जो परमेश्वर कहता है?

महत्वपूर्ण सत्यः 'सीखना और करना' मानसिकता मसीही जीवन जीने में कार्य नहीं करती है। क्यों? क्योंकि हम वह नहीं कर सकते जो केवल पवित्र आत्मा ही कर सकता है और हमारे जीवन में करने का वायदा करता है। फिलिप्पियों 1:6 याद रखें? जैसा कि हमने पहले अध्याय में भी सीखा है, यह परमेश्वर की सामर्थ है और केवल वह ही आत्मिक परिवर्तन उत्पन्न करेगा। जैसा कि मैंने अपनी कहानी आपके साथ बाँटी थी, मैंने मसीही जीवन में 'सीखना और करना' जीने की कोशिश की और मैं बुरी तरह से विफल रहा। समस्या यह थी कि उसने जीवन परिवर्तन को कभी भी नहीं उत्पन्न किया जिसका वायदा परमेश्वर ने किया था। केवल परमेश्वर पर निर्भरता के माध्यम से वास्तविक परिवर्तन हुआ।

2. हम अपने आत्मिक रुपांतरण के कारण और प्रभाव का भाग बनना चाहते हैं।

विश्वास के विषय में हमारे पास एक और समस्या यह है कि हम अपनी बुद्धि, क्षमताओं और प्रतिभा को आत्मिक परिवर्तन के कारण और / या प्रभाव के रूप में नहीं ला सकते हैं। यह एक समस्या है क्योंकि हम हमेशा अपनी नौकरियों में, हमारे विवाह में और हमारे परिवारों को बढ़ाने में हमारी बुद्धि, क्षमताओं और प्रतिभा का उपयोग करते हैं। अपने आप को बदलने की कोशिश करना या परमेश्वर को अपने प्रयासों से मदद करना स्वाभाविक है, लेकिन हम वह उत्पन्न नहीं कर सकते जो केवल परमेश्वर कर सकते हैं।

सच्चाईः विश्वास के मार्ग में हम परमेश्वर पर निर्भर करते हैं कि वह हमारे भीतर अपनी बुद्धि, सामर्थ और क्षमता लाए जो हम अपने लिए नहीं कर सकते यूहन्ना 15:5ब याद रखें? यह संघर्ष को प्रस्तुत करता है जब हमारी क्षमताओं को दूर करने और परमेश्वर की क्षमता पर ध्यान करने की बात आती है। मुझे उम्मीद है कि आप कुछ हद तक इस प्रक्रिया में हैं कि केवल परमेश्वर को, आपके स्रोत के रूप में, आपके सोचने, महसूस करने, चुनने या व्यवहार करने के तरीके में कोई महत्वपूर्ण बदलाव ला सकते हैं।

नोटः इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी बुद्धि और क्षमताओं का उपयोग नहीं कर रहे हैं। हालांकि, जब आत्मिक परिवर्तन की बात आती है तो ये चीजें आपके लिए कुछ अच्छा नहीं करती।

3. विधिवादिता 'सीखना और करना' वाली मसीहियत का पालन पोषण करती है।

यदि आपने वैधानिक कलीसिया के वातावरण में काफी समय बिताया है जैसा मैंने किया था, तो आप शायद 'सीखना और करना' वाले मसीही जीवन में जी रहे हैं। 'विधिवादिता' से मेरा क्या अर्थ है? विधिवादिता आत्मिक परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए कुछ नियमों को पूरा करने या पालन करने की अपनी क्षमता का उपयोग करके मसीही जीवन जीने की कोशिश कर रहा है। विधिवादिता झूठी धारणा को बढ़ावा देती है कि आप कुछ मानकों या नियमों को एक अच्छा मसीही बनने या परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए नियम रखने का स्रोत बनना चाहते हैं। मेरे लिए परमेश्वर को प्रसन्न करने और स्वयं को बचाने की कोशिश करने के लिए अपनी सामर्थ में प्रयास करने के लिए विधिवादिता ने जीवन उत्पन्न किया। क्या आप इसे समझ सकते हैं?

मूल सत्यः मानकों या नियमों के स्तर तक जीने की कोशिश करने से कोई वास्तविक परिवर्तन कभी नहीं होगा। परमेश्वर के लिए कड़ी मेहनत करने या अधिक करने की कोशिश करने से आप जो परिवर्तन चाहते हैं, वह नहीं आएगा। इसका परिणाम केवल मसीही जीवन जीने को छोड़ना या और अधिक मेहनत करना होगा। सच्ची स्वतंत्रता केवल तभी आती है जब आप परमेश्वर के वायदों का परिवर्तन आप के भीतर उत्पन्न करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ और क्षमता पर विश्वास लाते है।

क्या इसका यह अर्थ है कि मैं एक निष्क्रिय जीवन जीता हूँ और कुछ भी नहीं करता?

*''इसलिये कि तुम्हारा **विश्वास** मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु **परमेश्वर की सामर्थ** पर निर्भर हो।'' 1 कुरिन्थियों 2:5*

मैं अक्सर लोगों से यह टिप्पणी सुनता हूँ जब वे मसीह में विश्वास से चलने के विषय में समझने की कोशिश करते हैं ताकि वे अपना जीवन जी सकें: 'क्या विश्वास से चलने का अर्थ यह है कि मुझे अब कुछ भी नहीं करना चाहिए?' या ऐसी टिप्पणियाँ, 'यह विश्वास का मार्ग बहुत निष्क्रिय लगता है 'या' मेरी जिम्मेदारी क्या है? 'सच्चाई यह है कि विश्वास मार्ग निष्क्रिय ही है।'

महत्वपूर्ण मूल सत्यः यह है कि मसीही जीवन बहुत सक्रिय है,
लेकिन परमेश्वर गतिविधि (आत्मिक परिवर्तन) का स्रोत है।

उपर्युक्त सत्य को समझने के लिए, आइये यीशु के जीवन और सेवकाई को देखें। क्या आप कहेंगे कि यीशु निष्क्रिय था? मुझे नहीं लगता कि हम में से कोई भी विश्वास करेगा। हालांकि, यीशु ने कैसे जीवन जीया, इस विषय में हमने क्या सीखा? वह पिता पर पूरी तरह से निर्भर था। जब वह निर्भरता में चला, क्या हुआ? पिता ने यीशु के द्वारा अपना जीवन और सामर्थ जीवनों को परवर्तित करने के लिए जारी किया। इसलिए, आपके पास जिम्मेदारी है।

आपकी जिम्मेदारी है कि आप अपने जीवन के
हर क्षण को जीने के लिए मसीह पर निर्भर रहे।

जब आप ऐसा करते हैं, परमेश्वर अपने जीवन और सामर्थ को आपके सोचने, महसूस करने, चुनने और व्यवहार करने के तरीके को मूल रूप से बदलने के लिए स्वतंत्र करता है।

मनन करें: इस विचार पर कि आप सक्रिय रूप से परमेश्वर पर निर्भर करते हैं कि वह आपके भीतर होने वाली गतिविधि (आत्मिक परिवर्तन) का स्रोत है।

परमेश्वर को शामिल करना: आपको निष्क्रियता, जिम्मेदारी और गतिविधि के इस मुद्दे पर प्रकाशन देने के लिए परमेश्वर को खोजें।

अध्याय दो के सारांश बिंदु

मुझे आशा है कि इस पाठ ने आपको परमेश्वर के रूपांतरण प्रक्रिया में अपने भाग की बेहतर समझ दी है। मुख्य बिंदु जो मुझे आशा है कि आपको इस अध्ययन से याद होंगे:

- मसीही जीवन जीने में आपका भाग परमेश्वर पर अपने स्रोत के रूप में निर्भर होना है।
- निर्भरता विश्वास के लिए एक और शब्द है।
- विश्वास उत्पन्न करना आप पर निर्भर नहीं करता है। आपका भाग मसीह में अपने विश्वास को प्राप्त करना है।
- आपके विश्वास का उद्देश्य या तो स्रोत के रूप में स्वयं पर या स्रोत परमेश्वर के रूप में होगा।
- हम 'सीखने और करने' की मानसिकता के कारण विश्वास के वास्तविक अर्थ के साथ संघर्ष करते हैं, आप अपनी प्रतिभा और क्षमताओं का उपयोग करने में सक्षम नहीं होते हैं, और किसी भी विधिवादिता को स्वीकार करने से अनुभव कर सकते हैं।
- मसीही जीवन निष्क्रिय नहीं है। परमेश्वर आपके जीवन के हर क्षेत्र को बदलने के लिए अपनी गतिविधि का स्रोत है।
- मसीह में विश्वास से जीने वाले जीवन के परिणामस्वरूप हमारी सोच, विश्वास, व्यवहार और हमारे विकल्पों में बदलाव आते हैं।

'साधारण' जीवन और 'सच्चे' जीवन के बीच अंतर के संबंध में पृष्ठ 28 पर दी चित्र को फिर से देखें

अध्याय 3

विश्वास के मार्ग और मसीह को अपने जीवन के रूप में समझने के विषय में महत्वपूर्ण सत्य

पहला दिन

तीसरे अध्याय का अवलोकन

- **जब आप विश्वास के कदम उठाते हैं तो आप के साथ क्या होता है?**
- **परमेश्वर की सामर्थ से जीने के परिणाम**
- **परमेश्वर के अलौकिक कार्य का अर्थ**
- **भावनाओं और अनुभवों के विरुद्ध विश्वास को समझना**
- **मसीह–आत्मविश्वास का अर्थ**
- **यह समझना कि मसीह हमारे जीवन के रूप में कैसे हमारे दैनिक जीवन पर लागू होता है**

परिचय

मुझे उम्मीद है कि आखिरी अध्याय ने आपको निर्भरता और विश्वास के मुद्दों की स्पष्ट समझ दी है। अब जब हम परमेश्वर की परिवर्तन प्रक्रिया में अपना भाग समझते हैं, तो देखते हैं कि जब हम विश्वास का एक कदम उठाते हैं तो क्या होता है। हमारे अध्याय के अंत में हमने जो सीखा है उसे अमल में लाना शुरू करेंगे ताकि यह देख सके कि प्रतिदिन के जीवन में मसीह को हमारे जीवन के रूप में आकर्षित करना कैसा दिखता है।

विश्वास का सफर विश्वास के एक कदम से शुरू होता है।

*''मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है, परन्तु **यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है।**'' – नीतिवचन 16:9*

कल्पना कीजिए कि आप अपने घर से इंडोनेशिया चले गए हैं। आप एक बहुत ही परिचित संस्कृति से निकलकर एक ऐसी संस्कृति में जा रहे है जो आप की संस्कृति से 180 डिग्री अलग है। अब आपको सीखना होगा कि इस नई संस्कृति में कैसे रहना है। इसी तरह, परमेश्वर आपको अपनी क्षमताओं से जीने की 'स्वयं' की संस्कृति से अपनी अनंत क्षमता से जीने की एक नई 'आत्मिक' संस्कृति में ले जा रहा है। यह भी एक बहुत मुश्किल परिवर्तन है। हालांकि, परमेश्वर वायदा करता है कि जब हम विश्वास के कदम उठाते हैं, तो वह हमें उसके द्वारा किए गए परिवर्तन और बहुतायत के जीवन को वास्तविक बना देगा। इसलिए, मुझे विश्वास के एक कदम को परिभाषित करके शुरू करने दें:

विश्वास का कदम
समय का एक क्षण है जहाँ आप
परमेश्वर और उसके जीवन और सामर्थ को विश्वास से प्राप्त करते हैं।

यदि आप किसी भी समय के लिए एक मसीही रहे हैं, तो आप जानते हैं कि मसीही जीवन विश्वास का जीवन है। हालांकि, दो महत्वपूर्ण बाते हैं जिन्हें मैं विश्वास के जीवन पर जोर देना चाहता हूँ। एक, मैं चाहता हूँ कि हम यह देखें कि जब हम विश्वास का कदम उठाते हैं तो क्या होता है। दूसरी बात यह है कि हम अपने विश्वास के उद्देश्य को देखें।

जब आप विश्वास का कदम उठाते हैं तो उस क्षण क्या होता है?

अध्याय 1 से एक सत्य को याद रखें वह यह कि कुलुस्सियों 2:9,10 के अनुसार आपके भीतर इस क्षण में परमेश्वर का जीवन और सामर्थ की संपूर्णता है:

*'क्योंकि **उस में** ईश्वरत्व की **<u>सारी परिपूर्णता सदेह</u>** वास करती है। और **<u>तुम उसी में भरपूर हो गए हो</u>** जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।'*

क्योंकि आप में परमेश्वर का जीवन और सामर्थ शामिल है, तो जब आप विश्वास का कदम उठाते हैं तो क्या होता है?

जब आप विश्वास का कदम उठाते हैं, तो आपकी सोच, आपकी मान्यताएँ और आपके व्यवहार को बदलने के लिए परमेश्वर का जीवन और सामर्थ जारी किया जाता है।

हम इस अध्याय के अंत में परमेश्वर का जीवन हमारे अंदर जारी किया गया इसके विषय में अधिक बात करेंगे। हालांकि, आइये हम परमेश्वर की सामर्थ पर नजर डालें और जब यह हमारे अंदर जारी किया जाता है तो क्या होता है। देखें कि पौलुस परमेश्वर की सामर्थ के साथ कैसे विश्वास करता हैः

*'इसलिये कि तुम्हारा **<u>विश्वास</u>** मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु **परमेश्वर की <u>सामर्थ</u> पर** निर्भर हो।' 1 कुरिन्थियों 2:5*

*''इसी लिये हम सदा तुम्हारे निमित्त प्रार्थना भी करते हैं, कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा, और **<u>विश्वास</u> के हर एक काम को <u>सामर्थ</u> सहित पूरा करे।**'' 2 थिस्सलुनीकियों 1: 11*

जब आप विश्वास का कदम उठाते हैं, तो परमेश्वर आपको केवल अपना जीवन और सामर्थ का भाग नहीं दे रहा है। वह आपके जीवन के हर क्षेत्र को बदलने के लिए आप में अपनी सामर्थ का पूर्ण बल जारी करता है।

<u>परमेश्वर की सामर्थ किस प्रकार की सामर्थ है?</u>

*''परन्तु **हमारे पास यह <u>धन</u>** मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि **यह असीम सामर्थ** हमारी ओर से नहीं, वरन **<u>परमेश्वर</u> ही की ओर** से ठहरे।'' - 2 कुरिन्थियों 4:7*

आपके और मेरे पास जो खजाना है, वह 'परमेश्वर की सामर्थ की महानता' है। यह किस प्रकार की सामर्थ है? इफिसियों 1:19, 20 को देखेंः

'मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप हमारे लिए जो उस पर विश्वास करते है उसकी सामर्थ की अविश्वसनीय महानता को समझना शुरू कर देंगे। यह वही शक्तिशाली सामर्थ है जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया और उसे स्वर्गीय स्थानों में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर सम्मान के स्थान पर बैठाया।'

इसके विषय में सोचे!
यीशु को मरे हुओं में से जी उठाने वाली सामर्थ ही आप में है!

इसके अलावा, आप में परमेश्वर की वह सामर्थ है जिसनेः

- **आकाश और पृथ्वी को बनाया।**
- **लाल सागर को दो भागों में बाँटा।**
- **ब्रह्मांड को एक साथ थामे हुए है।**

हमारे लिए परमेश्वर की सामर्थ से जीना बिल्कुल जरूरी है क्योंकि इसके बिना हम कभी भी परिवर्तन के लिए परमेश्वर के वायदों का अनुभव नहीं करेंगे। आपने शायद कुछ हद तक पाप के तरीको को दूर करने के लिए अपनी इच्छाशक्ति और ताकत में प्रयास किया है या पाप नहीं करने की कोशिश की है। यदि हाँ, तो यह आपके लिए कैसे कार्य कर रहा है? सच्चाई यह है कि हमें किसी भी वास्तविक महत्वपूर्ण परिवर्तन का अनुभव करने के लिए परमेश्वर की इस विश्वास करने वाली सामर्थ से जीना चाहिए।

आपके भीतर परमेश्वर की सामर्थ द्वारा जीने से आप जिस तरह से सोचते हैं, विश्वास करते हैं, चुनते हैं और व्यवहार करते हैं, वस्तुतः वे तरीके बदल जाएंगे।

<u>प्रश्नः</u> क्या आपने इस बिंदु तक परमेश्वर की सामर्थ की महानता को महसूस किया है जो आपके भीतर रहती है?

मनन करें: 2 कुरिन्थियों 4:7 और इफिसियों 1:19, 20 पर और आप में निवास करने वाली परमेश्वर के सामर्थ के महत्व के विषय में सोचें।

परमेश्वर को शामिल करना: परमेश्वर से आपको उसकी दैवीय शक्ति के विषय में गहराई से समझाने के लिए कहें जो आपके पास है और वह आपको मुक्त करने के लिए उस सामर्थ का उपयोग कैसे करना चाहता है।

जब परमेश्वर की सामर्थ आप पर जारी होती है तो वह क्या करने में सक्षम होती है?

परमेश्वर की सामर्थ हमारे भीतर क्या कर सकती है? पौलुस इफिसियों 3:20 में यह स्पष्ट करता है:

'अब जो ऐसा सामर्थी है, ***कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक कार्य कर सकता है, उस सामर्थ के*** *अनुसार जो हम में कार्य करता है...' इफिसियों 3:20*

एक पल के लिए इस पद पर विचार करें। पौलुस एक बहुत ही साहसिक घोषणा कर रहा है जब वह कहता है कि परमेश्वर अपनी सामर्थ के माध्यम से वह हासिल कर सकता है जो 'हमारे मांगने या सोचने से काफी हद तक परे' है। पौलुस इस सत्य को उजागर कर रहा है क्योंकि उसने इस सामर्थ को अपने अंदर कार्य करते हुए अनुभव किया है कि वह उसे परिवर्तन के उन स्थानों पर ले गई जहाँ उसने कभी सोचा भी नहीं था। अगर परमेश्वर की सामर्थ उसके जीवन में पूरा कर सकता है, तो आपको क्या लगता है कि परमेश्वर की सामर्थ आपके जीवन में कितना पूरा हो सकता है?

आप में परमेश्वर की सामर्थ:

- **उसकी सच्चाई पर विश्वास करने के लिए आपके मन को नया बनाती है। रोमियों 12: 2**
- **आपको आपके पाप के गढ़ों से मुक्त करती है। यूहन्ना 8:32**
- **आपके घावों को चंगा करती है। भजन 147: 3**
- **आपकी देह, पाप, शैतान और संसार पर विजय देती है। 1 कुरिन्थियों 15:57**
- **जिस तरीके से आप सोचते हैं, महसूस करते हैं, चुनते हैं और व्यवहार करते हैं, उसका रूपांतरण करती है। 2 कुरिन्थियों 3:18**
- **आपको परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध के लिए आकर्षित करती है। इफिसियों 1:5**

प्रश्न: पिछली बार कब आपने सोचने, विश्वास करने, चयन, या व्यवहार करने के तरीके को बदलने में परमेश्वर की सामर्थ का अनुभव किया था? इन चार क्षेत्रों में तीन परिवर्तनों को लिखें जिन्हें आप अनुभव करना चाहते हैं।

____

____

____

मनन करें: इफिसियों 3:20 पर और इस विषय में सोचिए कि परमेश्वर को आपके जीवन में क्या बदलाव करना होगा ताकि आप भी पौलुस के साथ कह सकें, 'अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक कार्य कर सकता है।'

परमेश्वर को शामिल करना: उन परिवर्तनों से संबंधित अपने जीवन को बदलने के लिए परमेश्वर से पूछना शुरू करें जिन्हें आप अनुभव करना चाहते हैं।

सेवकाई के वर्षों के दौरान मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अधिकांश मसीही वास्तव में परमेश्वर की सामर्थ के महत्व को नहीं समझते हैं क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सामर्थ का अनुभव करने के लिए पर्याप्त विश्वास नहीं किया है।

''परमेश्वर से कहो, कि तेरे काम क्या ही भयानक हैं! तेरी महासामर्थ्य के कारण तेरे शत्रु तेरी चापलूसी करेंगे।'' भजन 66:3

दूसरा दिन

याद रखें कि आपके भीतर परमेश्वर की सामर्थ कुछ अच्छा नहीं करेगी यदि आप विश्वास से चलने को नहीं चुनते हैं।

मैंने हाल ही में एक लैपटॉप कंप्यूटर खरीदा है। दो साल पहले खरीदे गए की तुलना में, इसमें बहुत अधिक रैम और शक्ति थी। सभी कंप्यूटरों के साथ, मेरे पास इंटरनेट के माध्यम से आवश्यक सभी जानकारी तक पहुँच है। हालाँकि, अगर मैं कंप्यूटर चालू नहीं करता हूँ तो वह सभी शक्ति और पहुँच मेरे लिए किसी लाभ की नहीं। जब तक मैं ऐसा नहीं करता, यह केवल महंगा पत्रभार ही होगा!

यह परमेश्वर की सामर्थ के लिए भी वास्तविक है। इस समय आप में परमेश्वर की सभी सामर्थ शामिल हैं। हालांकि, जब तक आप उस सामर्थ पर खटखटाते नहीं हैं, तब तक परमेश्वर की सामर्थ का कोई फायदा नहीं होता है।

आप विश्वास के कदमों द्वारा परमेश्वर की सामर्थ को खटखटाते हैं।

मैं आपको यह समझाने के लिए एक दृश्य छवि देता हूँ। एक प्लास्टिक की पानी की बोतल की कल्पना करें जो पानी से भरी है और उसका ढक्कन लगा है। बोतल में पानी परमेश्वर की पूर्णता और परमेश्वर की सारी सामर्थ का प्रतिनिधित्व करती है। कल्पना कीजिए कि उद्धार के बिंदु पर भरी हुई बोतल आप में प्रवेश कर रही है (क्योंकि उद्धार पर आपको परमेश्वर के जीवन और सामर्थ की पूर्णता मिली है)।

हालांकि, बोतल का ढक्कन हटाए बिना, आप कभी भी परमेश्वर की सामर्थ से पीने या आकर्षित होने में सक्षम नहीं होंगे। जैसे-जैसे आप विश्वास के कदम उठाते हैं, परमेश्वर ढक्कन को खोलता है और आपकी सोच, आपकी मान्यताओं और आपके व्यवहार को बदलने के लिए अपनी सामर्थ उंडेलता हैं।

मुझे यह दुख है कि बहुत सारे मसीही वैसा जीवन जी रहे हैं जैसा मैंने तीस साल तक जीया था। उनके अपने जीवन को बदलने की सामर्थ उनके भीतर है, और वे या तो वास्तव में परमेश्वर की सामर्थ के महत्व को समझ नहीं पाते हैं या यह समझ नहीं पाते कि उसकी सामर्थ का उपयोग कैसे किया जाए। नतीजा यह है कि उनका जीवन अपरिवर्तित रहता है। वे जीत के बीच में हारे हुए रहते हैं। जो सामर्थ उन्हें स्वतंत्र कर सकता है, उन्हें ठीक कर सकता है, और उन्हें बदल सकता है, उसका कोई फायदा नहीं हुआ है। वे परमेश्वर की सामर्थ के बजाय अविश्वासियों की तरह अपनी बुद्धि, क्षमता और इच्छाशक्ति में जीवन जीते रहते हैं।

विश्वास से परमेश्वर की सामर्थ में खटखटाए बिना, आपके जीवन में कोई विशिष्ट परिवर्तन नहीं होगा।

परमेश्वर की सामर्थ आप में एक आलौकिक कार्य पूरा करेगी।

एक शब्द जो हमारे जीवन में परमेश्वर के कार्य के विषय में समझने के लिए महत्वपूर्ण है वह शब्द 'अलौकिक' है। कारण यह है कि 'अलौकिक' शब्द को समझना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि परमेश्वर जो कुछ भी आपके जीवन में पूरा करता है वह एक 'अलौकिक' कार्य है। इसलिए, इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, मुझे 'अलौकिक' कार्य को परिभाषित करने दें:

एक 'आलौकिक' कार्य एक ऐसा कार्य है जिसे परमेश्वर हमारे द्वारा और हमारे माध्यम से पूरा करता है जब हम विश्वास से चलते हैं जिसके लिए कोई प्राकृतिक या मानव निर्मित स्पष्टीकरण नहीं है।

मुझे यहोशू 6:3-5 में यरीहो के पतन की कहानी के साथ एक 'अलौकिक' कार्य का उदाहरण देने दें:

'सो तुम में जितने योद्धा हैं नगर को घेर लें, और उस नगर के चारों ओर एक बार घूम आएँ। और छः दिन तक ऐसा ही किया करना। और सात याजक सन्दूक के आगे आगे जुबली के सात नरसिंगे लिए हुए चलें, फिर सातवें दिन तुम नगर के चारों ओर सात बार घूमना, और याजक भी नरसिंगे फूंकते चलें। और जब वे जुबली के नरसिंगे देर तक फूँकते रहे, तब सब लोग नरसिंगे का शब्द सुनते ही बड़ी ध्वनि से जयजयकार करें; तब नगर की शहरपनाह नेव से गिर जाएगी, और सब लोग अपने अपने साम्हने चढ़ जाएं।'

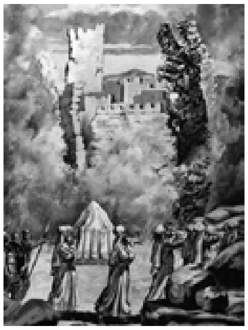

मैं चाहता हूँ कि आप इस अंश को दोबारा पढ़ लें और स्वयं को इस कहानी में डाल दें। क्या होता अगर परमेश्वर ने आपको सात दिनों तक यरीहो के चारों ओर घूमने के लिए कहा होता, कि सातवें दिन नरसिंगा फूँकना, और फिर शहरपनाह नेव से गिर जाएगी? (आपकी जानकारी के लिए – परमेश्वर ने यहूदियों को लोहे की बड़ी गेंद के साथ क्रेन लाने के लिए नहीं कहा था।) ठीक है, हम इस अंश से जानते हैं कि उन्होंने परिणाम के साथ क्या किया कि शहरपनाह की नीवें गिर गईं। समझने का मुख्य बिंदु यह है कि उनका भाग घूमना, नरसिंगा फूँकना, और फिर जोर से जयजयकार करना था। उन्होंने यह सब विश्वास से किया। हालांकि, उन चीजों में से कोई भी शहरपनाह को गिरने का कारण नहीं बनी। परमेश्वर के सही समय में, उसकी अपनी सामर्थ में, अलौकिक रूप से शहरपनाह की नीवें गिरीं।

इसके विषय में सोचें: क्या यह संभव है कि परमेश्वर आप में भी यही अलौकिक कार्य पूरा करना चाहता है? क्या वह आपको मुक्त करने के लिए आपकी झूठी मान्यताओं, आपके पराजित पाप के तरीकों और आपके घावों की शहरपनाह की नीवों को गिराने का वादा नहीं करता है? इसलिए, आपका भाग विश्वास से चलना और उसकी अलौकिक सामर्थ पर भरोसा करना है। जब वह यह करता है, आप यहूदियों की तरह, शहरपनाह गिरने के बाद, उसके भय में खड़े रहेंगे।

<u>प्रश्न:</u> आप अपने जीवन में कौन सा अलौकिक कार्य चाहते हैं कि परमेश्वर उसे पूरा करे? क्या यह एक आंतरिक संघर्ष, एक पराजित पाप के तरीकों से स्वतंत्रता, शारीरिक व्यवहार में परिवर्तन आदि पर विजय है?

<u>मनन करें:</u> यहोशू 6:3-5 पर ऊपर और इस प्रश्न के विषय में सोचें, 'अगर परमेश्वर यरीहो की भौतिक शहरपनाहों को गिरा सकता है, तो क्या वह आपके विश्वास से चलने के द्वारा आपकी झूठी मान्यताओं, पाप के तरीकों और गढ़ों की शहरपनाह को नहीं गिराएगा?'

<u>परमेश्वर को शामिल करना:</u> विश्वास के कदम उठाना शुरू करें, और परमेश्वर से उन शहरपनाहों को गिराने के लिए कहें।

<u>हमें परमेश्वर के अलौकिक कार्य के विषय में क्या समझने की आवश्यकता है?</u>

यह कहना संभवतः सुरक्षित है कि अधिकांश मसीही समझते हैं कि परमेश्वर की सामर्थ अलौकिक है। हालांकि, जब मैं कहता हूँ कि परमेश्वर उनमें अलौकिक कार्य को पूरा करना चाहते हैं, तो उन्हें अवधारणा को समझने में कठिन समय लगता है। तो जब परमेश्वर की सामर्थ की हमारे अंदर कार्य करने की बात आती है तब अलौकिकता का क्या अर्थ होता है? आइये इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए दो महत्वपूर्ण सत्य देखें।

1. <u>आप, अधिकांश भाग के लिए, आप में कार्य कर रही परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ को महसूस या अनुभव नहीं कर सकते हैं।</u>

यदि आप एक पल के लिए मेरे साथ भाग लेंगे, तो मुझे लगता है कि मैं आपको दिखा सकता हूँ कि मेरा क्या मतलब है। अभी मेरे साथ विश्वास का एक कदम उठाएँ। सिर्फ कहें, 'हे प्रभु, मैं इस पल में आपकी सामर्थ को मुझमें बहने देने के लिए भरोसा कर रहा हूँ।' अगर आपने विश्वास से ऐसा किया है, तो क्या आप कुछ महसूस कर रहे हैं? क्या आप यह अनुभव कर रहे हैं कि परमेश्वर की सामर्थ आप पर उंडेली जा रही है? जब आप विश्वास से चलते हैं तो अधिकांश भाग में आप परमेश्वर की सामर्थ को महसूस नहीं करेंगे। ऐसा क्यों है? उत्तर के लिए 2 कुरिन्थियों 5:7 देखें:

'क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।'

पौलुस हमें इस पद में यह बता रहा है कि यह विश्वास का मार्ग है और <u>भावना</u> या <u>अनुभव</u> नहीं है। अक्सर आप परमेश्वर के जीवन या उसकी सामर्थ को महसूस या अनुभव नहीं करेंगे। यह निराशाजनक क्यों हो सकता है? मनुष्य के रूप में हम हर पल में हमारी पाँच में से बस एक इंद्री के माध्यम से जीवन महसूस करते और अनुभव करते हैं। क्योंकि महसूस करना और अनुभव करना हमारे जीवन के ऐसे अभिन्न अंग हैं, इसलिए यह निष्कर्ष निकालना आसान है कि जब हम विश्वास का कदम उठाते हैं तो हम परमेश्वर के कार्य को महसूस करेंगे या <u>अनुभव</u> करेंगे।

सच्चाई यह है कि जब आप विश्वास का एक कदम उठाते हैं तो अधिकांश भाग के लिए आप परमेश्वर के जीवन और सामर्थ को अपने अन्दर बहता हुआ महसूस या अनुभव नहीं करेंगे।

एक व्यक्तिगत उदाहरण

जब मैंने विश्वास की अपनी यात्रा शुरू की, तो मैंने परमेश्वर से मेरे पिता द्वारा दिए गए घावों को चंगा करने की इच्छा व्यक्त की। चंगाई की ओर मेरा मार्ग विश्वास के एक कदम से शुरू हुआ जो इस तरह दिखता थाः 'हे प्रभु, मैं आपसे मेरे पिता के मौखिक, भावनात्मक, शारीरिक दुर्व्यवहार द्वारा दिए गए घावों को चंगा करने के लिए प्रार्थना करता हूँ।' उसी पल में परमेश्वर की सारी सामर्थ मुझे ठीक करने के लिए मुझ पर जारी हो जाती है।

हालांकि, मैं परमेश्वर की किसी भी प्रकार की चंगाई की सामर्थ को महसूस या अनुभव नहीं कर रहा था। भले ही मैं परमेश्वर की सामर्थ को महसूस नहीं कर रहा था, लेकिन परमेश्वर की सच्चाई हमें क्या बताती है? चाहे मैंने यह महसूस किया हो या नहीं, परमेश्वर की सामर्थ मुझ पर उंडेली गई थी। सच्चाई यह है कि सिर्फ इसलिए कि मैं परमेश्वर की चंगाई सामर्थ का अनुभव नहीं कर रहा था, यह इस तथ्य को नहीं बदलेगा कि परमेश्वर मुझे ठीक करने के लिए उस पल में कार्य कर रहा था। इसलिए, विश्वास के मार्ग के लिए यहां एक बहुत ही महत्वपूर्ण सत्य हैः

विश्वास के मार्ग की कुंजीः
विश्वास करें कि परमेश्वर आप में कार्य कर रहा है क्योंकि आप विश्वास से चलते हैं
फिर चाहे आप उसके जीवन और सामर्थ का अनुभव करते हैं या नहीं।

प्रश्नः क्या आपने अतीत में विश्वास से चलने की कोशिश की है, लेकिन आप निराश हो गए और चलना छोड़ दिया क्योंकि आप अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य को महसूस या अनुभव नहीं कर रहे थे? क्या यह विश्वास से चलने को बेहतर ढंग से समझने में आपकी मदद करता है कि भले ही आप उसके जीवन और सामर्थ को महसूस या अनुभव न करें, वह फिर भी कार्य कर रहा है?

मनन करेंः इस सच्चाई पर कि चाहे हम परमेश्वर की सामर्थ को महसूस या अनुभव नहीं करते हैं, तब भी वह कार्य कर रहा है क्योंकि हम विश्वास से चलते हैं।

परमेश्वर को शामिल करनाः परमेश्वर से आपको इस सच्चाई का गहरा प्रकाशन देने के लिए कहें कि आप उस समय उसके जीवन और सामर्थ को महसूस या अनुभव नहीं कर सकते जब आप विश्वास के कदम उठाते हैं। उस क्षेत्र में विश्वास के कदम उठाना शुरू करें जिन्हें आप बदलना चाहते हैं। भले ही आप परिवर्तन नहीं देख पा रहे हों, फिर भी यह पुष्टि करने के लिए परमेश्वर की तलाश करें कि वह आप में कार्य कर रहा है।

इस सत्य को न समझना और विश्वास करना उन मुख्य कारणों में से एक है कि क्यों लोग विश्वास से चलना छोड़ देते हैं।

तीसरा दिन

2. आप नहीं जान पाएंगे कि परमेश्वर की सामर्थ आपके अंदर कैसे कार्य कर रही है।

''अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।'' भजन 37:5

इसके अलावा, हम नहीं जानते और न जान पाएँगे कि हमें बदलने के लिए परमेश्वर की सामर्थ कैसे कार्य करती है। सेना में एक वाक्यांश प्रयोग होता है जिसका मैं अक्सर उपयोग करता हूँ। यह है, 'आप जरूरी आधार पर हैं।' यह परमेश्वर के साथ भी है। चूँकि परमेश्वर हमें नहीं बता रहा कि वह हमें कैसे बदल रहा है, हमें यह जानने की जरूरत नहीं है। यह बहुत निराशाजनक हो सकता है क्योंकि हम हमेशा यह जानना चाहते हैं कि कुछ भी और सब कुछ कैसे कार्य करता है। हालांकि, अधिकांश भाग के लिए परमेश्वर आपको नहीं बताएँगे कि वह कैसे कार्य कर रहा है। जब आप विश्वास से चलते हैं तभी वह केवल आप में कार्य करने का वायदा करता है।

अलौकिकता का भी यही अर्थ है कि परमेश्वर आपके जीवन को बदलने की अपनी प्रक्रिया नहीं बता रहा है।

इन सत्यों को साझा करने में मेरे सबसे बड़े संघर्षो में से एक यह है कि मैं आपके जीवन को बदलने में परमेश्वर की प्रक्रिया का वर्णन नहीं कर सकता। उसने (या न ही वह) आपको या मुझे यह बताएगा कि वह अपना कार्य कैसे करता है। वह केवल यह चाहता है कि आप उसमें विश्वास के कदम उठाएँ और विश्वास से जान लें कि वह अपने अलौकिक कार्य को पूरा कर रहा है। यही कारण है कि विश्वास से चलने के लिए कोई सूत्र या जाँच सूची नहीं हैं क्योंकि परमेश्वर का कार्य आपके लिए अनोखा होगा और वह किसी और के लिए नहीं होगा।

क्योंकि परमेश्वर का कार्य एक अलौकिक कार्य है और व्यक्तिगत रूप से तैयार किया गया है, हम मसीही जीवन को एक सूत्र या जाँच सूची नहीं बना सकते हैं।

इस प्रश्न के विषय में सोचेंः क्या यह संभव है कि परमेश्वर हमें यह नहीं बता रहा कि वह हमारे विश्वास का निर्माण करने के लिए कैसे कार्य कर रहा है?

प्रश्नः आप क्यों सोचते हैं कि हमें यह न जानने की बजाय यह जानने की जरूरत है कि परमेश्वर हमारे जीवन में क्या कर रहा है? अगर हम जानने की जरूरत को पकड़े रहना चाहते हैं तो कुछ नकारात्मक नतीजे क्या हो सकते हैं?

क्या आपको बेहतर समझ है कि क्यों हम मसीही जीवन जीने के लिए लोगों के लिए सूत्र या जाँच सूची नहीं बना सकते?

मनन करेंः भजन 37ः5 पर और परमेश्वर से आपको जानने की जरुरत से दूर हटाने के लिए कहें कि वह आपके जीवन में कैसे कार्य कर रहा है।

परमेश्वर को शामिल करनाः जब आप उस क्षेत्र में विश्वास के कदम उठा रहे हैं, जिसे आप बदलना चाहते हैं, परमेश्वर से आपको यह न जानने के लिए शांति से रहने की इच्छा देने के लिए कहें कि वह कैसे कार्य कर रहा है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि आप परिवर्तन का अनुभव नहीं करेंगे।

भले ही आप परमेश्वर की प्रक्रिया को महसूस या अनुभव न करें, आप अपने विचार में, अपने व्यवहार में, और आपके द्वारा चुने गए विकल्पों में, वास्तव में अपनी सोच में परिवर्तन का अनुभव करेंगे।

परमेश्वर चाहता है कि आप अपने जीवन में किए गए परिवर्तनों का अनुभव करें, और आप करेंगे। हालांकि, वास्तविक परिवर्तन होने से पहले आपको अपने अंदर कार्य को महसूस या अनुभव नहीं हो रहा है।

उदाहरण के लिए, आप असफलता के डर से मुक्त होने के लिए विश्वास से परमेश्वर की खोज करना शुरू करते हैं। जैसे-जैसे आप विश्वास से चलते हैं, परमेश्वर की सामर्थ आपको मुक्त करने के लिए कार्य करती है, लेकिन आप स्वतंत्रता की प्रक्रिया का अनुभव नहीं कर रहे होते हैं। हालांकि, परमेश्वर के सही समय में आप एक दिन स्वयं को विफलता से डरते हुए नहीं पाएँगे। मुख्य यह है कि वांछित परिवर्तन का अनुभव करने के लिए आपको विश्वास से काफी देर तक चलना चाहिए।

इसलिए, आपके विश्वास के मार्ग में महत्वपूर्ण प्रश्न यह हैः

क्या आप अपने जीवन में परिवर्तनों को अनुभव के लिए विश्वास से काफी देर तक चलेंगे?

चूंकि हम नहीं जानते (और परमेश्वर हमें नहीं बता रहा है) हम उस क्षेत्र में विश्वास से चलने के कितने समय बाद परिवर्तन को अनुभव करेंगे, हमें तब तक विश्वास से चलना जारी रखना चाहिए जब तक कि हम अपने जीवन में कुछ बदलाव का अनुभव न

करें। हम बाद में इस अध्ययन में विश्वास से चलने की अपेक्षा करने के विषय में और बात करेंगे। तब क्या होता है जब आप अलौकिक परिवर्तन का अनुभव करते हैं?

रूपांतरण मसीह-आत्मविश्वास को उत्पन्न करता है।

*''**और मुझे (मसीह)इस बात का भरोसा है,** कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।'' फिलिप्पियों 1:6*

पौलुस किस प्रकार के आत्मविश्वास की बात कर रहा है? वह आत्मविश्वास के विषय में बात नहीं कर रहा है। इसके बजाय, पौलुस परमेश्वर द्वारा निर्मित मसीह-आत्मविश्वास के विषय में बात कर रहा है। क्यों? पौलुस यह प्रमाणित कर रहा है कि उसने परमेश्वर से ऐसे अलौकिक परिवर्तनों का अनुभव किया है कि उसका आत्मविश्वास उसकी क्षमता में आत्मविश्वास नहीं है। इसकी बजाय यह परमेश्वर की क्षमता में मसीह-विश्वास है जिसके विषय में पौलुस बात कर रहा है।

---

*जब आप अपने जीवन में अलौकिक परिवर्तनों का अनुभव करना शुरू करते हैं
तब उसका परिणाम मसीह-आत्मविश्वास होता है।*

मैं आपके साथ ईमानदार रहूँगा कि मुझे कई मसीहियों के बीच इतना परमेश्वर-विश्वास नहीं दिखता है क्योंकि बहुत से लोग अलौकिक परिवर्तनों का अनुभव करने के लिए विश्वास में काफी लंबे समय तक नहीं चल पाते हैं। इसलिए, आपके लिए मेरा प्रोत्साहन यह है कि आप लंबे समय से विश्वास में चलते रहे ताकि आप मसीह के आत्मविश्वास का अनुभव कर सकें और पौलुस के साथ एक दिन कह सकें:

*''अब जो ऐसा सामर्थी है, कि **हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के** अनुसार जो हम में कार्य करता है।'' - इफिसियों 3:20*

हालांकि, याद रखें कि मसीह-आत्मविश्वास विकसित करना एक प्रक्रिया है। पौलुस 2 तीमुथियुस 1:12 में उस प्रक्रिया को प्रकट करने के लिए 'प्रेरित' शब्द का उपयोग करता है:

*'इस कारण मैं इन दुखों को भी उठाता हूँ, पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं उसे जिस की मैं ने प्रतीति की है, जानता हूँ और मुझे निश्चय है, कि **वह मेरी थाती की उस दिन तक** रखवाली कर सकता है।'*

यही हमारे विषय में सच होगा क्योंकि हम विश्वास से चलते हैं और हमारे जीवन में परमेश्वर के परिवर्तनकारी कार्य का अनुभव करते हैं। पौलुस की तरह, हम अपने जीवन में चलने और कार्य करने में परमेश्वर की इच्छा और क्षमता के विषय में राजी होंगे।

---

*इसलिए, जब हम अपने जीवन में परिवर्तन का अनुभव करने के लिए लंबे समय तक विश्वास से चलते हैं,
तब परमेश्वर में हमारा विश्वास बढ़ जाएगा।*

प्रश्न: यदि आप उन परिवर्तनों का अनुभव कर सकते हैं जिसका वायदा परमेश्वर की सामर्थ करती हैं, तो परमेश्वर की क्षमता और आपके जीवन को बदलने की इच्छा में आपके विश्वास के लिए यह क्या करेगा?

मनन करें: 2 तीमुथियुस 1:12 पर और आत्मा से आपको अपने परमेश्वर-विश्वास की गहराई को प्रकट करने के लिए कहें।

परमेश्वर को शामिल करना: परमेश्वर से आपके जीवन को बदलने की उसकी क्षमता और इच्छा के गहरे तरीके को समझाने के लिए मांगें। परमेश्वर को कहें कि वह आपको अधिक 'परमेश्वर-विश्वास' दें कि वह कौन है और वह क्या करने का वादा करता है।

उदाहरण: 'प्रभु, मेरा परमेश्वर-विश्वास बहुत अधिक नहीं है। मैं आपको अपने जीवन को बदलने के लिए कह रहा हूँ ताकि मुझे बदलने के लिए मेरा आत्मविश्वास आपकी क्षमता पर हो।'

चौथा दिन

अपना जीवन मसीह के द्वारा जीना

हमने इस सच्चाई को देखा है कि जब हम विश्वास के द्वारा चलते हैं तो परमेश्वर की सामर्थ हमारे भीतर जारी कर दी जाती है। इसके अलावा, जब हम विश्वास का कदम उठाते हैं तो मसीह का जीवन भी हमारे साथ जारी हो जाता है।

इसलिए, इस खंड में, मैं चाहता हूँ कि हम मसीह को हमारा जीवन होने और हमारे जीवन में जारी किए जाने के अर्थ की गहराई और व्यावहारिक अनुप्रयोग को देखें।

क्या आपको अध्याय एक से इन दो आयतें याद हैं जो बताते हैं कि मसीह ही जीवन है?

*"...**मसीह,** जो हमारा **जीवन** है" कुलुस्सियों 3:4*

*"**मार्ग**, सत्य और **जीवन** मैं ही हूँ..." यूहन्ना 14:6*

इसका क्या अर्थ है कि मसीह आपका जीवन है?

मसीह आपका जीवन है इसका अर्थ है कि आप के लिए अलौकिक, मसीह के जीवन की विशेषताएँ उपलब्ध हैं जो केवल मसीह द्वारा ही प्रदान की जा सकता हैं।

आपको मसीह-जीवन विशेषताओं के उदाहरण देने के लिए, आइए निम्नलिखित आयतों को देखें:

*"पर आत्मा का फल (मसीह का) **प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं**।" गलातियों 5:22,23अ*

*"इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी **करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता** धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो, जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो।" - कुलुस्सियों 3:12-14*

*'निदान, प्रभु में और उस की शक्ति के प्रभाव में **बलवन्त** बनो।" - इफिसियों 6:10*

गलातियों में आत्मा का फल 5:22,23, कुलुस्सियों 3:12-14 में खुद को किन चीज़ों से ओढना है (जैसे कि करुणा, दयालुता, विनम्रता,3समझ सुरक्षा निडरता बुद्धि

परख	पर्याप्तता	विनम्रता	आत्म-विश्वास	साहस
धार्मिकता	अस्वार्थता	विश्राम	तरस	हियाव ?
आशा	सादगी	नियंत्रण	विश्वासयोग्यता	आनंद है।

<u>इसके बारे में एक पल के लिए सोचें</u>: ऊपर सूचीबद्ध सभी चीजें हर पल मसीह के माध्यम से आपके लिए उपलब्ध हैं। इसलिए, वापस जाएँ और इस सूची को पढ़ने का समय निकालें।

आप इनमें से कौन सा मसीह-जीवन विशेषताओं का अनुभव करना चाहते हैं?

मसीह के जीवन की विशेषताओं और मनुष्य की विशेषताओं के बीच क्या अंतर है?

मसीह-जीवन की विशेषताओं के अर्थ को बेहतर ढंग से समझने के लिए, हमें पहले यह समझने की आवश्यकता है कि इन विशेषताओं के लिए आत्मिक और मानवीय दोनों संकेतार्थ है। हम जानते हैं कि मानव क्षेत्र में हम शांति, धैर्य, सुरक्षा इत्यादि की भावनाओं का भी अनुभव कर सकते हैं। इसलिए, आइये मसीह-जीवन की विशेषताओं के साथ मानवीय विशेषताओं को विपरीत करके देखें:

मानव विशेषताएँ – मनुष्य द्वारा उत्पन्न भावनाएँ या अनुभव जिन्हें हमारी परिस्थितियों और/या हमारे सम्बन्धों द्वारा बदला जा सकता है।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आपका दिन अच्छा बीत रहा है। आप मानवीय शांति, ख़ुशी और सुरक्षा महसूस कर रहे हैं। फिर, आप घर आते हैं तो आपको यह पता चलता है कि आपके घर में कुछ टूट गया है, और टूटे हुए पाइप के कारण आपके घर में बाढ़ आ गई है, और आपका दो साल का बेटा गुस्से का आवेश दिखा रहा है।

फिर एकदम से आपकी मानवीय भावनाओं जैसे शांति, ख़ुशी और सुरक्षा के साथ क्या होता है? वे जल्दी ही लुप्त हो जाती हैं! यही स्थिति मसीह-जीवन की विशेषताओं से जीने के समय कैसे दिखती है? इससे पहले कि मैं इस प्रश्न का उत्तर दूं, चलिए मसीह-जीवन की विशेषताओं को परिभाषित करते हैं।

<u>मसीह के जीवन की विशेषताएँ</u> – मसीह के जीवन की अलौकिक विशेषताएँ जिनकी मसीह द्वारा पूर्ति की जाती हैं और जिन्हें परिस्थितियों या सम्बन्धों द्वारा नहीं बदला जा सकता है।

*"अब मैं उन दुखों के **कारण आनन्द करता हूं,**...." कुलुस्सियों 1:24*

पौलुस के विश्वास के मार्ग में वह एक ऐसे स्थान पर आया जहाँ वह अपने दुखों के बीच में भी अत्यंत आनंद का अनुभव कर रहा था। यह मानवीय आनंद नहीं था क्योंकि जब हम दुखों में होते हैं तब मानवीय आनंद का अनुभव करना लगभग असंभव सा होता है। पौलुस एक मसीह-जीवन के आनंद का अनुभव कर रहा था और यहां तक कि कष्ट भी उसे चुरा नहीं पाया।

जैसे ऊपर उदाहरण दिया गया है, आइये मान लें कि जब आपको चोरी, बाढ़ और रोने वाले बच्चे का सामना करना पड़ता है, तो आप क्रोध, निराशा या अधीरता महसूस करते हैं। उस पल में विश्वास से, आप शांति, ख़ुशी और धीरज की मसीह-जीवन की विशेषताओं की ओर आकर्षित हो सकते हैं। (याद रखें कि क्योंकि आप के भीतर मसीह की पूर्णता हैं, इसलिए आपके पास सभी मसीह-जीवन की विशेषताएँ उपलब्ध हैं।) यह व्यावहारिक रूप से कैसा दिखता है?

"हे परमेश्वर, मैं अपने मानवीय आनंद को खो रहा हूँ और मुझे क्रोध, निराशा और अधीरता महसूस हो रही है। मैं आपको अपनी सामर्थ में, इस क्षण में मसीह-जीवन की शांति, आनंद और धीरज के साथ उन भावनाओं को प्रतिस्थापित करने के लिए कह रहा हूँ।"

उस पल में, आत्मा की सामर्थ आपके क्रोध, निराशा और अधीरता को दबा देती है क्योंकि मसीह आपके भीतर शांति और धीरज डाल रहा है। हो सकता है कि आप इसे तुरंत महसूस न करें, लेकिन जब आप उसकी शांति और धीरज की ओर आकर्षित होना जारी रखते हैं, तब क्रोध, निराशा और अधीरता की भावनाएं कम हो जाएँगी।

मानवीय विशेषता और मसीह-जीवन की विशेषता के बीच मुख्य अंतर यह है कि न तो संबंध और न ही प्रतिकूल परिस्थितियाँ आपको मसीह-जीवन की विशेषताओं का अनुभव करने से वंचित कर सकता हैं।

<u>प्रश्नः</u> यदि आप मसीह-जीवन की विशेषताओं, जैसे शांति, आराम, आनंद, धीरज, क्षमा आदि के साथ जीवन जी सकते हैं, तो आज आप जिन संघर्षो और विरोधों का सामना कर रहे हैं, उससे यह कैसे प्रभावित होगा?

<u>मनन करेंः</u> यदि आप मसीह-जीवन की विशेषताओं का अनुभव कर रहे होते, तो आपका जीवन अलग कैसे होता।

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> विश्वास के कदम उठाना शुरू करें और आपको बदलने के लिए परमेश्वर की खोज करें ताकि आप मसीह की शांति, ख़ुशी, क्षमा आदि का अनुभव कर सकें।

उदाहरणः' 'परमेश्वर, मेरी इच्छा आपकी शांति में चलना है। मैं आप के ऊपर अपने जीवन को बदलने के लिए भरोसा कर रहा हूं ताकि मैं आपकी शांति का अनुभव कर सकूँ।''

आइये देखते हैं कि जिन संघर्षो का हम दैनिक जीवन में सामना करते हैं उसके बीच मसीह की ओर हमारे जीवन के रूप में आकर्षित होना कैसा दिखता है।

अपने आंतरिक और बाहरी संघर्षो के मध्य में अपने जीवन के रूप में मसीह की ओर आकर्षित होना।

हमारे जीवन के रूप में मसीह की ओर आकर्षित होने के विषय में बात करने से पहले, हम जिन संघर्षो का सामना करते हैं, उनके बारे में मैं कुछ महत्वपूर्ण विचार साझा करना चाहता हूँ। पहला यह हैः

परमेश्वर आपको अपने जीवन के रूप में मसीह की निरंतर आवश्यकता के विषय में याद दिलाने के लिए आपकी नकारात्मक परिस्थितियों या कठिन संघर्षो का उपयोग करेगा।

जब भी मैं किसी व्यक्ति या जोड़ी को शिष्यता देता हूँ जो संघर्ष कर रहे हैं, तो वे सिर्फ अपने परिस्थितियों से होने वाले संघर्ष या दर्द को दूर करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। हालांकि, यह जानना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर उस संघर्ष का उपयोग उन्हें निर्भरता पर वापस लाने के लिए आकर्षित करने के लिए कर रहा है ताकि वे उन परिस्थितियों में मसीह की ओर अपने जीवन के रूप में आकर्षित हो सके। उन स्थितियों में मसीह को हमारे जीवन के रूप में हमारी जरूरत होने को पहचाने बिना, हम संघर्ष को हल करने या हटाने की कोशिश करने के लिए अपनी क्षमता पर भरोसा करेंगे। मैंने अक्सर इसे अपने संघर्षो के विषय में साझा किया हैः

परमेश्वर आपको ऐसे संघर्ष में शामिल होने की अनुमति दे सकता है जिसे आप ठीक नहीं कर सकते क्योंकि वह चाहता है कि आप उस उलझन को ठीक करने के लिए उसके पास आएं जो केवल वही ठीक कर सकता है।

प्रश्नः आज आप किस उलझन का सामना कर रहे हैं जिन्हे आप अपने आंतरिक संघर्ष, अपने संबंध या प्रतिकूल परिस्थितियों के संबंध में ठीक नहीं कर सकते हैं?

पाँचवा दिन

''मैं हूँ'' के रूप में मसीह की ओर आकर्षित होना

सभी संघर्ष आवश्यकता को पैदा करते हैं। उदाहरण के लिए, आपके संघर्ष शांति, धीरज, बुद्धि इत्यादि की आवश्यकता पैदा कर सकते हैं। प्रभु पौलुस के माध्यम से फिलिप्पियों 4ः19 में कहता हैः

''तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा... मसीह यीशु में।''

पौलुस कह रहा है कि यीशु हमारी जरूरत को पूरा करने वाला है। यीशु अपने जीवन के साथ उन जरूरतों को पूरा करता है। इसके अलावा, यीशु 14ः6 में कहता हैः

''मार्ग, सत्य, और जीवन मैं ही हूँ ...''

जब हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए मसीह की बात आती है, तो वह कह रहा है कि वह हमारी हर जरूरत को पूरा करने के लिए 'मैं हूँ' है। मेरा अर्थ समझने के लिए, कृपया इस अध्याय के अंत में 'मैं हूँ' शीर्षक वाला पृष्ठ देखें। जब आप सूची में देखते हैं, मसीह हमें जो चाहिए उसके लिए 'मैं हूँ' है। मैं आपको इसके कुछ व्यावहारिक उदाहरण देता हूं कि हम कैसे 'मैं हूं' के रूप में मसीह को उपयुक्त बना सकते हैं।

उदाहरण # 1ः मान लीजिए कि आप अपने पति/पत्नी द्वारा तिरस्कार का अनुभव कर रहे हैं। तब आपको मसीह की स्वीकृति की आवश्यकता है। यीशु कहता है, 'मैं आपकी स्वीकृति हूँ।' इसलिए, मसीह की स्वीकृति की ओर आप कैसे आकर्षित हो सकते हैं इसका उदाहरण ऐसा लगता है, 'हे प्रभु, मैं अपने पति/पत्नी द्वारा तिरस्कृत किए जाने अनुभव कर रहा हूँ। मैं आपको अपनी स्वीकृति होने के लिए भरोसा कर रहा हूँ।'

<u>उदाहरण # 2</u>: मान लीजिए कि कंपनी में कटौती के कारण आपका काम खतरे में है। आप चिंतित महसूस कर रहे हैं। आपकी जरूरत मसीह की शांति है। यीशु कहता है, 'मैं तुम्हारी शांति हूँ।' इसलिए, मसीह की शांति पर आप कैसे आकर्षित हो सकते हैं इसका उदाहरण ऐसा लगता है, 'हे प्रभु, मैं चिंतित हूँ और अपना काम खोने के विषय में व्याकुल हूँ। मैं आपको अपनी शांति बनने के रूप में भरोसा कर रहा हूँ।'

<u>मनन करें</u>: इस सच्चाई पर कि मसीह 'मैं हूँ' है।

<u>अमलीकरण</u>: आज आप जिस आंतरिक और बाहरी संघर्ष का सामना कर रहे हैं उसके आधार पर आपको क्या चाहिए? 'मैं हूँ' सूची पर जाएं और 'मैं हूँ' ढूंढें जो आपके संघर्ष पर सबसे अधिक लागू होता है।

परमेश्वर को शामिल करना: अपने संघर्ष से संबन्धित अपनी जरूरत के लिए मसीह को खोजें। संघर्ष की गंभीरता पर निर्भर होने के लिए, आपको लगातार मसीह को जानने की जरूरत है कि आपको अपनी स्थिति से संबंधित क्या आवश्यकता है।

<u>हमारे जीवन के रूप में मसीह के विषय में एक अंतिम विचार:</u>

मैंने मसीहियों को यह कहते हुए सुना है कि वे मसीह से धीरज, शांति इत्यादि **<u>देने</u>** के लिए कहते हैं। यह औषध विधि (प्रिस्क्रिप्शन) के लिए औषध विक्रेता (फरमासिस्ट) से पूछने जैसा है। हालांकि, हम सभी में मसीह की शांति, आनंद और आश्वासन हैं (कुलुस्सियों 2:9), तो क्या हमें वास्तव में कुछ ऐसा मांगने की जरूरत है जो हमारे पास पहले से है? दूसरे शब्दों में, यीशु एक दैवीय औषध विक्रेता नहीं है जो हमें चाहिए वह देने के लिए है। इसके बजाय, वह कह रहा है कि 'मैं हूँ' जो आपको चाहिए। (यानि, मैं तुम्हारी शांति, आनंद और आश्वासन हूँ।) इसलिए, जैसा कि हमने ऊपर दिए गए उदाहरणों में देखा है, आपको मसीह से उसकी शांति, आनंद और बुद्धि देने के लिए माँगने की आवश्यकता नहीं है। आपको सिर्फ अपनी शांति, आनंद और बुद्धि के लिए उस पर 'भरोसा' करने की आवश्यकता है।

सच्चाई यह है कि मसीह आपका जीवन है। वह आपको कुछ प्रदान नहीं कर रहा है।
इसके बजाय, वह लगातार आपके जीवन के रूप में अपने आप को दे रहा है।

<u>आपके द्वारा सामना की जाने वाली परिस्थितियों में आपकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मसीह की ओर आकर्षित होने के लिए विश्वास के कदम:</u>

आइये देखें कि मसीह की ओर आकर्षित होना ''मैं हूँ'' के रूप में आपके कार्यस्थल में, 'विवाह में, और परिस्थितियों में' में कैसा दिखता है।

आपके कार्यस्थल में

<u>उदाहरण # 1</u>: मान लीजिए कि आपके पास तनावपूर्ण नौकरी है (क्या सब के पास नहीं?)। आप एक दिन काम पर जाते हैं, और तनाव आप पर स्वामित्व लेता है जो आपको आपकी शांति और मसीह में आश्वासन से वंचित कर रहा है। मसीह पर आपके जीवन के रूप में आकर्षित होने के द्वारा विश्वास का कदम इस तरह दिख सकता है:

<u>विश्वास का कदम</u>: 'हे प्रभु, मैं स्वयं स्वामित्व ले रहा हूँ और अपने काम के तनाव से चिंताग्रस्त हो रहा हूँ। मैं आपको अपनी शांति और आश्वासन के लिए भरोसा कर रहा हूँ।'

<u>महत्वपूर्ण मूल सत्य</u>: इससे पहले कि आप वास्तव में तनाव को उतारने में सक्षम हों और मसीह की शांति का अनुभव करना शुरू कर सके, आपको कई विश्वास के कदम उठाने होंगे, लेकिन अंत में आप उसकी शांति का अनुभव करेंगे।

<u>उदाहरण # 2</u>: आपने अभी अपनी नौकरी खो दी है, और अब आप भयभीत, चिंतित, या क्रोधित महसूस कर रहे हैं। इस पल में, आपको मसीह के साहस, आश्वासन और आत्मविश्वास की आवश्यकता है।

<u>विश्वास का कदम</u>: 'प्रभु, मैंने अभी अपनी नौकरी खो दी है। मैं चिंतित और व्याकुल महसूस कर रहा हूँ। मैं आपको इस स्थिति के बीच में मेरी शांति और आश्वासन होने के लिए भरोसा कर रहा हूं।'

अभ्यासः 'मैं हूँ' पृष्ठ को देखिए। आपकी नौकरी जिस जरूरत को उत्पन्न कर रही है उस जरूरत को पूरा करने के लिए मसीह 'मैं हूँ' हो सकता है? मसीह से उस जरूरत को पूरा करने के लिए 'मैं हूँ' होने के लिए कहना शुरू करें।

आपके विवाह मेंः

उदाहरण # 1ः मैं ऐसा मान लेता हूँ कि आप अपने पति/पत्नी को मसीह के प्रेम से प्रेम करना चाहते हैं। (यदि नहीं, तो बात करते हैं।) आप जानते हैं कि आप अपने आप में और अपने आप मसीह के बेशर्त प्रेम को उत्पन्न नहीं कर सकते है जो आपके पति/पत्नी की जरूरत है। इसलिए, आपके पति / पत्नी के लिए मसीह के प्रेम की ओर आकर्षित होने के लिए विश्वास का कदम इस तरह दिख सकता हैः

विश्वास का कदमः 'प्रभु, मैं अपने पति/पत्नी के लिए बिना-शर्त के प्रेम को उत्पन्न नहीं कर सकता हूँ। मैं आपको विश्वास में अपने पति/पत्नी से मेरे द्वारा मसीह के बेशर्त प्रेम करने के लिए माँगता/माँगती हूं।'

याद रखेंः जब आप इस प्रार्थना को करते हैं, तो आप संभवतः मसीह के प्रेम को अपने द्वारा बहता हुआ अनुभव नहीं करेंगे, लेकिन विश्वास से जान लें कि यह ऐसा ही है। याद रखें कि जब आप विश्वास से चलते हैं, तो परमेश्वर वास्तव में आपके जीवनसाथी से प्रेम करता है।

चुनौतीः अगले तीस दिनों में विश्वास के इस कदम को कई बार ध्यान में रखें, और आप अपने पति/पत्नी को कैसे देखते हैं या वह आपको कैसे देखता है, उन हर बदलाव का ध्यान रखें। आप अपने वैवाहिक संबंध में अलौकिक परिवर्तन देखना शुरू कर देंगे।

उदाहरण # 2ः आइये मान लीजिए कि ऐसी चीजें हैं जो आपके पति / पत्नी आपको आपके धीरज से दूर करने के लिए करते हैं। उन क्षणों में, आप विश्वास का कदम उठाकर मसीह के धीरज की ओर आकर्षित हो सकते हैंः

विश्वास का कदमः 'हे प्रभु, मेरे पति/पत्नी मेरे धीरज की परीक्षा ले रहे हैं। मैं आपको अपने पति / पत्नी के प्रति मेरा धीरज बनने के लिए माँगता/माँगती हूँ।' नोटः क्या आप देखते हैं कि मैं यह नहीं कह रहा हूँ, 'यीशु, मुझे धीरज रखने में मदद करें?' यीशु आपको धीरज रखने में मदद नहीं करना चाहता। क्योंकि वह आपका धीरज है।

अभ्यासः अपने विवाह को देखिए और इस विषय में सोचें कि आपके वैवाहिक संघर्ष के क्षेत्र में मसीह से अपने जीवन के रूप में आपको क्या चाहिए। मसीह की ओर 'मैं हूँ' के रूप में आकर्षित होकर विश्वास के कदम उठाना शुरू करें। एक बार फिर आप 'मैं हूँ' पृष्ठ को संदर्भित कर सकते हैं।

आपकी परिस्थितियों के लिए अमलीकरण

उदाहरण # 1ः मान लीजिए कि आप अपने आर्थिक स्थिति के साथ संघर्ष कर रहे हैं। आप जो भी करने जा रहे हैं उसके विषय में चिंतित और व्याकुल हो जाते हैं। उस चिंता और व्याकुलता के ऊपर स्वामित्व लेने की बजाय, आप इस से निपटने के लिए विश्वास से परमेश्वर से प्रतिज्ञा करते हैंः

विश्वास का कदमः ''हे प्रभु, मैं वास्तव में चिंतित और व्याकुल हूँ कि मैं अपने खर्चो का भुगतान करने के लिए क्या करने जा रहा हूँ। मैं आपकी संप्रभुता पर भरोसा कर रहा हूँ और आपसे मेरी शांति, आश्वासन और आत्मविश्वास होने के लिए प्रार्थना करता हूँ कि आप इसे पूरा करने का एक तरीका प्रदान करेंगे।''

उदाहरण # 2ः आइये मान लें कि आपको डॉक्टर के कार्यालय में पता चला है कि आपको गंभीर बीमारी है। डर आपके ऊपर कब्जा करता है, लेकिन आप विश्वास का कदम उठाने का फैसला करते हैंः

विश्वास का कदमः ''हे प्रभु, मैं इस स्थिति के कारण मेरे साथ जो हो सकता है इसके विषय में डरता हूँ। मैं आप पर विश्वास करता हूं कि आप मेरी हिम्मत और मेरी शक्ति बनें और इस डर को मुझसे दूर कर दें।''

अभ्यासः किसी भी नकारात्मक या प्रतिकूल परिस्थितियों को देखें जिनका आप सामना कर रहे हैं (वित्त, स्वास्थ्य, आदि) और निर्धारित करें कि उन परिस्थितियों के परिणामस्वरूप क्या जरूरतें उत्पन्न हो रही हैं। दोबारा, ''मैं हूँ'' पृष्ठ का संदर्भ लें और इन क्षेत्रों में विश्वास के कदम उठाएँ।

जब आप अपने जीवन के रूप में मसीह की ओर आकर्षित होते हैं तो याद रखने के लिए महत्वपूर्ण बिन्दुः

1. जब आप यह भरोसा करते हैं कि मसीह ही वह बातें हैं जिन्हें आप चाहते हैं, तो आपको उसी क्षण में मसीह के जीवन (उसकी सारी शांति, ताकत, बिना शर्त के प्रेम इत्यादि) की पूर्णता प्राप्त होती है।
2. याद रखें कि मसीह आपके भीतर जो जीवन उंडेल रहा है वह एक अलौकिक प्रक्रिया है।
3. क्योंकि यह अलौकिक है, इसलिए जो आप मसीह को होने के लिए भरोसा कर रहे हैं उसे आप तुरंत महसूस या अनुभव नहीं कर सकते हैं (यानि शांति, पर्याप्तता, धीरज आदि)।
4. हालांकि, यह इस सच्चाई को नहीं बदलता कि मसीह इस समय आप के भीतर शांति, धीरज, आदि की पूर्णता उंडेल रहा है।
5. जब हम माँगते हैं, चाहे हम मसीह के जीवन को उस पल में महसूस करे या नहीं, तब हम विश्वास से जानते हैं कि वह अपनी शांति, धीरज, आदि की पूर्ति कर रहा है।

अध्याय तीन का सारांश

1. विश्वास का कदम हमारे भीतर परमेश्वर की सामर्थ को जारी करता है।
2. हमारे भीतर यह सामर्थ वही सामर्थ है जो यीशु को मृतकों से जिलाती है।
3. इस सामर्थ के द्वारा जो हमारे भीतर जारी की जाती है हम विजय, स्वतंत्रता और परिवर्तन के नवीनीकरण का अनुभव करना शुरू कर देंगे।
4. परमेश्वर की सामर्थ अलौकिक सामर्थ है जिसमें परिवर्तनों के लिए कोई मानव निर्मित स्पष्टीकरण नहीं है।
5. 'अलौकिक' का अर्थ यह है कि यह जरूरी नहीं कि हम परमेश्वर की सामर्थ का अनुभव करेंगे या महसूस करेंगे और न ही यह समझेंगे कि परमेश्वर कैसे काम कर रहा है।
6. हालांकि, भले ही हम परमेश्वर की सामर्थ को महसूस नहीं कर सकते, हम पूरी तरह से उस परिवर्तन का अनुभव करेंगे जिसका वायदा परमेश्वर ने किया है।
7. जब हम उन परिवर्तनों का अनुभव करते हैं, तब परमेश्वर हमारे भीतर एक मसीह–विश्वास उत्पन्न करेगा।
8. हम कार्यस्थल में, विवाह में, परिवार में या प्रतिकूल परिस्थितियों में होने वाले संघर्षो में पल पल मसीह–समान विशेषताओं की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

"मैं तुम्हारा जीवन हूँ"

जैसे जैसे आपके जीवन में जरूरते बढ़ती है, तो वहाँ आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए मसीह "मैं हूँ" होता है। अपनी व्यक्तिगत जरूरतों को सम्मिलित करें और सूची में से खोजें कि मसीह आपकी आवश्यकता की आपूर्ति कैसे करेगा।

आपकी आवश्यकता..? यीशु कहता है, "मैं ....हूँ।"

मैं तुम्हारा प्यार हूँ – गलातियों 5:22
मैं तुम्हारा आनन्द हूँ – यूहन्ना 15:11
मैं आपकी पर्याप्तता हूँ – 2 कुरिन्थियों 3:5
मैं तुम्हारा ज्ञान हूँ – 1 कुरिन्थियों 1:30
मैं तुम्हारा रास्ता हूँ – यूहन्ना 14:6
मैं तुम्हारा सच्चाई हूँ – यूहन्ना 14:6
मैं तुम्हारा विश्राम हूँ – मत्ती 11:28
मैं तुम्हारा मन हूँ – 1 कुरिन्थियों 2:16
मैं तुम्हारी विनम्रता हूँ – मत्ती 11:29
मैं तुम्हारी स्वीकृति हूँ – रोमियों 15: 7
मैं तुम्हारी विश्वासयोग्यता हूँ – गलातियों 5: 22
मैं तुम्हारा प्रबंधनकर्ता है – गलातियों 4:19
मैं तुम्हारा छुड़ानेवाला हूँ – भजन 18:2
मैं तुम्हारी आजादी हूँ – यूहन्ना 8:32
मैं तुम्हारी जीत हूँ – 1 कुरिन्थियों 15:57
मैं तुम्हारी विनम्रता हूँ – गलातियों 5:23

मैं तुम्हारी इच्छा हूँ - भजन 73:25
मैं तुम्हारी पूर्णता हूँ - कुलुस्सियों 2:10
मैं तुम्हारी पवित्रता हूँ - 1 कुरिन्थियों 1:30
मैं तुम्हारा उद्देश्य हूँ - इफिसियों 1: 10
मैं तुम्हारी पहचान हूँ - 2 कुरिंथियों 5: 17
मैं तुम्हारी सुरक्षा हूँ - नीतिवचन 1: 33
मैं तुम्हारी भलाई हूँ - गलातियों 5:22
मैं तुम्हारा विश्वास हूं - 2 कुरिन्थियों 3:4
मैं तुम्हारी करुणा हूँ - भजन 25: 6
मैं तुम्हारी क्षमा हूँ - दानिय्येल 9:9
मैं तुम्हारी सफलता हूँ - रोमियों 8:37
मैं तुम्हारा धीरज हूँ - इब्रानियों 10: 36
मैं तुम्हारी शांति हूँ - इफिसियों 2:14
मैं तुम्हारी दृढ़ता हूँ - इब्रानियों 12: 2
मैं तुम्हारा विश्वास हूँ - रोमियों 15: 5
मैं तुम्हारी ताकत हूँ - रोमियों 6: 10
मैं तुम्हारी संप्रभुता हूँ - 1 तीमुथियुस 6: 15
मैं तुम्हारी अंतरंगता हूँ - भजन 139:3
मैं तुम्हारी दयालुता हूँ - गलातियों 5:22
मैं तुम्हारा धैर्य हूँ - गलातियों 5:22
मैं तुम्हारा साहस हूँ - यूहन्ना 16:33
मैं तुम्हारा विजेता हूँ - रोमियों 8:37
मैं तुम्हारी पवित्रता हूँ - कुलुस्सियों 3:12
मैं तुम्हारा आत्म-नियंत्रण हूँ - 2 तीमुथियुस 1:7
मैं तुम्हारा उद्धार हूँ - भजन 27:1
मैं तुम्हारा विश्वास हूँ - यिर्मयाह 17:7
मैं तुम्हारा मार्गदर्शक हूँ - भजन 48:14
मैं तुम्हारा चरवाहा हूँ - भजन 23:1
मैं तुम्हारा शांतिदाता हूँ - यूहन्ना 14:16
मैं तुम्हारा अब्बा हूँ - गलातियों 4:5-6
मैं तुम्हारी आशा हूँ - कुलुस्सियों 1:27
मैं तुम्हारा जीवन हूँ - यूहन्ना 14:6

अध्याय - 4

विजय, स्वतंत्रता और चंगाई के निमित्त परमेश्वर के वायदों का अनुभव करना

पहला दिन

अध्याय चार का अवलोकन

- परिवर्तन का अनुभव बनाम 'इसे विश्वास करना' को समझना।
- हमारे मनों को उसकी सच्चाई में नवीनीकृत करने की परमेश्वर की प्रक्रिया।
- पाप के तरीकों और गढ़ों को पराजित करने के द्वारा विजय और स्वतंत्रता का अनुभव करना।
- अतीत या वर्तमान के घावों से हमें ठीक करने की परमेश्वर की प्रक्रिया।

परिचय

अध्ययन के इस बिंदु तक, मुझे भरोसा है कि आपने अपने जीवन के कुछ क्षेत्रों में विश्वास के कदम उठाने शुरू कर दिए हैं जहां आप परिवर्तन का अनुभव करना चाहते हैं। यदि ऐसा है, तो मुझे उम्मीद है कि आपने अपने विचारों, भावनाओं या विकल्पों में कुछ बदलाव किए हैं। इस अध्याय में हम यह देखने जा रहे हैं कि विश्वास का हमारा मार्ग हमारे जीवन में निम्नलिखित परिवर्तनों को कैसे करेगा:

- हमारी झूठी धारणाओं के विरुद्ध हमारे मनों को परमेश्वर की सच्चाई पर विश्वास करने के लिए नवीनीकृत किया गया है। रोमियों 12:2
- हमारे शारीरिक व्यवहार से विजय और स्वतंत्रता का अनुभव करना और पाप के तरीकों को हरा देना। 1 कुरिन्थियों 15:57
- पिछले घावों से चंगाई का अनुभव करना। भजन 147:3

इन मुद्दों को हल करने से पहले, मैं आपके विश्वास के मार्ग के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण सत्य साझा करना चाहता हूं।

'विश्वास करना' बनाम 'अनुभव'

मेरा मानना है कि यह इस पूरे अध्ययन के सबसे महत्वपूर्ण भागों में से एक है। इसलिए, जो कुछ आप पढ़ रहे हैं उस पर विचार करने और ध्यान करने के लिए कुछ समय दें।

याद रखें कि, अधिकांश भाग के लिए, जब आप अपने जीवन के उस क्षेत्र में विश्वास की शुरुआत शुरू करते हैं, जिसे आप बदलना चाहते हैं, तो आप परमेश्वर के जीवन और सामर्थ को अनुभव या महसूस नहीं करेंगे। हालांकि, विश्वास से चलने के कुछ समय बाद, आपको अपनी सोच, मान्यताओं, विकल्पों और व्यवहार में बदलाव का अनुभव होना शुरू हो जाएगा। जब तक हम वास्तव में 'विश्वास करने वाले' परिवर्तनों का अनुभव नहीं करते हैं, तब तक मैं विश्वास के मार्ग को पुकारता हूँ। 'विश्वास करने' का अर्थ क्या है?

"विश्वास करने"

का अर्थ है कि जब तक आप वास्तव में किसी परिवर्तन का अनुभव नहीं करते हैं, तब तक आप यह मानते हैं कि परमेश्वर काम कर रहा है भले ही आप महसूस नहीं कर रहे हैं या अनुभव नहीं कर रहे है कि वह आप में कार्य कर रहा है।

विश्वास के मार्ग की मुख्य यह है कि जब तक आप अपने विचारों, विकल्पों, विश्वासों या व्यवहारों में परिवर्तन का अनुभव न करें तब तक 'विश्वास करना' जारी रखें। इसकी व्याख्या करने के लिए मुझे आपको उदाहरण देने दें।

आइये मान लें कि आप किसी से प्रेम करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। जैसा कि आपने पिछले अध्याय में पाया है, आप मसीह के सारे प्रेम के लिए उपलब्ध हैं। इसलिए, आप मसीह के प्रेम को प्राप्त करने में विश्वास के कदम उठाने लगते हैं।

विश्वास का कदम ऐसा दिख सकता है, 'प्रभु, मैं इस व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकता। मैं आपके प्रेम की ओर आकर्षित होता हूँ जिससे मैं इस व्यक्ति से प्रेम कर पाऊँ।'

इस प्रक्रिया के प्रारंभ में आप मसीह के प्रेम को महसूस या अनुभव नहीं कर रहे हैं। हालांकि, अगर आप विश्वास से चल रहे हैं, तो हम जो जानते हैं क्या वह सच है? मसीह लगातार इस व्यक्ति के लिए आप के भीतर प्रेम की पूर्ति कर रहा है। हालांकि इस बिंदु पर आप मसीह के प्रेम का अनुभव नहीं कर रहे हैं, मैं इसे 'विश्वास' का प्रेम कहता हूँ। हालांकि, अगर आप इसे 'विश्वास करते' रहना जारी रखते हैं, तो आप अंततः ऐसे स्थान पर आ जाएँगे जहाँ आप इस व्यक्ति के लिए मसीह के प्रेम का अनुभव करना शुरू कर देंगे। याद रखें कि विश्वास से अनुभव में जाने से आत्मा का अलौकिक कार्य होता है जिसमें समय लग सकता है। नीचे 'विश्वास' से 'अनुभव' में जाना कैसा दिखता है उसका एक उदाहरण दिया गया है।

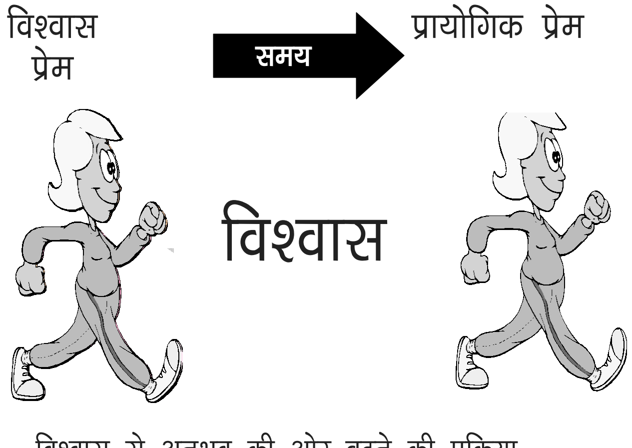

विश्वास से अनुभव की ओर बढ़ने की प्रक्रिया

व्यक्तिगत कहानी

मुझे आपके साथ एक व्यक्तिगत कहानी बाँटने दें कि परमेश्वर मुझे 'विश्वास' के प्रेम से 'अनुभव' के प्रेम में कैसे ले गया। मेरा एक रिश्तेदार था जिसे मैं प्रेम नहीं कर पाता था। इस व्यक्ति के बारे में कुछ चीजें थीं जिसने मुझे उसके चारों ओर घूमने के लिए मजबूर कर दिया गया। (क्या आप इस तरह के किसी व्यक्ति को जानते हैं?) इन सच्चाइयों को पढ़ाने के कुछ समय बाद, परमेश्वर ने इस व्यक्ति को मेरे हृदय में डाला, और उसने इन विचारों को मेरे मन में डालाः 'उस रिश्तेदार के बारे में क्या है जिसे आप प्रेम नहीं करते हो? क्या आप जो दूसरों को सिखाते हैं अपने जीवन में लागू करेंगे? 'मेरी पहली प्रतिक्रिया थी,' मुझे ऐसा नहीं लगता। 'मेरी समस्या यह थी कि मैं इस रिश्तेदार से प्रेम करने का इच्छुक नहीं था। तब परमेश्वर ने मेरे मन में एक और विचार डाला। 'मुझे पता है कि तुम इस व्यक्ति से प्रेम करने के इच्छुक नहीं हैं, लेकिन क्या तुम मुझे तुम्हारे द्वारा इस व्यक्ति से प्रेम करने देंगे?' मैंने कहा, 'हाँ, मैं इस बात के लिए तैयार हूँ कि आप मेरे द्वारा उससे प्रेम करें।''

इसलिए, मैंने विश्वास के कदम उठाकर और उस रिश्तेदार से प्रेम करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करके 'विश्वास करना' शुरू कर दिया। 'विश्वास करने' की यह प्रक्रिया 18 महीने तक चलती रही। उस समय के दौरान मैं उस व्यक्ति के लिए कोई प्रेम महसूस नहीं कर रहा था, लेकिन मैंने विश्वास से चलना जारी रखा। इस कहानी का दिलचस्प भाग यह है कि 18 महीनों के दौरान मैंने इस में बदलाव देखा कि वह व्यक्ति कैसे मेरे समान है। वे मेरे लिए अधिक प्रतिक्रियाशील और अधिक प्रेमी बन गया। मैं डर गया क्योंकि मैं अभी भी इस व्यक्ति के लिए कोई प्रेम महसूस नहीं कर रहा था।

हालांकि, एक दिन 18 महीने के बाद जब मैं इस रिश्तेदार के घर गया, तो मुझे इस व्यक्ति के लिए परमेश्वर का बिना शर्त का प्रेम महसूस होना शुरू हो गया। जब तक मैं जीवित रहूँगा तब तक मैं उस दिन को कभी नहीं भूलूँगा क्योंकि मैंने अपने जीवन में परमेश्वर के अलौकिक कार्यों में से सबसे अधिक अलौकिक कार्य को अनुभव किया जिसे परमेश्वर ने कभी मेरे जीवन में पूरा किया है। मैं परमेश्वर के बदलने की सामर्थ पर चकित और आश्चर्यचकित था। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि मेरे (और उनके) भीतर इस बदलाव ने हमारे परमेश्वर पर विश्वास के लिए क्या किया?

<u>प्रश्नः</u> क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे आप प्रेम नहीं कर सकते? क्या आप तैयार हैं कि आपके द्वारा परमेश्वर उस व्यक्ति से प्रेम करें? यदि ऐसा है, तो विश्वास के कदम उठाना शुरू करें, और यदि आप लंबे समय तक 'विश्वास' करते हैं, तो आप भी उस व्यक्ति के लिए मसीह के प्रेम का अनुभव करेंगे (जैसे मैंने किया)। यदि आप इस बात के इच्छुक नहीं हैं कि परमेश्वर आपके द्वारा उस व्यक्ति से प्रेम करे, तो उसे आपकी इच्छा को उस स्थान पर ले जाने के लिए कहें जहाँ आप परमेश्वर द्वारा उस व्यक्ति से प्रेम करने के इच्छुक हो जाएँ।

<u>दो कारणों से हम 'विश्वास करने'' के साथ संघर्ष करते हैं:</u>

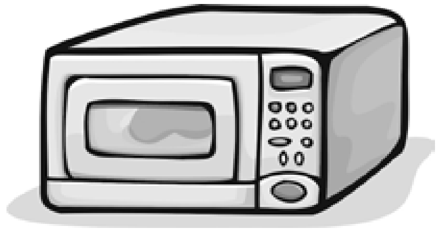

1. <u>हम तत्काल संतुष्टि की संस्कृति में रहते हैं।</u>

पहला कारण यह है कि हम 'विश्वास करने' के साथ संघर्ष करते हैं क्योंकि हम तत्काल संतुष्टि की संस्कृति में रहते हैं, जो यह कहती है कि, 'मैं इसे चाहता हूँ, 'और मैं इसे अभी चाहता हूँ!' मैं इसे 'माइक्रोवेव' संस्कृति कहता हूँ। हम विश्वास के हमारे मार्ग में यही मानसिकता लाते हैं, और हम परिवर्तन का अनुभव करना चाहते हैं और इसे जल्दी से अनुभव करना चाहते हैं। सच्चाई यह है कि अधिकांश भाग के लिए आपका विश्वास का मार्ग एक यात्रा होगी, न कि थोड़ी दूर की तेज दौड़। परिवर्तन का अनुभव करने से पहले इसमें कुछ समय लग सकता है।

मैं आपके साथ ईमानदार रहूँगा। **मेरा मानना है कि यह # 1 कारण है कि अधिकांश मसीही कभी अलौकिक परिवर्तन का अनुभव नहीं करते हैं।** वे बदलाव का अनुभव करने के लिए इतनी जल्दी करते हैं कि वे परिवर्तन का अनुभव करने के लिए विश्वास के पर्याप्त कदम उठाने के इच्छुक नहीं होते हैं।

यही कारण है कि आपके विश्वास के मार्ग के विषय में महत्वपूर्ण प्रश्न यह हैः

क्या आप परिवर्तन का अनुभव करने के लिए पर्याप्त 'विश्वास' करेंगे?

---

2. शैतान आपको विश्वास से न चलने के लिए प्रलोभित करेगा।

दूसरा कारण यह है कि हम 'विश्वास करने' के साथ संघर्ष करते हैं कि शैतान जो सबसे अंतिम चीज आपके लिए चाहता है वह यह कि आप परिवर्तित और स्वतंत्र हो। इसलिए, जब आप 'विश्वास कर रहे हैं', तब वह निराशा और संदेह के विचारों को डालने के द्वारा आपको अपने विश्वास से बाहर निकलने के लिए प्रलोभित करेगा। इसका कारण यह है कि जब आप निराश होते हैं या परमेश्वर पर संदेह करते हैं तो आपके विश्वास को छोड़ने की अधिक संभावना होती है। अध्याय पांच में हमारे विश्वास के मार्ग में बाधा डालने के शैतान के भाग के विषय में हम और अधिक चर्चा करेंगे।

इस विषय में एक अंतिम विचारः

'विश्वास करने' की अवधि के दौरान जब तक आप परिवर्तन का अनुभव नहीं करते हैं तब तक मसीह के धीरज और दृढ़ता की ओर आकर्षित होना याद रखें।

मुझे पता है कि मेरे विश्वास के मार्ग में कई बार मैं अधीर हो गया, या मैं छोड़ना चाहता था क्योंकि कुछ भी तेजी से बदलता हुआ प्रतीत नहीं होता था। जब वे समय आएँगे (और वे निश्चित आएँगे), मैं मसीह को अपना धीरज और दृढ़ता रखने वाले के रूप में खोजूँगा। यहाँ एक उदाहरण दिया गया है जो इस तरह दिखता हैः

उदाहरणः प्रभु, मैं अब कुछ समय से विश्वास से चल रहा हूँ, लेकिन मैं किसी बदलाव का अनुभव नहीं कर रहा हूँ। मैं अधीर हो जाता हूँ। मैं आप पर विश्वास करता हूँ कि आप मेरा धीरज और दृढ़ता हैं। मेरी इच्छा को बदलें ताकि मैं विश्वास के कदम उठाए रख सकूँ।'

मेरी इच्छा है कि काश मैं आपको बता सकता कि परिवर्तनों का अनुभव करने से पहले हमें कितने लंबे समय तक 'विश्वास करना' पड़ता है, लेकिन मैं नहीं कर सकता। (यदि परमेश्वर आपको बताता है, तो कृपया मुझे बताएं।) एक बात जो मैंने सीखी है वह यह है कि जब हम बदलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तब परमेश्वर हमारे विश्वास को बढ़ा रहा होता है। इसलिए, जब आप इस अध्याय को पढ़ते हैं, इस सिद्धान्त को 'विश्वास करने' से परमेश्वर के परिवर्तनकारी कार्य का अनुभव करने के लिए लागू करें। इससे पहले कि हम अपनी झूठी धारणा के पाप के तरीकों और घावों को हराने वाले विश्वासों से संबंधित सच्चाई के अमलीकरण में जाएँ, आइये एक महत्वपूर्ण 'विश्वास' के शब्द को देखें जो मैं अपने निजी मार्ग में बार-बार उपयोग करता हूं।

दूसरा दिन

परिवर्तन प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण विश्वास शब्दः सौंपना

"वह गाली सुन कर गाली नहीं देता था, और दुख उठा कर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौपता था।" 1 पतरस 2:23

यदि आप एक मसीही हैं, तो आप भरोसा रखना, माँगना आदि जैसे 'विश्वास' के शब्दों को जानते हैं। हालांकि, एक और शब्द है जो मुझे भरोसा है कि हमारे लिए उपलब्ध सबसे सक्रिय विश्वास शब्दों में से एक है, और यह शब्द 'सौंपना' है। सौंपने का क्या अर्थ है?

सौंपना
कुछ या किसी ऐसे व्यक्ति को सुरक्षित रखने के लिए परमेश्वर को देना जिसे आप ने पकड़ा हुआ हैं।

कई मसीहियों के साथ समस्या यह है कि वे विवादों और परिस्थिति संबंधी संघर्षों को पकड़े हुए हैं जिन्हे परमेश्वर कभी उनके लिए नहीं चाहता था। इसके परिणामस्वरूप दर्द, पीड़ा और हृदय का दर्द होता है। परमेश्वर कभी नहीं चाहता कि आप अपने संघर्षों का स्वामित्व लें। उसकी इच्छा है कि आप हर संघर्ष, हर झगड़े, और हर प्रतिकूल परिस्थिति को उसे सौंप दें। क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि वह अकेला ही है जो वास्तव में आपके संघर्षों से निपट सकता है।

एक उदाहरण है जो मैं इस बिंदु को पूरा करने के लिए कई बार उपयोग करता हूँ कि मेरा एक पसंदीदा मेक्सिकन भोजनालय है जिसमें मैं जाना पसंद करता हूँ। जब वे भोजन लाते हैं, वे मोटे दस्ताने पहने हुए होते हैं और मुझे बताते हैं कि प्लेट गर्म है। हालांकि, एक दिन मैं भूल गया और मैंने प्लेट पकड़ ली। मुझे दर्द महसूस करने के लिए लंबा समय नहीं लगा। कल्पना करें कि यह गर्म प्लेट आपके द्वारा अनुभव किए जा रहे प्रत्येक आंतरिक और बाहरी संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। क्या होगा यदि आप प्लेट को पकड़े रहेंगे? आपको उसके साथ होने वाले दर्द और दुख का अनुभव करना जारी रखना पड़ेगा। मुद्दा यह है कि आपको उस गर्म प्लेट की तरह हर संघर्ष या झगड़े के साथ व्यवहार करना चाहिए। परमेश्वर नहीं चाहता कि आप इसे पकड़े रहे। वह चाहता है कि आप उसे हल करने के लिए उसे सौंप दें।

सच्चाई यह है कि आपको अपने किसी भी आंतरिक और बाहरी संघर्ष का स्वामित्व लेने के लिए नहीं बनाया गया था। परमेश्वर चाहता है कि उन मुद्दों में से प्रत्येक को आप उसे सौंप दें।

इस अध्याय के विषय में, परमेश्वर चाहता है कि आप अपनी झूठी धारणाओं, पाप के तरीकों को हराने, और घावों को उसे सौंप दें ताकि वह उन्हें बदल सके। इसलिए, जब हम परिवर्तन के परमेश्वर के वायदे के विषय में विश्वास के चरणों को देखते हैं, तब मैं आपको उन वायदों का अमलीकरण देने के लिए 'सौंपना' शब्द का उपयोग करूँगा।

परिवर्तन के परमेश्वर के वायदे का अनुभव करने के लिए विश्वास का कदम किस तरह दिखता है?

इस अध्याय के बाकी पाठ के लिए और अगले पाठ के लिए हम यह देखने जा रहे हैं कि परमेश्वर की सामर्थ का अनुभव करने के लिए विश्वास का मार्ग कैसा दिखता है ताकिः

- **अपने हृदय को झूठी धारणाओं की बजाय सत्य पर विश्वास करने के लिए दोबारा से तैयार करें। रोमियों 12:2**
- **आपके पराजित पाप के तरीकों और शारीरिक व्यवहार पर विजय और स्वतंत्रता दें। 1 कुरिन्थियों 15:57; यूहन्ना 8:32**
- **आपके घावों से चंगाई दें। भजन 147:3**

विश्वास के मार्ग और परमेश्वर के वायदों को समझने के लिए महत्वपूर्ण सत्य

इससे पहले कि हम परमेश्वर के वायदो पर विश्वास का मार्ग लागू करना शुरू करें, विश्वास के मार्ग और वायदों के विषय में कुछ कुंजियों को समझना महत्वपूर्ण है जिनका हम अध्ययन करेंगे। मैं बाकी अध्ययन के दौरान इन्हें कई बार दोहराऊँगा।

1. यह समझना महत्वपूर्ण है कि विश्वास का मार्ग एक प्रक्रिया है। यह एक यात्रा है और न कि थोड़ी दूर की तेज दौड़।
2. नतीजतन इससे पहले कि आप सोचने, महसूस करने, चुनने या व्यवहार करने के तरीके में किसी भी बदलाव का अनुभव करे आपको विश्वास के अलग-अलग कदम उठाने पड़ सकते हैं।
3. याद रखें कि जब आप विश्वास के कदम उठाने लगते हैं तो जरूरी नहीं है कि आप परमेश्वर की सामर्थ को अपने भीतर बहता हुआ महसूस या अनुभव करें।
4. परमेश्वर आपको सिखा रहा है कि आप अपने जीवन में बदलाव करने के लिए उस पर विश्वास करें।
5. यदि आप विश्वास के कदम नहीं उठाते हैं, तो आप कभी भी रूपांतरण के परमेश्वर के वायदे का अनुभव नहीं करेंगे।

विश्वास का मार्ग और आपके मन का नवीनीकरण

*'और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु **तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से** तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए...' रोमियों 12:2*

जब मसीही जीवन की बात आती है तो हम सभी प्रकार की झूठी धारणाओं के साथ संघर्ष करते हैं। हम सभी को परमेश्वर, दूसरे लोगों, विवाह, और कुछ लोगों के बारे में मसीही जीवन जीने के विषय में झूठी धारणाएँ है। (इस अध्याय के अंत में उन कुछ झूठी धारणाओं को देखें।) इन झूठी धारणाओं का परिणाम पापी व्यवहार, संदेह, अविश्वास, और हमें विश्वास से चलने से भी बाहर निकलने का कारण बन सकता है। आइये झूठी धारणाओं को परिभाषित करें:

एक झूठी धारणा
वह धारणा है जो परमेश्वर के सत्य के विपरीत है या परमेश्वर की व्यवस्था के साथ खड़ी नहीं होती है।

याद रखें कि मैंने पहले क्या कहा था कि 'आप जो विश्वास करते हैं उससे परे नहीं रहेगे। यदि आप झूठ पर विश्वास कर रहे हैं, तो आप उस तरह से जीएंगे।' अगर हम परमेश्वर को हमारे मन को सत्य के लिए नवीनीकृत होने की अनुमति नहीं देते हैं, तो हम अपने झूठी धारणाओं में बंधे रहेगे। यह बंधन हमें लगातार झूठी सोच, गलत विकल्प और शारीरिक व्यवहार में बंद रखेगा। इसलिए, आपके मन को नवीनीकृत करने में परमेश्वर का उद्देश्य आपको अपनी सच्चाई के साथ आपकी झूठी धारणाओं को बदलकर स्वतंत्र करना है। जैसे ही वह ऐसा करता है, यह आपकी सोच, आपके विकल्पों और आपके शारीरिक व्यवहार को बदल देगा।

यही कारण है कि रोमियों 12:2 के अनुसार हमारे मनों को नवीनीकृत करने का वायदा विश्वास और परिवर्तन के हमारे मार्ग के लिए इतना महत्वपूर्ण है। जारी रखने से पहले समझने के लिए एक महत्वपूर्ण सत्य हैः

महत्वपूर्ण मूल सत्यः
आप अपने मन को परमेश्वर की सच्चाई के लिए नवीनीकृत नहीं कर सकते हैं।
केवल परमेश्वर ही नवीकरण और परिवर्तन को पूरा कर सकता है।

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि कई मसीही मानते हैं कि वे अपने मन को नवीनीकृत कर सकते हैं। सच्चाई यह है कि केवल परमेश्वर ही इसे पूरा कर सकता है। यह एक और बात है कि जब यूहन्ना 15:5 में यीशु कहता है, 'मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते' इसलिए, आइये झूठी धारणाओं के कुछ उदाहरण देखें और विश्वास के इन कदमों को हम अपने मन को नवीनीकृत करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ को शामिल करने के लिए ले सकते हैं।

उदाहरण # 1ः आइये मान लीजिए कि अब तक आप इस झूठ पर विश्वास कर रहे हैं कि परमेश्वर की सहायता से मसीही जीवन जीना आप पर निर्भर है। अब जब आप सच्चाई को जानते हैं कि गलातियों 2:20 के अनुसार आप में केवल मसीह ही मसीही जीवन जी सकता है, तो आप इस सच्चाई को अपने मन को नवीनीकृत करने के लिए विश्वास से परमेश्वर के साथ जोड़ सकते हैं।

विश्वास का कदमः 'हे प्रभु, मैं इस झूठ पर विश्वास करता रहा हूँ कि मैं आपकी मदद से मसीही जीवन जी सकता हूं। लेकिन सच्चाई यह है कि मैं इसे नहीं जी सकता। इसलिए, मैं अपनी झूठी धारणाओं को आपको सौंपता हूं और मैं आपको मेरे मन को सच्चाई में नवीनीकृत करने के लिए विनती करता हूँ कि केवल आप ही मेरे भीतर और मेरे माध्यम से मसीही जीवन जी सके।'

उदाहरण # 2ः आइये मान लीजिए कि आप इस झूठी धारणा पर विश्वास करते है कि जब आप पाप करते हैं या जब आप असफल होते हैं तो परमेश्वर आप का न्याय या निंदा करते हैं। रोमियों 8:1 में पाई गई सच्चाई यह है कि आपके पापों से संबंधित परमेश्वर की निंदा नहीं होती है क्योंकि आपके सभी अतीत, वर्तमान और भविष्य के पापों को क्षमा किया गया है। उनका क्रूस पर मसीह की मृत्यु द्वारा भुगतान किया गया है, क्षमा कर दिया गया है, और अब उन्हे और याद नहीं किया जाता है।

विश्वास का कदमः 'हे प्रभु, मैं अब भी इस झूठी धारणा पर विश्वास कर रहा हूँ कि जब मैं पाप करता हूँ या असफल होता हूँ तो आप मुझे दोषी ठहराते हों। मैं उस पाप को अंगीकार करता हूँ और पश्चाताप करता हूँ, और मैं इस झूठी धारणा को आप को सौंपता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि आप मेरे मन को इस सच्चाई में नवीनीकृत करें कि जब मैं पाप करता हूँ तो आप मेरी निंदा या न्याय नहीं करते हैं।'

***महत्वपूर्ण टिप्पणीः** जब आप पाप करते हैं, तो उस पाप को स्वीकार करना और पश्चाताप करना आवश्यक है। अंगीकार करने के लिए सिर्फ परमेश्वर के साथ सहमत होना है कि आपने यह पाप किया है, और पश्चाताप् करने के लिए यह स्वीकार करना है कि आपने जो किया है उसके लिए आपको खेद है और आप पाप से दूर हो रहे हैं और परमेश्वर के पास वापस आ रहे हैं।

उदाहरण # 3ः आप इस झूठ को मानते हैं कि यह आपके पति/पत्नी के ऊपर है आपको बिना शर्त से स्वीकार करना। हम इसे अपने आप में और अपने आप से नहीं कर सकते क्योंकि हम केवल एक दूसरे को तब स्वीकार करते हैं जब कुछ शर्तो को पूरा किया जाता है। सच्चाई यह है कि हमारी बिना शर्त की स्वीकृति केवल मसीह से आ सकता है।

विश्वास का कदमः 'हे प्रभु, मैं इस झूठ पर विश्वास कर रहा हूँ कि यह मेरे पति / पत्नी के ऊपर है मुझे बिना शर्त के स्वीकार करना। मैं आपको यह झूठ सौंपता हूँ और आपको सच्चाई में अपने मन को नवीनीकृत करने के लिए प्रार्थना करता हूँ कि बिना शर्त (अप्रतिबंधित) स्वीकृति की जरूरत केवल आपसे पूरी हो सकती है।'

अभ्यासः इस अध्याय के अंत में 'झूठी धारणाओं' के शीर्षक वाली सूची देखें। झूठी धारणाओं में से कुछ चुनें जिनके लिए आप चाहते हैं कि आपका मन नवीनीकृत हो या परमेश्वर से आपको एक विशेष झूठी धारणा को प्रकट करने के लिए कहें जिससे वह आपको स्वतंत्र करना चाहता है। फिर अपने मन को नवीनीकृत करने के लिए विश्वास के कदम उठाना शुरू करें। आप नीचे दिए गए उदाहरण का उपयोग कर सकते हैं।

उदाहरणः 'प्रभु, मैं इस झूठ पर विश्वास कर रहा हूँ कि ....। मैं इस झूठ को आपको सौंपता हूँ और आपसे अपने मन को नवीनीकृत करने और इस झूठ को आपकी सच्चाई से बदलने के लिए विनती करता/करती हूं।'

जब आप सच्चाई के प्रति अपने मन को नवीनीकृत करने के लिए परमेश्वर को खोजते हैं, तब उसे अपने विचारों, विश्वासों और विकल्पों में किए गए परिवर्तनों को प्रकट करने के लिए कहें।

महत्वपूर्ण मूल सत्यः विश्वास के मार्ग और आपके मन के नवीनीकरण के विषय मेंः

1. याद रखें कि आपके मन का नवीनीकरण एक प्रक्रिया है। यह रातोंरात नहीं होगा।
2. आपकी कुछ झूठी धारणाएँ दूसरों की तुलना में मजबूत हैं क्योंकि आपने उनका लंबे समय तक विश्वास किया है।
3. इसलिए, आप अपनी सोच या व्यवहार में किसी भी बदलाव का अनुभव करने से पहले कुछ समय के लिए विश्वास से चलते रह सकते हैं।
4. आप अपनी झूठी धारणाओं से अवगत नहीं हो सकते हैं, इसलिए परमेश्वर से आपके ऊपर उन झूठी धारणाओं को प्रकट करने के लिए कहें।
5. परमेश्वर को उस विचार या व्यवहार को प्रकट करने के लिए खोजें जो आपको बदल रहे हैं जब आप अपने मन को नवीनीकृत करने के लिए उसे खोज रहे हैं। (यह महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवर्तन बहुत सूक्ष्म हो सकते हैं।)

तीसरा दिन

अपने शारीरिक व्यवहार और दृढ़ गढ़ों पर विजय और स्वतंत्रता का अनुभव करने के लिए विश्वास का मार्ग।

*'क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है **हमारा विश्वास** है।'1 यूहन्ना 5ः4*

हम सभी में पाप करने के तरीके और शारीरिक व्यवहार होते हैं जिनके ऊपर हम जीत या स्वतंत्रता चाहते हैं। हालांकि, हमारी प्रवृत्ति क्षमता के माध्यम से उस जीत और स्वतंत्रता को हासिल करने का प्रयास करना होता है। क्या यह दिलचस्प नहीं है कि उपरोक्त आयत में यूहन्ना ने यह नहीं कहा कि यह हमारी ताकत, क्षमता और इच्छाशक्ति है जो विजय उत्पन्न करती है। विजय विश्वास के द्वारा आती है। मसीह हमारी विजय और स्वतंत्रता है, और विश्वास से भरोसा करके, वह हमारे पराजित पाप के तरीकों और शारीरिक व्यवहार पर विजय उत्पन्न करता है। विजय और स्वतंत्रता पाने की परमेश्वर की प्रक्रिया को देखने से पहले, मैं देह, शारीरिक व्यवहार और गढ़ों के अर्थ को देखना चाहता हूँ।

देह क्या है?

पौलुस रोमियों 7 में निम्नलिखित तरीकों से अपनी देह का वर्णन करता हैः

'क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शरीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूँ।' रोमियों 7ः14

'क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते।' रोमियों 7ः18

हम देह को कैसे परिभाषित करते हैं?

'देह' शब्द का बाइबल अर्थ परमेश्वर से स्वतंत्र होकर या अलग होकर स्रोत के रूप में और अपने स्रोत के रूप में जीवन जीने की मनुष्य की इच्छा है।

उद्धार से पहले, हमने सीखा कि हमारे पास अपनी समस्याओं को हल करने, जीवन से निपटने और सफलता पाने के स्रोत के रूप में स्वयं (हमारी देह) पर निर्भर रहने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था। हम अपने स्रोतों के रूप में परमेश्वर से अलग होकर अपने संसाधनों (जैसे शिक्षा, बुद्धि, व्यक्तित्व, दिखावा, प्रतिभा, गुणों, क्षमताओं, आत्म-अनुशासन, और आत्म-शक्ति) से जीवन जी रहे थे। जब हमने ऐसा किया, इसने जीवन के स्रोत बनने की हमारी इच्छा को मजबूत किया।

जब हमने उद्धार पाया, तो उस उद्धार में परमेश्वर के दो उद्देश्य थे। वह पहले हमें हमारे पापों से बचाना चाहता था। दूसरा, उसने हमें हमसे बचाने के लिए अपने जीवन या शक्ति को डाला या हमारे 'आत्म-जीवन' को रखा, जिसे बाइबल 'देह' कहती है। मैं बस हमारे 'आत्म-जीवन' को परिभाषित करता हूँ जो हमारे भीतर उस दृष्टिकोण के रूप में कहता है, 'यह सब मेरे विषय में है!'

(नोटः इस बिंदु पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को बुद्धि, प्रतिभा, क्षमताओं इत्यादि दिया है। हालांकि, परमेश्वर ने कभी भी उन प्रतिभाओं और क्षमताओं से हमे स्वतंत्र रूप से जीवित रहने की इच्छा नहीं की थी।)

हमारा शरीर द्वारा जीना हमेशा परमेश्वर से स्वतंत्र रहने की इच्छा को पैदा करेगा। क्योंकि हमें परमेश्वर पर निर्भर रहने के लिए बनाया गया था, इसलिए हम कभी भी उस जीवन का उत्पादन नहीं करेंगे जिसका वायदा परमेश्वर ने किया है यदि हम अपने शरीर द्वारा जीना चाहते हैं।

मुझे आपसे दो प्रश्न पूछने दें, 'क्या यह संभव है कि आप अपनी बाहरी समस्याओं, अपने आंतरिक संघर्षों और अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों से निपटने के लिए परमेश्वर से अलग परमेश्वर द्वारा दी गई प्रतिभा, क्षमताओं, ताकत और इच्छाशक्ति का उपयोग कर रहे हों?' क्या आप मसीही जीवन जीने के अपने स्वयं के प्रयास से कोशिश कर रहे हैं? 'यदि हाँ, तो मेरा एक और प्रश्न है'

'यह आपके लिए कितने अच्छे ढंग से काम कर रहा है?'

हम में से कुछ के लिए यह रूप-रंग हो सकता है कि यह काम कर रहा है। लेकिन, वास्तविकता यह है किः

परमेश्वर ने इस जीवन को ऐसा बनाया है कि जब तक आप उस पर निर्भर नहीं होते हैं, तब तक वास्तव में काम नहीं करेंगे।

देह की विशेषताएँः

हमें अपनी देह की बेहतर समझ देने के लिए, आइये देह की कुछ विशेषताओं का पता लगाएँ।

'**देह**' एक **स्वतंत्र दृष्टिकोण** है जो कहती है'

- **मैं** नियंत्रित कर सकता हूँ।
- **मैं** अपनी जरूरतों को पूरा कर सकता हूँ।
- **मैं** सभी समस्याओं को संभाल या दूर कर सकता हूँ।
- **मैं** विवाह, परिवार, नौकरी, वित्त इत्यादि से संबंधित हर परिस्थिति से निपट सकता हूँ।
- **मैं** सफल हो सकता है।
- **मैं** अपने खुद की ईश्वर बन सकता हूँ।

क्योंकि देह में रहने की इच्छा इतनी प्रबल होती है, कि शारीरिक इच्छाएं हमेशा हमें परमेश्वर से स्वतंत्र होकर 'मैं कर सकता हूँ' के स्थान पर लाती हैं।

देह से जीवित रहने से शारीरिक व्यवहार उत्पन्न होता है।

जब आप देह में जीते हैं, उसका परिणाम शारीरिक व्यवहार होता है।

*'__शरीर के काम__ तो प्रगट हैं, अर्थात **व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के __जैसे और और काम__ हैं**.....' गलातियों 5:19-21क*

देह से जीने के लिए एक और नकारात्मक पक्ष है। यह केवल 'देह के काम' को उत्पन्न करेगा जो गलातियों 5:19-21 में सूचीबद्ध शारीरिक स्वभाव या शारीरिक व्यवहार हैं। मैं सिर्फ निम्नानुसार शारीरिक व्यवहार को परिभाषित करता हूँ:

शारीरिक व्यवहारः
ऐसा कोई भी व्यवहार जिसे हम परमेश्वर से स्वतंत्र होकर
जीवन जीने के रूप में प्रदर्शित करते हैं।

आपकी झूठी धारणाओं से बड़े पैमाने पर शारीरिक स्वभाव और व्यवहार निर्वाह होते हैं। वे दो रूपों में आते हैंः सकारात्मक देह और **नकारात्मक** देह। नीचे नकारात्मक और **सकारात्मक** देह के कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

नकारात्मक देह के उदाहरणः क्रोध, अपर्याप्तता, क्षमा, ईर्ष्या, नियंत्रण, भय, चिंता

सकारात्मक देह के उदाहरणः आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्म-पर्याप्तता, सफलता, स्वयं में मजबूत

नोटः सकारात्मक देह को पहचानना कठिन होता है क्योंकि यह बहुत आकर्षक लग सकता है, लेकिन यह अभी भी देह ही है। सकारात्मक देह को परिभाषित करने का महत्वपूर्ण शब्द 'स्वयं' है।

__**अभ्यासः**__ इस अध्याय के अंत में शारीरिक व्यवहार की सूची पर जाएँ और पाँच शारीरिक व्यवहार लिखें जो आपके लिए सबसे __अधिक__ लागू होते हैं।

____

____

____

____

____

____

__चौथा दिन__

__आपके दैहिक व्यवहार के अनुसार जीने के क्या परिणाम होते हैं?__

अगर हम अपने दैहिक व्यवहार से जीना चुनते हैं, तो बाइबल हमें रोमियों 8:6 में बताती है कि इसका परिणाम ''**मृत्यु**'' है।

*''__**शरीर**__ पर **मन** लगाना तो __**मृत्यु**__ है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।''*

इस ''मृत्यु' को स्ट्राँग लिक्सन में ''**पाप के परिणामस्वरूप हमारी आत्मा की पीड़ा' परिभाषित किया गया है**। यदि आप अपने दैहिक व्यवहार और मनोभाव के साथ जी रहे हैं तो परिणाम अनिवार्य रूप से आपकी आत्मा में ''पीड़ा'' होगी।

आत्मा के 'दुख' के कुछ उदाहरण क्या हैं?

दोष	तनाव	चिंता	शर्मिंदगी	अक्षम्यता
अशांति	गुस्सा	ग्लानि	उग्रता	कड़ुवाहट
आत्म-दया	अपर्याप्तता	डर	चिंता	निराशा
अयोग्यता	दोष	अस्वीकृति	असुरक्षा	असंतोष

प्रश्नः जब आप इस सूची को पढ़ते हैं, तब क्या आप आत्मा के दुखों में से किसी भी विशेषताओं का अनुभव कर रहे हैं?

जब मैं अपने शारीरिक व्यवहार में जाता हूँ और थोड़ी देर के लिए वहाँ रहता हूँ, तो मैं उसे 'प्रोडिगल पिगपेन (उड़ाऊ सूअर का बाड़ा)' में जाना कहता हूँ। उस उड़ाऊ पुत्र को याद रखें जिसने स्वतंत्र रूप से रहने का फैसला किया और पिगपेन (सूअर बाड़ा) में अंत किया? जब हम देह से जीते हैं तो हमारे साथ भी यही होता है। हम अपनी देह के मिट्टी और मक्खन में उड़ाऊ पुत्र की तरह 'लोटते' हुए खत्म हो जाते हैं। पतरस 2 पतरस 2:22 में इस सत्य को संबोधित किया गया हैः

*''उनके लिए यह नीतिवचन सत्य हैंः 'कि **कुत्ता अपनी छाँट की ओर** और **धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लोटने के लिये फिर चली जाती है।'''***

कुत्ता अपनी छाँट या सूअरनी मिट्टी में फिर से लोटने के लिए चले जाते हैं, जो शारीरिक व्यवहार से जीने की महान तस्वीरों की तरह है। यदि यह मामला है, तो हम देह पर वापस क्यों जाते रहते हैं? यहाँ फिर से, यह वही है जिसका हम उपयोग करते हैं। कैसी विडम्बना लगती है, हमने अपने घर में रहना और हमारी देह के दुख के साथ सहज महसूस करना सीखा है। क्या यह आपको परेशान करता है? मुझे आशा है।

परमेश्वर आपको आपके शारीरिक व्यवहार से स्वतंत्र करना चाहते हैं।
उसकी सामर्थ में विश्वास से चलना ही उड़ाऊ सूअर बाड़े से बाहर निकलने का एकमात्र तरीका है!

आइये अब मजबूत (दृढ़) गढ़ों के अर्थ को देखें।

मजबूत गढ़ - शारीरिक सोच, विश्वास, या व्यवहार के पुनरावर्ति और समर्थन करने वाले तरीके।

हम सभी के शारीरिक व्यवहार होते हैं, और उनमें से प्रत्येक शारीरिक व्यवहार के हमारे जीवन पर पकड़ के अलग-अलग परिणाम होते हैं। जिन शारीरिक व्यवहारों की हमारे ऊपर बहुत मजबूत पकड़ होती है, उन्हें मैं 'गढ़' कहता हूँ। मैं साधारणतः निम्नानुसार मजबूत गढ़ को परिभाषित करता हूँः

मजबूत गढ़ः
ऐसे शारीरिक व्यवहार जिनकी आपके ऊपर इतनी पकड़ होती है कि आपको यह विश्वास नहीं होता
कि आप कभी भी उनसे स्वतंत्र हो सकते हैं।

मजबूत गढ़ के कुछ और स्पष्ट उदाहरण अश्लील साहित्य, अधिक भोजन करना और दवाईयाँ हैं। हालांकि, पुराने डर, चिंता, गर्व, आत्मविश्वास, और क्रोध भी गढ़ के उदाहरण हैं। इसलिए, आइये हम इन गढ़ों से स्वतंत्र होने के विषय में परमेश्वर की सच्चाई को देखें।

स्वतंत्रता के लिए परमेश्वर का वायदा

यूहन्ना 8:32 में हमारे शारीरिक व्यवहार और गढ़ों के विषय में परमेश्वर का वायदा मिलता हैः

'तुम सत्य को जानेंगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।'

इस पद में 'जानना' केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं है। 'जानना' का अर्थ है कि पवित्र आत्मा ने आपको बाइबल की सच्चाई का व्यक्तिगत प्रकाशन दिया है। इसके विषय में भी सोचें। यीशु यूहन्ना 14:6 में कहता है, 'मैं सत्य हूँ।' इसलिए, जब पवित्र आत्मा हमें उसके

वचन का प्रकाशन देता है, और हम विश्वास के कदम उठाते हैं, तब मसीह हमारे सत्य के रूप में हमें स्वतंत्र कर देगा।

जैसे-जैसे हम मसीह की स्वतंत्रता और परमेश्वर की सामर्थ की ओर खींचकर विश्वास के कदम उठाते हैं कि वह हमें स्वतंत्र करे, तब हम पूरी तरह से स्वतंत्रता का अनुभव करेंगे जैसे हम चाहते हैं।

अच्छी खबर यह है कि आपको स्वतंत्र करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ से अधिक बढ़कर और कोई मजबूत गढ़ नहीं है। मैं इस विषय में गवाही दे सकता हूँ क्योंकि परमेश्वर ने मुझे अश्लील साहित्य, पुराने डर, चिंता, और एक महत्वपूर्ण और आलोचनात्मक रवैया के गढ़ से स्वतंत्र कर दिया है। वह आपके लिए भी ऐसा ही करेगा। आइये शारीरिक व्यवहार और मजबूत गढ़ों से स्वतंत्रता का अनुभव करने के लिए विश्वास के चरणों के कुछ उदाहरण देखें।

शारीरिक व्यवहार और मजबूत गढ़ों से स्वतंत्रता के विषय में विश्वास के चरणः

उदाहरण # 1ः आइये मान लीजिए कि आपके पास क्रोध का शारीरिक व्यवहार है। परमेश्वर का वायदा है कि वह आपको आपके क्रोध से स्वतंत्र करता है। इसलिए, विश्वास का कदम आपको स्वतंत्र करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ लाने के लिए कैसे दिखता है?

विश्वास का कदमः 'प्रभु, मैं क्रोधित होने के स्वभाव के साथ संघर्ष करता हूँ। मैं अपने क्रोध के शारीरिक व्यवहार को आपको **सौंप** रहा हूँ, और मैं आप पर इस से स्वतंत्र करने के लिए **भरोसा** कर रहा हूँ। मेरी क्रोधित होने की इच्छा को दूर ले जाएँ।'

मुख्य बिंदुः आपके क्रोध की स्थिति और गहराई (अधिकांश भाग के लिए) निर्धारित करेगी कि इससे स्वतंत्र होने में आपको कितना समय लग सकता है। क्रोध की गहराई जितनी अधिक होगी, उससे स्वतंत्र होने के लिए उससे अधिक समय लगेगा।

आइये मजबूत गढ़ का एक उदाहरण देखें और स्वतंत्र होने के लिए विश्वास से चलना कैसा लगता है।

उदाहरण # 2ः मान लीजिए कि आपके पास अश्लील साहित्य का मजबूत गढ़ है। इस संघर्ष से स्वतंत्र होने में विश्वास के कदम कैसे दिखेंगे?

विश्वास का कदमः 'हे प्रभु, मैं अश्लील साहित्य के इस गढ़ से खुद को स्वतंत्र करने के लिए शक्तिहीन हूँ। मैं आपको आपकी सामर्थ में मुझे स्वतंत्र करने के लिए **विनती** करता/करती हूँ।'

टिप्पणीः मान लीजिए कि आप विश्वास के कई कदम उठाते हैं, लेकिन आपने स्वतंत्रता की वास्तविक स्थिति का अनुभव नहीं किया है। (याद रखें कि परमेश्वर की सामर्थ हमेशा हमारे विश्वास के माध्यम से काम कर रही होती है, भले ही हम पल पल उसका अनुभव नहीं कर रहे हों।) इस बिंदु पर विश्वास का कदम इस तरह दिख सकता हैः

विश्वास का कदमः 'हे प्रभु, मैंने विश्वास के कई कदम उठाए हैं, और मैं अश्लील साहित्य के अपने संघर्ष से स्वतंत्र नहीं हो पा रहा हूँ। मैं आपको अपनी ताकत और दृढ़ता बनने के लिए **प्रार्थना** करता हूँ ताकि मैं विश्वास के कदम उठाता रहूँ।'

इस प्रक्रिया के दौरान विश्वास का एक और कदम इस तरह दिख सकता हैः

विश्वास का कदमः 'प्रभु, मुझे यह समझाएँ कि आप मुझे अश्लील साहित्य से स्वतंत्र करने के लिए काम कर रहे हैं, भले ही मैं आपकी सामर्थ को महसूस नहीं कर सकता।'

जब आप विश्वास के इस मार्ग को जारी रखते हैं, तब आप पाएँगे कि आप खुद को अश्लील साहित्य में नहीं जाने दे रहे हैं। हालांकि, आप अधीन हो सकते हैं और वापस जा सकते हैं। उस समय याद रखें कि आप अधिकांश संघर्षों के लिए, असफलताओं के बाद विजय की स्थिति का अनुभव करेंगे। विफल होने पर अपने आप को मारे-कूटे नहीं। ऐसा होने की आशा की जाती है। हम अगले अध्याय में इसके विषय में और चर्चा करेंगे। जब आपको कुछ सफलता मिलती है और आप फिर विफल हो जाते हैं, तो विश्वास का एक और कदम उठाएँ जो ऐसा दिखाई दे सकता हैः

विश्वास का कदमः 'हे प्रभु, मुझे स्वतंत्र करना शुरू करने के लिए धन्यवाद। हालाँकि, मैं असफल होता हूँ और फिर से अश्लील साहित्य में वापस चला जाता हूँ। मैं अंगीकार करता हूँ और इसके विषय में पश्चाताप करता हूँ। मुझे याद दिलाना जारी रखें कि यह स्वतंत्रता का मार्ग एक यात्रा है और इसे पूरी तरह से स्वतंत्र होने में समय लगेगा।'

विश्वास के मार्ग और मसीह की स्वतंत्रता का अनुभव करने के विषय में महत्वपूर्ण मूल सत्यः

1. आपके पराजित पाप के तरीके या शारीरिक व्यवहार की गहराई की पकड़ कुछ दर्जे तक निर्धारित करेगी कि स्वतंत्रता को महसूस करने या अनुभव करने में कितना समय लग सकता है।
2. आप अपने पाप के तरीकों या शारीरिक व्यवहार से कई बार पराजित हो जाते हैं जब आप विश्वास से चलते हैं। यह ठीक है इसमें आप तत्काल स्वतंत्रता की उम्मीद नहीं कर सकते हैं। उन क्षणों में जब आप पाप करते हैं, उस पाप का पश्चाताप करें और विश्वास से चलते रहें।
3. सच्चाई यह है कि आप अनुभवी स्वतंत्रता की ओर चलने में कई बार असफल हो जाएंगे। हालांकि, जब आप विश्वास से चलना जारी रखते हैं, तो आप लगातार मसीह की स्वतंत्रता का अनुभव करते जाएंगे।
4. आत्मिक रूप से सतर्क रहें और परमेश्वर से आप पर यह प्रकट करने के लिए कहें कि वह आपको स्वतंत्र कर रहा है।

मेरी स्थायी चिंता से स्वतंत्र होने की एक व्यक्तिगत कहानीः

क्योंकि स्थायी चिंता ने मुझे 40 से अधिक वर्षो तक नष्ट किया था, इसलिए स्वतंत्रता का अनुभव शुरू करने के लिए मुझे विश्वास के कई कदम उठाने पड़े। मैं परमेश्वर की इस सच्चाई से कि वह मेरी शांति है और उसे लगातार विश्वास करने से दूर चला गया। फिर धीरे-धीरे मेरी चिंता कम होती गई। इस प्रक्रिया में कई बार मैं अपनी चिंता से अभिभूत था। उस समय, मैंने अपनी चिंता को अंगीकार किया और पश्चाताप् किया और विश्वास के कदम उठाए।

जब परमेश्वर ने मुझे समझाया कि वह मेरी शांति है और संप्रभु और नियंत्रण में है, तब फिर मैंने अपनी स्थायी चिंता में रहने पर विश्वास नहीं किया। इसका मतलब यह नहीं है कि अब मैं किसी भी स्थिति के विषय में चिंतित नहीं हूँ। इसका अर्थ है कि मैं अब उस स्थायी स्थिति या चिंता के रवैया में नहीं रहता हूं। यह एक यात्रा रही है, लेकिन अब जिस स्वतंत्रता का मैं अनुभव कर रहा हूँ वह विश्वास के मार्ग में चलने के योग्य थी।

अभ्यासः कम से कम तीन शारीरिक व्यवहार और मजबूत गढ़ों को लिखें जिनसे आप स्वतंत्र होना चाहते हैं।

____

____

____

परमेश्वर को शामिल करनाः विश्वास के कदम उठाना शुरू करें और परमेश्वर से आपको स्वतंत्र करने के लिए कहें। उस समय के दौरान उसे अपनी ताकत, धैर्य और दृढ़ता बनने के लिए कहें, जब आप हार मानना चाहते हैं या विश्वास नहीं करते कि वह कार्य कर रहा है। उसे आपको सूक्ष्म परिवर्तनों के विषय में जो स्वतंत्र करने में आ सकते हैं, जागरूक करने के लिए कहें।

चोट की भावना से चंगाई का अनुभव करने के लिए विश्वास का मार्ग

'वह खेदित मन वालों को चंगा करता है, और उनके शोक पर मरहम-पट्टी बान्धता है।' *भजन 147:3*

'मैं तेरा इलाज कर के तेरे घावों को चंगा करूँगा ...' यिर्मयाह 30:17

आज कई मसीही अपने जीवन में कुछ हद तक घायल हैं। घायलता कई रूपों में आ सकता हैः

- **दुर्व्यवहार** - जो शारीरिक, भावनात्मक, यौन, या मौखिक रूप में आता है।
- **आघात** - तलाक, मृत्यु, या तिरस्कार।

- **दुर्घटनाएं** - दीर्घकालिक स्वास्थ्य या गतिशीलता की समस्याएं पैदा करना।

चोटग्रस्ता को समझने की कुंजी यह है कि यह ऐसी कोई घटना या घटनाएँ नहीं है जो चोटग्रस्ता को पैदा करती है। यह एक समस्या है। इसके बजाय, यह **घायल करने वाली** घटनाओं के परिणामस्वरूप झूठी धारणाएँ आती है।

मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। मैं एक महिला को सलाह दे रहा था जिसका अपने पिता द्वारा यौन शोषण हुआ था। उस दुर्व्यवहार से वह यह विश्वास कर बैठी थी कि वह गंदी और बेकार है। वह एक

मसीही व्यक्ति से मुलाकात करती है और फिर विवाह करती है। उसने कहा कि वह बहुत ही ईश्वरीय पति था और उसे बहुत अच्छी तरह से रखता था। हालांकि, गंदे और बेकार महसूस करने की उसकी झूठी धारणा की वजह से, वह किसी भी प्रकार की यौन घनिष्ठता का अनुभव नहीं कर पाती थी। इसने अंततः विवाह को विफल कर दिया क्योंकि वह कभी भी उसके दुर्व्यवहार के आसपास जो झूठी धारणा थी उससे उसने कभी चंगाई नहीं पाई।

परमेश्वर आपके मन को अपने सत्य से नवीनीकृत करके और आपकी घायलता के आस-पास की झूठी धारणाओं से स्वतंत्र करने के लिए आपकी घायलता को चंगा करने का वायदा करता है।

इसलिए, आइये हम चंगाई की परमेश्वर की प्रक्रिया को देखें। जब आप इसे याद रखते हैं कि यह कोई घायलता की घटना नहीं है जो समस्या है। यह झूठी धारणाएँ हैं जो इन घायल घटनाओं का परिणाम होती हैं।

पाँचवां दिन

आपकी घायलता से चंगाई के विषय में विश्वास के चरणः

उदाहरण # 1: मान लीजिए कि आपने अपनी माँ या पिता से चोट अनुभव किया है जब आप बड़े हो रहे थे और इसने आपमें यह विश्वास भर दिया कि तिरस्कृत या अस्वीकार्य हैं। नीचे विश्वास के कुछ कदम हैं जिससे कि आप चंगाई के लिए परमेश्वर की सामर्थ पर मनन कर सकते हैं।

विश्वास का कदमः ‘‘हे परमेश्वर, एक बच्चे के रूप में मेरे साथ मौखिक रूप से दुर्व्यवहार किया गया था, और मैं गहराई से घायल हूँ। नतीजतन, मेरा मानना है कि मुझे अस्वीकार कर दिया गया है और मैं तिरस्कृत हूँ। मैं आपके हाथों में अपने चोट की भावनाओं को सौंप रहा हूँ और विश्वास से मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे मन को उस सच्चाई के प्रति नया बनायें कि आप बिना किसी शर्त के मुझे स्वीकार करते हो और मुझे अब इस बात पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है कि मैं अस्वीकार्य हूँ।’’

उदाहरण # 2: आप एक अपमानजनक पति के द्वारा आहत हुए हैं जिसके कारण तलाक हो गया।

विश्वास का कदमः ‘‘हे परमेश्वर, मेरी शादी और तलाक के परिणामस्वरूप मैं अपने आप को बेकार महसूस करता/करती हूँ। मैं आपको अपनी चंगाई के लिए विश्वास करता/करती हूँ और मुझे यह भरोसा दिलाएं कि मेरा मूल्य केवल आप में ही पाया जा सकता है।’’

याद रखेंः यदि आपके घाव वर्षों पुराने हैं या लम्बे समय से आपके साथ है, तो इसमें परमेश्वर के चंगाई को महसूस करने या अनुभव करने में समय लगेगा। यदि आप आज किसी ऐसी परिस्थिति में हैं जो चोट पहुँचा रही है, तो आपको उस स्थिति में परमेश्वर को अपनी सुरक्षा और ताकत बनने के लिए विश्वास करने के कदम उठाने में और अधिक आवश्यकता पड़ सकती है।

परमेश्वर को शामिल करेंः क्या आपने अपने अतीत में किसी घायलता का अनुभव किया है? यदि ऐसा है, तो अपनी घायलता को घेरे हुए झूठी मान्यताओं से हटकर सच्चाई के प्रति अपने मन को नवीनीकृत करने के लिए परमेश्वर की ओर विश्वास के कदम उठाना शुरू करें।

महत्वपूर्ण नोटः आप अपनी घायलता से जुड़े झूठी मान्यताओं को शायद नहीं जानते होंगे लेकिन परमेश्वर जानता है। इसलिए, अपने मन को नया करने और आपको स्वतंत्र करने के लिए परमेश्वर की खोज करें।

घायलता और अक्षम्यता

जब आप किसी अन्य व्यक्ति द्वारा चोटिल होते हैं तो घायलता और अक्षम्यता एक साथ चलती है। घाव की गहराई के कारण, झूठ यह है कि आप इस व्यक्ति को, जो उसने किया है, उसके लिए संभवतः माफ नहीं कर पाएंगे। हालांकि, यह एक झूठ है क्योंकि मसीह की पूरी क्षमा आपके पास उस व्यक्ति के लिए उपलब्ध है जिसने आपको चोट पहुँचाई है। समस्या माफ करने की हमारी अनिच्छा में है। हम बाइबल से जानते हैं कि हमें क्षमा करनी है, लेकिन हमारी इच्छा उस व्यक्ति को क्षमा करने के लिए प्रतिरोधी है। 48 साल तक मेरे पिता को माफ करने की मेरी अनिच्छा के कारण मैं इस बात को जानता हूं। हालांकि, परमेश्वर ने मुझे एक बहुत ही अलौकिक तरीके से मुझे अक्षम्यता से क्षमा करने के लिए आगे बढ़ने में उसकी क्षमता को मुझे दिखाया। मुझे आपके साथ बाँटने दो कि परमेश्वर ने मुझे कैसे चंगा किया।

मेरे पिताजी के प्रति अक्षम्यता का व्यक्तिगत उदाहरण

मेरे पिता के मौखिक, शारीरिक, और भावनात्मक दुर्व्यवहार के गहरे जख्मों के कारण, मैं क्रोधित, कड़वाहट लिए, और उन्हें माफ करने के लिए अनिच्छुक था। परमेश्वर स्पष्ट रूप से जानते थे कि मैं माफ करने के लिए तैयार नहीं था। हालांकि, उसने मेरे विचारों द्वारा मुझसे बातें की और कहा, ''मुझे पता है कि तुम अपने पिता को माफ करने के इच्छुक नहीं हो। क्या तुम मुझे तुम्हारे पिता को क्षमा करने देने के लिए तैयार हो?' उस समय, मैं अपने पिता को माफ करने के लिए इच्छुक नहीं था, लेकिन मैं परमेश्वर को मेरे माध्यम से मेरे पिता को माफ करने की अनुमति देने के लिए तैयार था। यहां विश्वास के कदमों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जिन्हें मैंने उठाये:

विश्वास का कदम: 'हे प्रभु, मैं अपने पिता को माफ नहीं कर सकता जिसने मुझसे दुर्व्यवहार किया और चोट पहुँचाई है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरी माफी बनें और मेरे पिता को मेरे माध्यम से माफ करे। मैं आप पर मुझे माफ करने की अनिइच्छा से इच्छा की ओर ले जाने का भरोसा करता हूँ।'

विश्वास के द्वारा 18 महीने की अवधि में मेरे पिताजी को क्षमा करने के लिए परमेश्वर को खोजने के बाद, परमेश्वर ने मेरा दृष्टिकोण बदलना शुरु कर दिया। उसने अलौकिक रूप से मेरी इच्छा को एक बिन्दु पर ले आया जहां 18 महीने के अंत में, परमेश्वर ने मुझसे पूछा कि क्या मैं अपने पिताजी का माफ करने के लिए तैयार था। मैंने कहा, ''हाँ''। जब मैं अपने पिता को माफ करने की इच्छा जारी रखी (यह कोई एक बार की घटना नहीं थी), तो परमेश्वर ने क्रोध और कड़वाहट को हटा दिया और अपने प्यार से बदल दिया। न केवल मैंने अपने पिता को क्षमा कर दिया, अब मैं उन्हें प्यार भी कर सकता हूँ क्योंकि पवित्र आत्मा ने मेरे दिल को बदल दिया था। यह सबसे महान अलौकिक कार्यो में से एक है जिसे परमेश्वर ने मेरे जीवन में पूरा किया है क्योंकि मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं मेरे पिता को उस बात के लिए कभी क्षमा करूँगा जो उन्होंने मेरे साथ किया था। आपके पास जो चोट की अवस्था है या जिसे आप अनुभव कर रहे हैं उसकी गहराई के बावजूद वह आपके लिए भी ऐसा ही करेगा।

महत्वपूर्ण सत्य

परमेश्वर आपको क्षमा करने की अनिच्छा से क्षमा करने के लिए इच्छुक होने की ओर ले जाएगा।

नोट: माफी के विषय में याद रखने के लिए यहाँ कुछ है। न तो परमेश्वर और न ही मैं अपने पिता के दुर्व्यवहार को हल्के में नहीं ले रहे। यह काफी असली और बहुत ही चोट पहुँचाने वाला था। हालांकि, परमेश्वर रोमियों 8: 28 में कहता है कि वह सब बातों को मिलाकर हमारे लिए भलाई को उत्पन्न करेगा। दैवीय भलाई यह थी कि उसने मेरी इच्छा को माफ करने के एक स्थान में पहुँचाकर बदल दिया। उस चोट के कुछ प्रभाव अभी भी मौजूद हैं, लेकिन अधिकांश भाग के लिए परमेश्वर ने मुझे झूठी मान्यताओं से मुक्त कर दिया है।

परमेश्वर को शामिल करना: एक व्यक्ति के बारे में सोचें जिनके विषय में आपको विश्वास नहीं है कि आप उसे क्षमा कर सकते हैं। क्या आप उस व्यक्ति को आपके द्वारा क्षमा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने के इच्छुक हैं? तो फिर, ऊपर के मेरे समान विश्वास के कदम उठाना शुरू करें और परमेश्वर से उस व्यक्ति को आपके द्वारार क्षमा करने के लिए कहें। इसके अलावा, आपकी इच्छा को बदलने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना शुरू करें ताकि आप क्षमा करने के इच्छुक हों।

अंतिम विचार

अक्षम्यता आप में मसीह के जीवन का प्रवाह बंद करता है।

विश्वास के मार्ग में चलने और घाव से चंगाई के बारे में महत्वपूर्ण सत्य

1. याद रखें कि यह घायल करने वाली घटना या घटनाएँ नहीं हैं जो घायलता में मुख्य मुद्दा हैं। ये वे झूठी मान्यताएं है जो उन घटनाओं से आती है।
2. दीर्घकालिक घावों के लिए कोई 'त्वरित' समाधान नहीं है। घावों से ठीक होने में काफी समय लग सकता है जिन्हें आप वर्षो से उठाए जी रहे हैं।
3. आपको चंगाई प्रक्रिया के दौरान मसीह को अपनी दृढ़ता और धैर्य के रूप में जानना होगा।
4. परमेश्वर द्वारा माफ करने की आपकी अनिच्छा से इच्छा की ओर ले जाने में समय लग सकता है, खासकर अगर आप लंबे समय तक अक्षम्यता के साथ जीए हो।
5. हालांकि, जैसे परमेश्वर आपके मन को नया करते हैं, तुरंत आप उसकी चंगाई का अनुभव करना शुरू कर देंगे।

विश्वास के अपने मार्ग में प्रारंभ में आपको सजग होने की आवश्यकता होगी।

जैसे जैसे आप विश्वास में चलना शुरू करते हैं, तो आपको विश्वास के कदम उठाने के बारे में सजग रहना होगा।

इस बिंदु को साबित करने के लिए मत्ती 7:8 को देखें:

*"**जो ढूंढ़ता है**, वह पाता है ..."*

"ढूँढ़ता है" शब्द के काल का अर्थ निरंतर कर्म से है। दूसरे शब्दों में, यीशु इस आयत में जो कह रहा है वह यह है कि आपकी मांग लगातार चलती रहनी चाहिए और सजग होनी चाहिए। विश्वास के मेरे आरंभिक दिनों में मैं विश्वास के कदम उठाने के बारे में काफी सजग था।

मुझे आपको इसे स्पष्ट करने के लिए एक व्यक्तिगत उदाहरण देने दें। जब मैंने पहली बार इन सच्चाइयों को सीखा जिन्हें मैं आपके साथ बाँट रहा हूँ, तो मेरे जीवन के बारे में एक बात जो मैं चाहता था कि परमेश्वर बदले, वह मेरे आलोचनात्मक और न्यायिक होने का मेरा शारीरिक व्यवहार था। इसलिए, मैं अपने आलोचनात्मक और न्यायिक दृष्टिकोण को बदलने के लिए, परमेश्वर से कई बार सजग होकर प्रार्थना की जब कभी यह मेरे मन में आया। "सजगता" को परिभाषित करने का एक और तरीका यह है कि मेरे पास इन क्षेत्रों में मुझे बदलने के लिए परमेश्वर की तलाश करने की दृढ़ इच्छा थी।

इसकी तुलना इस बात से हो सकती है जब आपने पहली बार ड्राइव करना सीखा था। शुरुआती दिनों में आपको अपने स्टीयरिंग, ब्रेकिंग और मोड़ के बारे में बहुत ध्यान केंद्रित और सजग होना था। आपको ऐसा करने में इससे शामिल सभी बातों के विषय में लगातार सोचना होता था। हालांकि, जैसे जैसे आपने उन चीजों को जारी रखा, तो वे एक आदत बन गईं जो स्वचालित रूप से आई। विश्वास के मार्ग में भी परमेश्वर आपके शुरुआती दिनों में आपमें यही करना चाहता है। वह आपके जीवन को बदलने के लिए लगातार एक "पवित्र आदत" विकसित करना चाहता है।

इसलिए, चाहे यह मसीह को जीवन के रूप में खोज करना हो, या अपने मन को नवीनीकृत करने के विषय में, स्वतंत्रता या जीत की तलाश हो, या चंगाई की तलाश हो, एक नियमित मनोभाव या 'पवित्र आदत' को सजग रूप से विकसित करना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

विश्वास के मार्ग के बारे में अंतिम सत्य

- विश्वास के मार्ग के माध्यम से ही यह सीखना संभव है कि विश्वास से कैसे जीना है।
- विश्वास के अपने मार्ग के माध्यम से, विश्वास से जीने की वास्तविकता आपके लिए भावनाओं और अनुभवों से जीने से बढ़कर एक महान वास्तविकता बन जाएगी।
- जितना अधिक आप विश्वास में चलते हैं, उतना ही आप परमेश्वर की नज़र से हर स्थिति को देखना शुरू कर देंगे जिसके परिणामस्वरूप आप बेहतर ढंग से समझेंगे कि परमेश्वर के उद्देश्य क्या हैं।
- जितना अधिक आप विश्वास में चलते हैं, उतना ही अधिक आपमें यह नहीं जानने का विश्राम प्राप्त होगा कि आपके जीवन में क्या होने वाला है क्योंकि आपको परमेश्वर की संप्रभुता और नियंत्रण पर अधिक भरोसा होगा।
- यदि आप विश्वास के अपने मार्ग में दृढ़ बने रहते हैं, तो आप परमेश्वर के अलौकिक कार्य का अनुभव करेंगे जो आपके विचार, विश्वास, चुनाव और व्यवहार को बदल देगा।
- जैसे जैसे आप विश्वास से चलते रहेंगे, आप इस परिणाम के साथ परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को गहरा करते जाएंगे कि आप उसकी उपस्थिति में आनंद लेंगे और आपकी योजना, उद्देश्य और आपके जीवन के लिए इच्छा के अनुरूप बनते जाएंगे।

सारांश

1. परमेश्वर आपको उन चीजों का अनुभव करने से पहले तत्काल जीत, आजादी, चंगाई इत्यादि दे सकते हैं, या यह एक लंबी अवधि की प्रक्रिया हो सकती है। (ऐसा अधिकतर होता है।)
2. विश्वास से जानें, चाहे आप इसे महसूस करें या नहीं, कि जब आप विश्वास से चलते हैं, तो परमेश्वर आपको मुक्त करने, आपको विजय देने, आपको चंगा करने और आपके जीवन को बदलने के लिए आपके जीवन में काम कर रहा है।
3. समय-समय पर आप परमेश्वर के समय सारिणी के साथ अधीर हो सकते हो। उन समयों में उसे आपका धीरज और दृढ़ता बनने की बिनती करें।
4. अपने जीवन में परमेश्वर के काम के प्रति हर दिन आत्मिक रूप से जागरूक रहें। यह एक सूक्ष्म रूपांतरण या सूक्ष्म रूपांतरणों की एक श्रृंखला हो सकती है। उसे उन रूपांतरणों से अवगत कराने के लिए कहें जिन्हें वह कर रहा है।

झूठी मान्यताएँ

परमेश्वर के बारे में झूठी मान्यताएँः

मेरा विश्वास **है** कि
परमेश्वर एक बहुत ही तनावपूर्ण स्थिति में है या रहे होंगे। मुझे लगा कि जैसे परमेश्वरः

क्रोधित	न्यायी	प्रेमरहित
ठंडा और दूर	दोष लगाता हुआ	असमर्थ
उदासीन	दंडित करने वाला	अनिच्छुक
नियंत्रण के बिना	देखभालरहित	कठोर है

दूसरों के विषय में झूठी मान्यताएँः

मुझे दूसरों को माफ न करने का अधिकार है।

दूसरों को मेरी जरूरतों को पूरा करना होगा।

दूसरे लोग मुझे बिना शर्त प्रेम करने चाहिए।

मुझे स्वीकार करने के लिए दूसरों की स्वीकृति चाहिए।

दूसरों की राय मेरा मूल्य निर्धारित करती है।

दूसरों को स्वीकार करने के लिए मेरे मानकों को पूरा करना होगा।

मसीही जीवन जीने के तरीके के बारे में विश्वास झूठी मान्यताएँः

1. मुझे परमेश्वर के लिए काम करना चाहिएः
   अ. उसका प्यार हासिल करने के लिए।
   ब. परमेश्वर मुझसे प्रसन्न होने के लिए।
   स. उसकी स्वीकृति कमाने के लिए।
   द. उसकी सज़ा से बचने के लिए।
   ई. अपने बारे में अच्छा महसूस करने के लिए।
   फ. दूसरों को खुश करने के लिए।
2. यह मेरी बुद्धि और क्षमता के उपयोग पर निर्भर है (परमेश्वर की सहायता से)
   अ. उसकी आज्ञा मानने के लिए।
   ब. अपने जीवन में उसके वादों को वास्तविक बनाने के लिए।
   स. खुद को बदलने के लिए।
   द. खुश होने के लिए
   ई. सफल होने के लिए।

दैहिक व्यवहार

आत्म-अवशोषित रहना: अत्यधिक आत्मनिर्भर बनना, स्वयं के प्रति खेदित महसूस करो, उदास हो जाना, खुद को कोसना, पीड़ित/शहीद की भूमिका निभाना, पाने के लिए मेरी पीड़ा पर ध्यान केंद्रित करना, ध्यान और सहानुभूति किसी और की सफलता और खुशी से ईर्ष्या रखना

वापस लेना (खुद को अलग करना): अलगाव (दूर खींचना), दूसरों से खुद को दूर करना, दूसरों से बचना (अकेला रहना), एक कोठरी में बंद करना, अप्राप्य होना, उनसे चुपचाप रहना, बातचीत करने से इंकार करना

निम्न बातों का उपयोग करके (दर्द/दबाव) से बचनाः अति सेवन और शोर करना, नशीली दवाईयाँ और शराब की बातें, स्कूल में व्यस्त रहना, शौक / खेल पढ़ना, कंप्यूटर कल्पनाएँ, टेलीविजन फिल्में, अश्लील स्वप्न, पेटूपन, धर्म, काम / रोजगार लैंगिकता

चिंतित रहना (चिंता और बदमिजाज़ी): भयभीत रहना (शंकित), शांति और आराम की कमी, लकवा मार जाना (सुन्नता), पागल हो जाना (अत्यधिक संदिग्ध), सकारात्मक देखने से इंकार करना, सबसे बुरे की उम्मीद करना

मार्गदर्शन लेते हैंः ज्योतिष / कुंडली, भविष्य बताना और/या जादूटोना, मिसिंग, आत्म-अनुशासित (आत्मनिर्भर) बनें, स्वयं की मूल स्वीकृति और दूसरों के प्रदर्शन पर एक पूर्णतावादी बनना, कड़ी मेहनत करें ताकि असफल न हो, डराने वाली गलातियाँ, वैधवादी बनना, 'पुस्तक के अनुसार' जीना, बाध्यता महसूस करें (करना है, चाहिए, होना चाहिए), अपने आप / दूसरों पर बहुत कठोर होना, अपने / दूसरों के लिए अवास्तविक मानकों को स्थापित करना

इन बातों के साथ जुनूनी बननाः उपलब्धियाँ, पहचान / सामाजिक स्थिति भौतिक चीजें इकट्ठे करना, दूसरे मेरे बारे में क्या सोचते हैं, मैं शारीरिक रूप से कैसे दिखता हूँ, मेरा शारीरिक स्वास्थ्य अतीत (विशेष रूप से अतीत के चोट और विफलताएं), एक कारण के लिए एक भक्ति संरचना, आदेश और नियम

प्रभावी बनेंः तानाशाही होना (हुक्म चलाना), मांग करते रहना (जिद्दीपन), अतिरंजित होना (नियंत्रण करना), दूसरों को डराना, हार मानने से इंकार करना

निम्न बातों के माध्यम से नियंत्रण में रहनाः ब्लैकमेल (खतरे निर्मित करना), हेराफेरी (अपराध, करुणा, चुप्पी, चापलूसी, आदि का उपयोग), जबरदस्ती (शारीरिक खतरे), बदनामी (शपथ), निष्क्रियता (असहाय दिखाना), खाना नहीं खाना (अरूचि / उल्टियां)?

करुणा, नम्रता की कमीः समझ, दयालुता, प्रेम, रक्षात्मक बनना, आत्म-धर्मी बनना (खुद को सही ठहराना), बहाना बनाना (तर्कसंगत), गलातियों को ढ़ापना या छुपाना, मेरा मुद्दा साबित करना है, मान लेना कि मैं कभी कोई समस्या नहीं हूँ, किसी को या किसी बात को दोष देना, दूसरों को समस्या समझना, विफलता या समस्याओं की जिम्मेदारी लेने से बचना, माफी माँगने में कठिनाई स्वीकार करना कि मैं गलत था, क्षमा मांगना, मदद मांगना, और / या कृतज्ञता व्यक्त करना

एक उच्च दृष्टिकोण रखनाः (प्रभाव में कहना): "मुझे पता है कि सबसे अच्छा क्या है" "मेरा रास्ता सही तरीका है"

आलोचक बनना (दोष लगाना): स्वयं की, दूसरों की और आसपास के सभी चीज़ों में गलती निकालना। चीजों को मारने के लिए उठाना, पूर्वाग्रह (असहिष्णु), अत्यधिक शिकायत करना (कुछ भी अच्छा नहीं है)

आत्मनिर्भर रहना (आत्मविश्वासी होना): परमेश्वर या अन्य के बजाय खुद पर निर्भर रहना, घमंड़ी होना (गर्व करना), अहंकारी होना (अडंबर व्यवहार करना), स्व-प्रशंसा (घमंडी होना), उग्र बनना (उद्दम करना)

दंभी होना (आत्मसंतुष्टि): असंवेदनशील, अस्नेही, निष्ठुर, उदासीन या बेपरवाह होना

आत्मसंतुष्ट रहना (विरक्त): इस प्रकार कहना, 'ठीक है' या 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।' दैहिक व्यवहार (जारी है), निराशावादी (ऋणात्मक) बनना, आत्मविश्वास और आशावाद की कमी

संदिग्ध (संदेही): दूसरों पर, खुद पर, परमेश्वर पर, कलीसिया और/ या सरकार पर भरोसा न करना। सबसे बुरे की उम्मीद करना

स्वयं या अन्य से कभी प्रसन्न नहीं होना, कभी संतुष्ट या तृप्त न होना

विरोधी बननाः कठोर बनना, व्यंग्यात्मक (कटु), सनकी होना (तिरस्कार), घृणित रहना (मतलबी), क्रूर होना (दुर्भावनापूर्ण), एक त्वरित गुस्सा, मेरे क्रोध को दूर करने के लिए कठोरता, शारीरिक रूप से अपमानजनक, मौखिक रूप से अपमानजनक, चीजें तोड़ना

नाराज़गी रखना (द्वेष रखना): मिजाजी बनना (उदास रहना), कड़वाहट को मन में रखना, क्षमा न करना, अपराधों की अंकपटिका रखना, बदला लेने की कोशिश करना (प्रतिशोध), दूसरों को असफल होने या चोट लगने की चाहत रखना, खुद को या दूसरों को दंडित करना

अनुचित संघर्ष में पड़नाः बदनाम करना, स्थिति को गलत तरीके से प्रस्तुत करना, गपशप (उनकी पीठ के पीछे बात करना), निष्क्रिय आक्रामकता में शामिल होना, व्यवहारः छिपाने के लिए हास्य का उपयोग करना, असली भावनाएँ, चीजों को भूलना, संवाद करने से इनकार करना। देरी करना, विलंबन आदि)

आत्म–निराशाजनक बननाः मान लेना कि मैं ही हमेशा समस्या हूँ, अत्यधिक क्षमाशील बनना, अपने आप पर बहुत कठोर होना, सफलता के प्रति असहज प्रेम प्राप्त करने में कठिनाई प्रशंसा, क्षमा, खुद को माफ करने में असमर्थ

दूसरों को चुनौती देनाः अधिकार का विरोध करना, असहयोगी होना (अचल व्यवहार), सीखने में अनिच्छुक (बंद–दिमाग), विघटन का कारण बनना (झगड़ा), क्रोधित रहना (दूसरों को भड़काना), तर्कवादी होना, जिद्दी होना (हठीला), अतार्किक होना

वास्तविकता से इनकार करनाः समस्याओं को नजरअंदाज करना और आशा करना कि वे चले जाएँगे। बुरा या गलत कहकर किसी का इनकार करना, व्यक्तिपरक होना, दूसरों और खुद को धोखा देना, स्वयं और दूसरों से झूठ बोलना, अतियुक्ति करना (मामले को बढ़ाना) असली इरादे को छुपाने के लिए खेल खेलना

एक ढ़ाल रखनाः जो मैं वास्तव में सोचता हूँ उसे छुपाना, अभिनय करना, दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश करना, और / या ध्यान आकर्षित करना, नकली अभिनय (ऐसा दिखाना कि मैं कुछ जानता हूँ जबकि मुझे कुछ नहीं पता), उपहासपूर्ण होना (नकली, अवास्तविक) छिछला होना (कभी किसी को ज्यादा करीब न आने देना)

निष्क्रिय रहना (पहल की कमी): बहुत आसानी से हार मानना (छोड़ देना), जोखिम नहीं उठाना, किसी और को बताने के लिए प्रतीक्षा करना, कि कैसे सोचना है और क्या करना है, खाली (अधिक परिवर्तनशील होना), अनिश्चित होना, हर कीमत पर विफलता से बचना, विलंब करना (चीजें को दूर हटाना), गैर – जिम्मेदार होना (बेईमान), आलसी होना (उदासीन, सुस्त)

तनाव में बने रहना ('चिंताग्रस्त'): आराम करने में कठिनाई, बेचैन रहना, अधीर होना, आसानी से भड़क जाना

भावनात्मक रूप से अलग रहनाः घनिष्ठता से बचना, भावनाओं और राय को व्यक्त करने में कठिनाई भावनाओं को दबाना (विचार) अवरुद्ध (सीमित किया हुआ)

मेरी भावनाओं के अनुसार जीनाः मान लेना कि सत्य वही है जो मुझे महसूस होता है, आलोचना के प्रति अधिक संवेदनशील अतिसंवेदनशील होना, छुईमुई स्वभाव (गुस्सैल), डर, क्रोध, संदेह और असुरक्षाओं द्वारा नियंत्रित, तिरस्कार के प्रति स्वतः बढ़ना

एक खुश करनेवाला बनना (अच्छा बने रहना): सभी को खुश रखने की कोशिश करना, संघर्ष से बचना / शांति बनाए रखना, कहना कि जो मुझे लगता है वही दूसरों को चाहिए, अत्यधिक आधीनता, 'नहीं' कहने में कठिनाई, खुद के लिए खड़ा नहीं हो पाना, दूसरों को निराश करने से डरना, दूसरों के सामने बहुत आसानी से हार मानना

एक देखभाल करने वाला (बचावकर्ता) बननाः अतिसंवेदनशील होना, अत्यधिक जिम्मेदार होना, दूसरों के मामलों में अधिक शामिल होना, स्वामित्व लेना (अधिक निवेशित), बहुत ज्यादा बात करना और कम सुनना, दूसरों के लिए निर्णय लेना

बहुत गंभीर (तीव्र) बननाः अत्यधिक विश्लेषणात्मक होना, मस्ती करने में सक्षम नहीं होना, खुशी या जीवन की कमी

पाठ पाँच

विश्वास की लड़ाई

पहला दिन

विश्वास की लड़ाई अध्याय 5 का अवलोकन

- विश्वास की लड़ाई क्या है?
- विश्वास की लड़ाई के विषय में सत्य
- इस युद्ध में शत्रु
- इस युद्ध को शरीर के ऊपर जीतना
- पाप की सामर्थ और दुष्ट की शक्ति
- विश्वास की लड़ाई और विचारधारा या वैचारिक जीवन

परिचय

जब आप जान बूझकर इस विश्वास की दौड़ को दौड़ते हैं तो जल्दी ही आप का सामना रूकावट से हो जाता है। यदि आप पहले से विश्वास के कदम उठाते आ रहे हैं तो आप समझ ही गये होंगे कि मैं किस विषय पर बात कर रहा हूँ। यह रूकावट तब आती है जब आप कुछ आंतरिक और कुछ बाहरी शत्रुओं के विरूद्ध धारा में बहने लगते हैं जो कि आपकी इस विश्वास की दौड़ की पटरी से आपको उतारने के मौके की खोज में रहते हैं। हम इस अध्याय में इस बात पर चर्चा करेंगे कि हमारे शत्रु जिनका हमें सामना करना पड़ता है और कैसे हम परमेश्वर को संग लेकर इस युद्ध को लड़ें कि इस युद्ध को जीत सके।

यह विश्वास की लड़ाई क्या है?

"विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़" 1 तीमुथियुस 6:12

मैं इस लड़ाई की यह परिभाषा देता हूँ

विश्वास की लड़ाईः
यह विश्वास की कुश्ती, आपके विरूद्ध आने वाली वह रूकावटें हैं जो आपके सामने इस विश्वास की दौड़ को दौड़ने के समय आती है।

सत्य यह है कि जैसे ही विश्वास का पहला कदल उठायेंगे आपको रूकावट का सामना करना पड़ेगा। इस वक्त मैं आपसे एक दोहरा प्रश्न पूछना चाहता हूँः

- **क्या आप सजग है कि एक युद्ध है?**
- **क्या आप एक युद्ध में हैं?**

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि कई मसीही पूरी तरह से इस बात को समझ ही नहीं पाते कि उनके विरूद्ध एक बड़ा युद्ध छेड़ दिया गया है। पतरस इस पद में इस युद्ध की पुष्टि करता है– *1 पतरस 2:11*

*"हे प्रियों मैं तुम से बिनती करता हूँ, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जान कर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो **आत्मा से युद्ध करती हैं,** बचे रहो।"*

सबसे पहली आवश्यता तो यह है कि हमें इस बात से अवगत होना पड़ेगा कि ऐसा एक युद्ध है। यदि हमें इस बात का ज्ञान नहीं है कि हम एक युद्ध में हैं तो हम ऐसे जीवन जीएंगे जैसे कोई युद्ध है ही नहीं। इसी के साथ यदि हमें मालूम है कि कोई युद्ध है और हम इस विश्वास की लड़ाई को 1 तीमुथियुस 6:12 के अनुसार नहीं लड़ेंगे तो तीन परिणाम होंगे।

पहला, हम प्रभु परमेश्वर को छोड़ देंगे और विश्वास की दौड़ भी छोड़ देंगे।
दूसरा, हम फिर से मुड़ कर अपनी इच्छानुसार ख़ुद अपना स्त्रोत बनकर जीने लगेंगे।
तीसरा, कोई परिवर्तन नहीं होगा।

इसलिए यह अति आवश्यक है कि हम इस विश्वास की लड़ाई को पूर्ण रूप से समझे, अपने शत्रु को और इसे कैसे जीतना है, इस पर गौर करें। आइये, सबसे पहले तो हम इस विश्वास की लड़ाई के विषय में मूल सत्य पर विचार करें।

विश्वास की लड़ाई के विषय में सत्य।

#1 – यह युद्ध आप नहीं लड़ सकते।

*क्योंकि **तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं से युद्ध करने** और तुम्हें बचाने के लिये तुम्हारे संग चलता है।' – व्यवस्थाविवरण 20:4*

इस विश्वास की लड़ाई के विषय में सत्य यह है कि आप इस युद्ध को ख़ुद की सामर्थ से **नहीं** लड़ सकते, क्यों? क्योंकि जिससे आप युद्ध करने जा रहे हो, उनसे आपकी सामर्थ और इच्छा शक्ति मेल ही नहीं खाती। हर बार जब आप इस युद्ध को परमेश्वर की सामर्थ के बिना लड़ने की कोशिश करोगे तो आप अवश्य हार को देखोगे। अच्छी ख़बर यह है कि परमेश्वर इस लड़ाई के युद्ध को आपके लिए लड़ना चाहता है, उस शत्रु को पूरी तरह से घेरकर जो आपके विरोध खड़ा है।

परमेश्वर ने कभी आपके विषय में यह नहीं चाहा कि आप एक ऐसी कुश्ती लड़ो जो
आप उससे अलग होकर जीत नहीं सकते।

#2 – इस लड़ाई में आपका क्या भाग है?

*''**यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो**।'' निर्गमन 14:14*

यद्यपि यह युद्ध परमेश्वर ही लड़ेगा, लेकिन आपका भी एक भाग है – इसमें ''चुपचाप रहें''। शायद आपको यह बड़ा निष्क्रिय लगे लेकिन सत्य यही है कि आप ''चुप रहें' और परमेश्वर पर निरंतर विश्वास रखें कि वह इस युद्ध को लड़ेगा भी और परिणाम भी देगा।

''चुप रहने'' या ''शांत रहने'' का अर्थ यह हुआ कि आप परमेश्वर की सामर्थ पर और योग्यता पर भरोसा करके विश्राम में हैं कि वह आपको दुश्मन पर विजय दिलाएगा। इसी सत्य को हम भजन संहिता 46:16 में भी पाते हैंः ''चुप रहो और जान लो कि मैं ही ईश्वर हूँ।'' यदि मुझे पूरा भरोसा है कि परमेश्वर मुझे मेरे शत्रु पर विजय दिलाएगा तो मैं विश्राम कर सकता हूँ उस समय भी जब वह मेरे लिए युद्ध कर रहा होगा।

आपका विश्वास परमेश्वर की सामर्थ को सक्रिय कर देता है।

#3 – परमेश्वर के वचन से इस विश्वास की लड़ाई को लड़ने का प्रयास करें।

*''मेरा जीवन उदासी के मारे गल चला है; **तू अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल!**'' भजन 119:28*

*''और **सत्य को जानोगे,** और **सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा**।'' यूहन्ना 8:32*

इस युद्ध को लड़ने का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि हम परमेश्वर के सत्य को जानें और उसका भरपूर इस्तेमाल करें। यूहन्ना 8:32 में जो शब्द है ''जानोगे'' यह बौद्धिक ज्ञान से बढ़कर है। इसका अर्थ है 'विश्वास करना'। यह तो हम जानते ही हैं कि मसीह स्वयं ही सत्य है जैसा यूहन्ना 14:6 में लिखा है। इसलिये जैसे जैसे हम उसके सत्य पर विश्वास करते जाते हैं और विश्वास के द्वारा उसके संग रहते हैं, वैसे वैसे वह अपने सत्य को हमारे शत्रु के विरूद्ध हमारी इस दौड़ में उन्हें पराजित करने के लिये इस्तेमाल करता है और हमें स्वतंत्र कर देता है। इस अगले अनुच्छेद में देखेंगे कि इसका हमारे जीवन में व्यवहारिक रूप से कार्य कैसे होता है।

इस विश्वास की दौड़ की एक दृश्य उदाहरण

नीचे दिये गए आरेख में है, हम बायी ओर देखते हैं जहाँ हम अपनी मसीही जीवन की दौड़ आरंभ करते हैं। शुरूआत में हम अधिकतर अपने शरीर में ही चलते हैं और अक्सर अनसुलझे संघर्ष को अनुभव करते हैं और उस पाप की प्रवृत्ति के बंधन में ही रहते हैं। दाहिनी ओर जीवन परिवर्तन के परमेश्वर के वादे को भी अनुभव करना चाहते हैं। इन दोनों के बीच का सेतु है 'विश्वास'। हम जैसे जैसे इस अध्याय में आगे बढ़ेंगे इस आरेख को सामने रखेंगे।

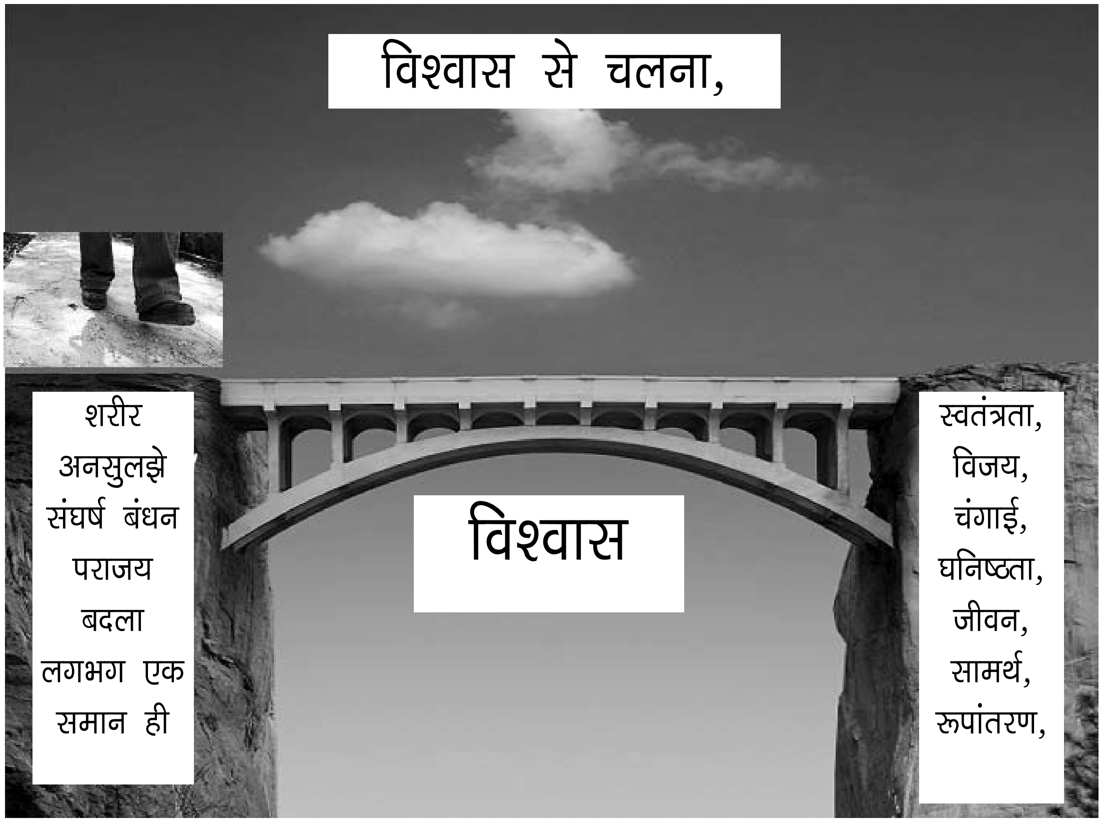

इस युद्ध में हमारे शत्रु कौन हैं?

जैसे ही हम इस विश्वास की दौड़ को आरंभ करते हैं, हमारा सामना आंतरिक और बाहरी दोनों प्रकार के शत्रुओं से होता है। तीन मुख्य शत्रु इस युद्ध में हैं जिनसे हमें लड़ना है, वह है – शरीर, पाप की सामर्थ और शैतान और उसकी दुष्ट सेना। मैं इन तीनों शत्रुओं को 'अपवित्र त्रिएकत्व'' कहता हूँ। नीचे दिया गया चित्र यह दिखाता है।

अपवित्र त्रिएकत्व

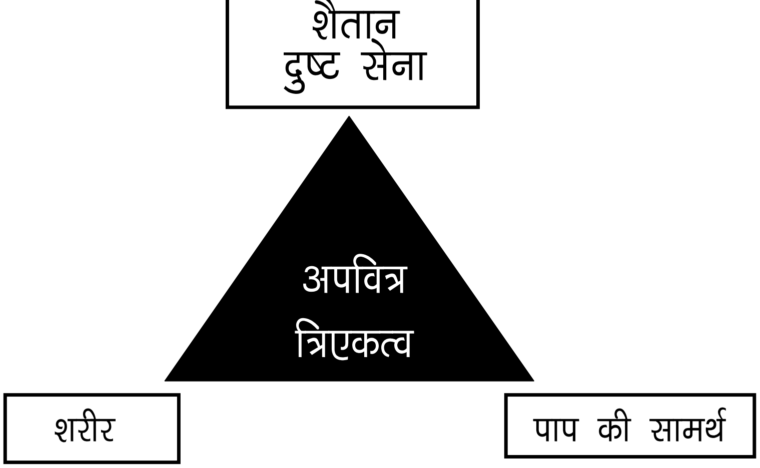

इस 'अपवित्र त्रिएकत्व' के साथ साथ एक और संभावित शत्रु है, वह है हमारा वैचारिक जीवन। जिस समय हम इस विश्वास की दौड़ को आरंभ करते हैं, हमारा सामना इन चार शत्रुओं से होता है जिसका परिणाम है विश्वास की लड़ाई। निम्नलिखित चित्रण पर ध्यान दीजिए–

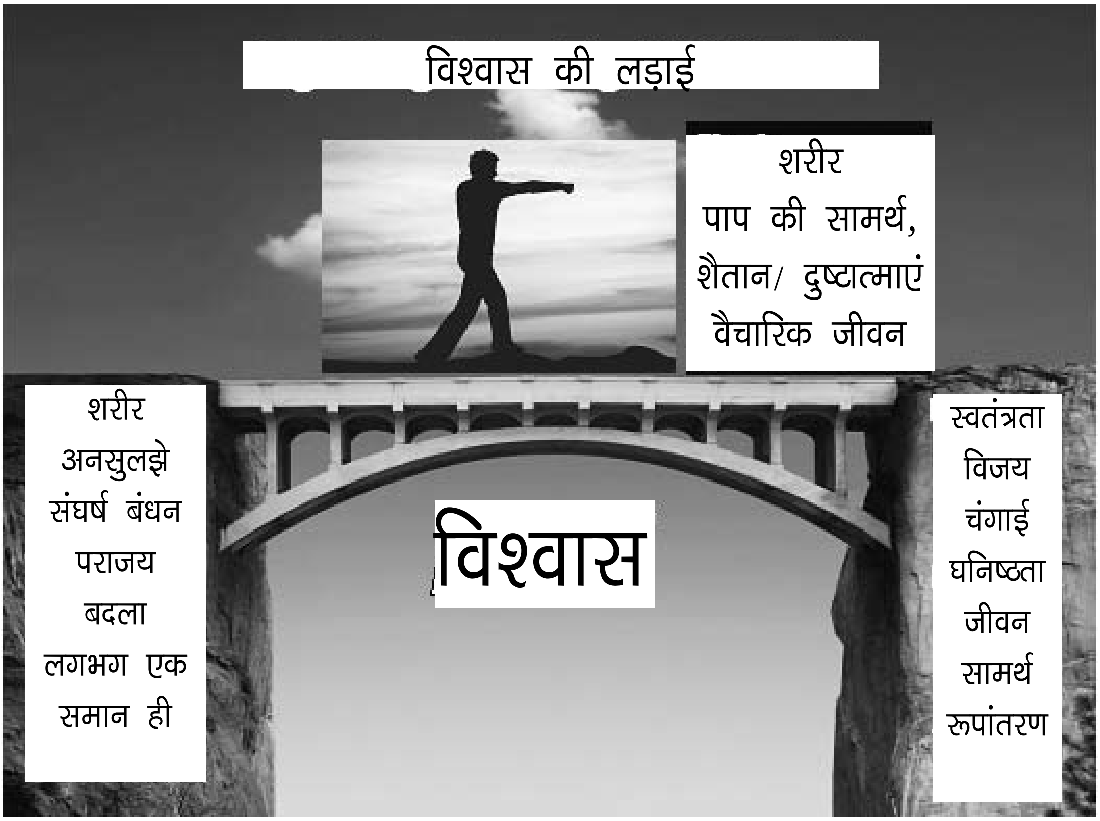

आइये हम व्यक्तिगत रूप से एक एक करके इन शत्रुओं को देखें और यह भी कि हम इस में परमेश्वर को किस प्रकार से अपने संग ले सकते हैं। इस मल्लयुद्ध को लड़ने व विजयी होने के लिए।

महत्वपूर्ण सत्यः

आपकी अपनी सामर्थ, आपकी इच्छाशक्ति आपके शत्रु से कभी मेल नहीं खाती है। परमेश्वर की सहायता के बिना इनसे युद्ध करने का अर्थ है 'पराजित जीवन' जीना।

दूसरा दिनः

शत्रु # 1– शरीर

हमारे पिछले पाठ से आपको शरीर और शारीरिक व्यवहार के विषय में अच्छी जानकारी मिली होगी। आज इस अध्याय में हम देखेंगे कि शरीर कैसे हमारे विश्वास की दौड़ का सबसे बड़ा बाधक है।

विश्वास में चलने से आपका शरीर हमेशा आपको विरोध करेगा

आपका शरीर हमेशा आपके विश्वास की दौड़ का सबसे बड़ा शत्रु रहेगा। हम इसे गलातियों 5:17 में देखते हैं:

''क्योंकि **<u>शरीर आत्मा के विरोध में</u>,** और **<u>आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है</u>**, और **ये एक दूसरे के विरोधी हैं**; इसलिये कि **जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ**।'' गलातियों 5:17

हम अपने संपूर्ण जीवन में शरीर और उसकी लालसाओं के मध्य संघर्ष करते रहेगे। दुखद समाचार यह है कि अपने शारीरिक व स्वंतत्र जीवन शैली की ओर आकर्षित होना बहुत ही स्वाभाविक प्रवत्ति

है। दूसरे शब्दों में यदि देखें तो अपनी पुरानी शारीरिक जीवनशैली में वापस लौट जाना बहुत आसान है, जिसके हम बहुत अभ्यस्त हैं। परन्तु क्योंकि अब हम मसीही हैं इसलिए हमारे पास एक चुनाव है। क्योंकि हम में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता है तो हम यह चुनाव करने में सक्षम हैं कि हम परमेश्वर पर पूर्णतः निर्भर होकर ही दौड़ेंगे, जो सदा शरीर पर विजयी होता है।

हर मसीही की मूल प्राकृतिक प्रवृत्ति है शरीर में चलना।

ये कुछ तरीके हैं जिनसे शरीर आपके विश्वास की दौड़ में बाधक बनता है।

1. अपनी ख़ुद की क्षमताओं पर निर्भर होकर परिवर्तन की कोशिश करना।
2. परमेश्वर पर संदेह करना और यह कि वह हमें परिवर्तित करने के लिए असमर्थ है।
3. फिर अपने पुराने मनुष्यत्व की ओर लौट जाना और उसी व्यवहार में जीना।
4. पाप की सामर्थ और दुष्ट की शक्ति के प्रलोभनों के आगे हथियार डाल देना।

प्रश्नः रोमियों 7:15 पर आधारित यह सोचिए कि वह क्या है जो आप करना चाहते हैं पर नहीं कर पाते या विपरीत रूप से होता है? क्या आपने कभी यह कोशिश की है कि आप अपनी इच्छाशक्ति पर भरोसा करके कोई कार्य न करे? आपसे बन पड़ा कि नहीं?

विश्वास की लड़ाई और शरीरः

तीन बातें हैं जो परमेश्वर विश्वास की दौड़ के विषय में और शरीर के विषय में पूरा करना चाहता है –

1. वह इस बात को प्रकट करना चाहता है कि कब आपका शरीर आपके विश्वास की दौड़ में बाधक है।

क्योंकि हम मूल रूप से शरीर में जन्मे हैं और अब तक शरीर में चलते हैं तो यह आसानी से प्रकट नहीं होगा कि कब हमारा शरीर परमेश्वर के कार्य को जो हम में हो रहा है, विरोध कर रहा है। इसलिये जो कार्य परमेश्वर करना चाहता है वह यह है कि वह शारीरिक विरोध को उजागर करना चाहता है। आगे के पद में हम देखेंगे कि कैसे दाऊद ने परमेश्वर को पुकारा कि वह उसकी शारीरिक प्रवृत्ति को उजागर करें।

*“**हे ईश्वर, मुझे जांच कर** जान ले! **मुझे परख कर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं,** और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!” भजन 139:23,24*

इसलिए आइये हम देखें कि यह विश्वास की दौड़ कैसी दिखती है जिससे हम अपनी शारीरिक रूकावटों को उजागर कर सकें।

विश्वास का कदमः “हे प्रभु, हम आपसे यह निवेदन करते हैं कि आप उन शारीरिक रूकावटों को उजागर कीजिए जो हमारे अंदर आपके कार्य को पूरा होने से रोकती है।”

2. आपके शरीर की मृत्यु का प्रमाण आपको दें।

*“और जो मैं करता हूँ, उस को नहीं जानता, क्योंकि जो **मैं चाहता हूँ, वह नहीं किया करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है, वही करता हूँ**।” रोमियों 7:15*

शरीर की परेशानी दो तरफा है। पहली तो यह कि हम अपना मन फिराने के लिए तैयार नहीं, दूसरा हम में सामर्थ भी नहीं है कि हम खुद को खुद के शरीर से छुटकारा दिला सके। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि परमेश्वर हमें हमारे शरीर की मृत्यु को प्रकट करें जिससे हम खुद परमेश्वर को अनुमति दें कि वह हमें स्वतंत्र करा लें। (यह याद रखें कि शरीर की ‘मृत्यु’ प्राण का शोक है जो तब होता है जब हमारा शरीर परमेश्वर के रूपांतरण के काम को हमारे अंदर होने का विरोध करता है।)

आत्मा के द्वारा हमारे शरीर की मृत्यु का उजागर होना केवल इस बात को प्रकाशित करता है कि शरीर जो रूकावट पैदा कर रहा है उससे कितना शोक पैदा होता है।

कई मसीहियों के साथ परेशानी की बात यह है कि कुछ मसीही लोग इस क्लेश में रहने के इतने आदि हो जाते हैं कि एक समय के बाद उनको यह क्लेश दिखना या महसूस होना ही जैसे बंद हो जाता है। इसी कारण हम परमेश्वर को खोजते हैं कि वह इस क्लेश को हमें दिखाएँ वरना हम उस कुत्ते के समान बनकर रह जाएँगे जो बार बार अपनी ही छाँट को चाँटने को लौटता है जो 2 पतरस 2:22 में मिलता है, वह यही करता रहता है। (मुझे इस उदाहरण के लिए क्षमा कीजिएगा परन्तु अपनी बात को समझाने के लिए मैंने इस विवरण का सहारा लिया है।)

उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए आप अपने शारीरिक स्वभाव में निरंतर परमेश्वर के विरूद्ध जा रहे हैं जो आपमें आपके क्रोध करने के स्वभाव से मुक्त करना चाहता है। परमेश्वर यह करेगा कि वह आपके क्रोध की मृत्यु को उजागर करेगा और यह भी कि वह क्रोध कैसे आपके परिवार में आपके बच्चों में, साथियों में व दोस्तों के बीच मतभेद पैदा करेगा। वह आपके क्रोध के प्रति आपको आपके गुस्से से होने वाले नुकसान को दिखाएगा जिससे आप अपने क्रोध से बाहर निकलने का प्रयास करने लगे।

3. आपके अन्दर एक चाहत उत्पन्न करेगा कि आप शरीर की मृत्यु में चलना सीखें।

जब एक बार हम शरीर की मृत्यु और उसकी छाँट की दुर्गंध को सूंघ लेंगे, हम उससे मन फिरा लेंगे और परमेश्वर पर पूर्णतः निर्भर होकर चलने का प्रयास करने लगेंगे। 2 कुरिन्थियों 4:11 को देखें:

"क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो।" *2 कुरिन्थियों 4:11*

इस पद में पौलुस क्या कहता है कि परमेश्वर निरंतर हमें हमारे शरीर की मृत्यु दिखाता है जिससे हम उसकी मृत्यु में चल सके। शरीर की मृत्यु में चलने का अर्थ है कि हम उसके द्वारा उत्पन्न द्वंद को महसूस करें और परिवर्तन का कार्य, खुद में करने दें। जब हम अपनी शरीर की मृत्यु में चलते हैं तो मानो ऐसा लगता है कि हमने अपने शरीरों को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया हो।

अपने शरीरों की मृत्यु में चलने का अर्थ है मानों अपने शरीर पर विजय पाकर चलना।

परमेश्वर को शामिल करनाः परमेश्वर से माँगें कि वह आपको उन सभी क्षेत्रों में जहाँ शरीर आपको परमेश्वर के कार्यों में रूकावट डाल रहा है, दिखाएँ और उन से होने वाले अंतर्द्वंद को दिखायें जिससे कि आप उनसे यह इच्छा पा सके कि आप प्रभु की ओर मन फिरा कर उसके साथ विश्वास की दौड़ दौड़ सके।

तीसरा दिन

उदाहरण के तौर पर देखेंगे कि हम परमेश्वर की सहायता से कैसे अपने शरीर पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

शरीर पर विजय प्राप्त करने के लिएः

1. परमेश्वर से यह माँगें कि वह निरंतर आप पर शरीर के द्वारा आने वाली रूकावटों को आप पर प्रकट करे।
2. परमेश्वर से यह भी माँगें कि शरीर के कारण होने वाले कष्ट को जो आपको व आपके आसपास के लोगों को होता है, प्रकट करें।
3. परमेश्वर से कहें कि वह आपको यह इच्छाशक्ति दें कि आप शरीर के लिए व उसके कार्यों के लिए मृत्यु मांगें ताकि आप शरीर से दूर होकर जीवन जी सके।

आइये इसी संदर्भ में दो उदाहरण देखें कि कैसे हमारे शारीरिक व्यवहारों पर विजय का अनुभव करने के लिए विश्वास से परमेश्वर को शामिल किया जाए।

उदाहरण #1: आइये यह मान लें कि परमेश्वर की सहायता से आप किसी व्यक्ति को, जिसने आपको चोट पहुँचाई है, माफ करने का अनुभव मांग रहे हैं। आप विश्वास के कुछ कदम उठाते हैं और फिर से वह व्यक्ति आपको कहीं मिल जाता है। तभी आपका शरीर फिर से आपको उसी पुराने जाल में ले जाने का प्रयत्न करता है जिसमें क्रोध, कड़वाहट और क्षमाहीनता है। हम शरीर पर विजय प्राप्त करने के लिए तब परमेश्वर की सहायता कैसे ले सकते हैं।

विश्वास की लड़ाईः ''प्रभु मुझे इस व्यक्ति पर क्रोध आ रहा है। मैं आपसे बिनती करता हूं कि आप मुझे मेरे क्रोध की मृत्यु दिखाएं और मुझे उससे मुड़ कर लौटने की इच्छाशक्ति दें।

उदाहरण #2: मान लीजिए आप अपने जीवनसाथी को लगातार अस्वीकार कर रहे हैं। आप अब परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि आपकी बुद्धि का नवीनीकरण करें जिससे आप उसे बेशर्त स्वीकारें। जैसे जैसे आप एक कदम उठाते हैं उसी समय आपका जीवनसाथी कोई ऐसी बात कर देता है जिससे आप के अंदर अस्वीकृति की भावना जाग उठती है। यही वह क्षण है जब विश्वास की लड़ाई शुरू होती है। आप इस विषय में क्या सोचते हैं कि परमेश्वर की सहायता लेकर आप इस युद्ध को कैसे लड़ें?

विश्वास की लड़ाईः 'हे प्रभु, मैं अपने जीवनसाथी के प्रति अस्वीकृति की भावना को महसूस कर रहा हूँ। मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे इस अस्वीकृति की वजह की मृत्यु को उजागर कीजिए। आप अपनी सामर्थ से इस शारीरिक भावना को मुझमें से हटाइये और इस अस्वीकृति की भावना से मुझे दूर कीजिए।

परमेश्वर की सहायता से शरीर पर विजय के ऊपर अंतिम/निर्णायक विचारः

1. यदि आप जानबूझ कर परमेश्वर से अपने शरीर की रूकावट पर प्रबल होने की प्रार्थना नहीं कर रहे हैं, तो आप हर बार केवल पराजय को पाएँगे।
2. शुरूआती दौर में जब आप अपने किसी खास जीवन के क्षेत्र में सफलता, छुटकारा या चंगाई को खोज रहे हो तब उस समय शरीर सबसे अधिक रूकावट डालेगा।
3. जितना अधिक आप परमेश्वर की सहायता से अपने शरीर को पराजित करते रहेगे वैसे वैसे आप शरीर की रूकावट को कम होते देखेंगे।

महत्वपूर्ण मूल सत्यः

आप इस दौड़ में कई बार शरीर की ओर लौटने के बारे में विचार करेंगे।
जबकि यही वह समय होगा जब परमेश्वर आप पर आपके शरीर
के मर जाने का उजागर करेंगे ताकि आप भी शरीर की मृत्यु में चल सके।

परमेश्वर को शामिल करनाः यदि आप अपने जीवन में किसी क्षेत्र में विजय या चंगाई की आस लगाए हुए हैं और लगातार शरीर इसमें रूकावट डाल रहा है तो अपने शरीर पर विजय प्राप्त करने के लिए आप परमेश्वर को शामिल करना।

शत्रु #2 पाप की सामर्थ

''परन्तु यदि मैं वही करता हूँ, जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करने वाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है।'' रोमियों 7:20

पाप की सामर्थ क्या है?

पाप की सामर्थः

यह एक आंतरिक और निरंतर चलने वाली एक ऐसी सामर्थ है जो आपको आकर्षित करती है और प्रलोभित करती है कि आप अपना जीवन परमेश्वर के बिना स्वतंत्र होकर व्यतीत करें।

आप के अंदर, पाप की सामर्थ निरंतर आपको आकर्षित करती रहती है कि आप अपनी बुद्धि और क्षमता में जीवन जीएँ, न कि परमेश्वर की सामर्थ और जीवन से। यह एक ऐसी शक्ति है जिसे आप जीत नहीं सकते क्योंकि आपकी इच्छाशक्ति पाप की सामर्थ के लिए कोई मेल नहीं है। इसलिए यदि आप विश्वास के द्वारा परमेश्वर की सहायता नहीं लेंगे तो आप उस पाप को सामर्थशाली बनने देंगे।

दूसरा मूल सत्य यह है कि पाप की सामर्थ आपके शरीर के साथ सहभागिता और आपके शारीरिक व्यवहारों के साथ जुड़ी है। मैं आपको एक दृश्य दिखाता हूँ कि वह साथ साथ कैसे कार्य करते हैं। मान लें कि आप रेस्तरां में अपना पसंदीदा खाना खाने गये। वेटर आपके सामने एक ट्रे में आपकी पसंद की ढ़ेर सारी मिठाई ले कर आता है। आप खुद को रोक नहीं पाते और एक या दो मिठाई उसमें से उठा लेते हैं।

इस उदाहरण में जो वेटर है वह पाप की सामर्थ को दर्शाता है, और जो मिठाईयाँ है वह हमारे शारीरिक व्यवहार हैं। यदि आप परमेश्वर की सहायता नहीं ले रहे तो हर बार हार मानकर अपने शरीर को विजयी होने देंगे। आइये हम कुछ ऐसे उदाहरण देखें कि कैसे पाप की सामर्थ कार्य करती है और परमेश्वर की सामर्थ से हम उस पर कैसे विजयी हो सकते हैं।

उदाहरण : पाप की सामर्थ को कैसे परमेश्वर की सामर्थ से पराजित करना कैसा दिखता है।

उदाहरण # 1: आप सुबह सुबह ऑफिस पहुँचे और आपको खबर मिली कि जिस पदोन्नति के लिए आप मेहनत कर रहे थे, वह किसी अन्य व्यक्ति को मिल गई है। उसी समय आपका शरीर आपको क्रोध और बदले की भावना को प्रदर्शित करने के लिए आपको उकसाएगा। उस समय या तो आप पाप की सामर्थ के आगे झुक सकते हैं या परमेश्वर की सहायता से पाप की सामर्थ पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। यही वह विश्वास की लड़ाई है जिसमें आप इस बात को तय करेंगे कि आप परमेश्वर को इस लड़ाई को देना चाहते है या नहीं।

विश्वास की लड़ाई: ''प्रभु, मैं जानता हूँ कि इस पदोन्नति के मैं लायक हूँ। मैं क्रोध, अस्वीकृति और बदले की भावना को महसूस कर रहा हूँ। मैं अपनी इन सभी भावनाओं को आप को दे देता हूँ और आपसे बिनती करता हूँ कि आप अपनी सामर्थ से मुझ में आने वाली इस पाप की सामर्थ को पराजित कीजिए और अपनी इन पापमय भावनाओं को प्रदर्शित न करने का हियाव दीजिए।

उदाहरण # 2: आपको पता चलता है कि आपका कोई खास मित्र आपके पीठ पीछे आपके विरूद्ध बातें कर रहा है। जिस समय आपको यह पता चलता है आपकी शारीरिक गुण वहीं आपके लिए तैयार है आपके व्यवहार में अस्वीकृति को दिखाने के लिए, बदला लेने के लिये। यदि आप पाप को सामर्थ देंगे तो आप वहीं उस मित्र के प्रति अस्वीकृति दिखा देंगे। यही अपने युद्ध में परमेश्वर की सहायता लेना और शरीर पर विजय प्राप्त करना है।

विश्वास की लड़ाई: ''प्रभु, आपसे बिनती करता हूँ कि पाप की सामर्थ को मुझ में से हटा दीजिए जिससे कि मैं अपने मित्र के स्वभाव के विरूद्ध व्यवहार न करूँ या उसे अस्वीकृत न करूँ।''

अभ्यास: वे सभी शारीरिक व्यवहारों को लिख लीजिए जिनसे आप निरंतर लड़ रहे हैं। सोचिए आप कैसे इस व्यवहारों को पाप के द्वारा सामर्थ देकर विजयी बना रहे हैं जब शरीर आपको उकसाता है।

परमेश्वर को शामिल करना: परमेश्वर को खोजें कि वह इस पाप की सामर्थ की पकड़कर कमज़ोर करने में आपकी सहायता करें और इन शारीरिक व्यवहारों के प्रदर्शन से आपको बचायें या दूर कर दें।

पाप की सामर्थ पर विजय की दौड़ में अंतिम विचार:

1. शुरूआती दौर में, इस विश्वास की दौड़ में, पाप की सामर्थ अधिकतर विजयी होती रहेगी। आप बार बार उससे हारने का अनुभव पा सकते हैं।
2. इस बात से आप निराश न हो। जब आप पाप में पड़ जाओ, तो अंगीकार करें और मन फिरायें और विश्वास से आगे बढ़ते रहें।
3. अच्छी खबर यह है कि जैसे जैसे आप परमेश्वर को पाप की सामर्थ को हराने के लिए शामिल करते जाएँगे, उतनी ही इसकी पकड़ कमजोर होती जाएँगी और समय के साथ आप पाएंगे कि आप अब इतनी जल्दी हार नहीं मानते हैं और एक समय ऐसा आएगा कि आप बिल्कुल भी पराजित नहीं होते।

पाप की सामर्थ

एक निरंतर प्रलोभित करने वाली एक ऐसी रूकावट है जो आपको शारीरिक व्यवहार के द्वारा पराजित करती है।

शत्रु # 3 – शैतान और उसकी दुष्टात्मा शक्ति

*''क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से **नहीं,** परन्तु **प्रधानों** से और अधिकारियों से, और इस **संसार के अन्धकार के हाकिमों** से, और उस **दुष्टता की आत्मिक सेनाओं** से है जो आकाश में हैं।'' इफिसियों 6:12*

मैं ईमानदारी से एक बात बताना चाहता हूँ कि शुरूआती दौर में मैंने अपने मसीही जीवन में, कलीसिया के अंदर शैतान और उसकी शक्ति के विषय में ज्यादा चर्चा नहीं सुनी थी। हम बहुत ही कम समय इन विषयों के बारे में सोचने में लगाते थे। जबकि इन पिछले कुछ वर्षों में मैंने जाना कि शैतान और उसकी शक्तियाँ सचमुच पृथ्वी पर हैं और उनकी युक्तियाँ निरंतर चलती रहती हैं:

आपके विश्वास के मार्ग में चोरी करने, हत्या करने और घात करने के विषय में।

यूहन्ना 10:10 के पहले भाग में हम इसे देखते हैं:

*"चोर केवल **चोरी** करने और **घात** करने और **नष्ट** करने को आता है..यूहन्ना 10:10अ*

हम शैतान व उसकी युक्तियों पर अधिक गहराई से नहीं पढ़ेंगे परन्तु इतना हो कि आपको जितनी आवश्यक है उतनी जानकारी जरूर बाँटेंगे कि कैसे वह हमारी विश्वास की दौड़ में एक बाधा है। आइये हम देखें कि शैतान के तीन मुख्य उद्देश्य मसीही लोगों के विरूद्ध में क्या-क्या है।

1. **मसीह को अपने जीवन के रूप में जानने से रोकना**
2. **मसीह आपके जीवन द्वारा अपना जीवन जीना चाहता है। शैतान आपको इस बात को समझने देने में सबसे बड़ा बाधक है।**
3. **और वह आपको इस बात के लिये भी रोकता है कि आप अपने जीवन परिवर्तन के मूल स्त्रोत बनाने के लिए परमेश्वर का न खोजें।**

आप देखिये कि शैतान परमेश्वर के सत्य को भली भांति जानता है और यह भी कि यदि एक मसीही का जीवन परिवर्तित हो जाए तो इसका क्या परिणाम होगा। इसीलिए वह अपनी सारी सेना के साथ यह कोशिश करता है कि आप मसीह के सत्य को न जानें, न उस पर विश्वास करे और न स्वतंत्र हो जाए।

शैतान को सबसे बड़ा खतरा परमेश्वर की सच्चाई से है।
शैतान सबसे अधिक इस बात से घबराता है कि आप कहीं परमेश्वर के सत्य को जानकर चुन न लो और उस पर विश्वास न कर बैठे।

इसलिए उसका सबसे बड़ा उद्देश्य यह है कि वह आपको उस सत्य पर और परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर होकर चलने से रोके ताकि हमारा जीवन उन झूठे बंधनों और झूठे विश्वास में फँसे रह जाए और शारीरिक व्यवहारों और पाप की सामर्थ से पराजित रहे। शैतान यह जानता है कि यदि वह हमें झूठ पर विश्वास करने में उलझा कर रखेगा तो हम कभी जीवन परिवर्तन का अनुभव नहीं कर पाएंगे और परमेश्वर के द्वारा दिये गये बहुतायत के जीवन का वादा हमारा नहीं हो पाएगा। उसकी यह प्राथमिक युक्ति हमारे विचारों के द्वारा वह पूरी करता है।

मसीहियों के खिलाफ शैतान / दुष्टात्माओं की प्राथमिक रणनीति झूठ बोलना, धोखा देना, प्रलोभित करना, निंदा करना, और शारीरिक विचारों को उनके मन में डालना है।

हम इस बात को इस आयत से समझ सकते हैं कि शैतान के पास यह शक्ति है जब हम मत्ती 16:21-23 जिसमें यीशु और पतरस के बीच की बातचीत से हमें यह पता चलता है। पतरस ने यीशु से कहा कि यीशु कभी क्रूस तक नहीं जाएगा। यीशु ने उत्तर दिया – ''हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो।'' यहाँ यीशु सीधे शैतान से बात करता है क्योंकि वह यह बात अच्छी तरह जानता था कि शैतान ने ही उसके मन में यह विचार डाला है जिसका आधार झूठ है। इसलिये आइये, हम देखें कि किस तरह शत्रु हमारे विचारों में झूठ को डाल के हमें इस विश्वास की दौड़ से वंचित रखना चाहता है।

चौथा दिन

आइये कुछ उदाहरण देखें कि किस प्रकार हम परमेश्वर की सहायता से इन शैतान की शक्ति और युक्ति से लड़ कर इन पर विजय को प्राप्त कर सकते हैं।

उदाहरण #1: मान लीजिए आप अपने आर्थिक क्षेत्र में संघर्ष कर रहे हैं। आपकी आत्मिक इच्छा आपको अपनी आर्थिक जरूरतों की पूर्ति के लिए, परमेश्वर पर निर्भर होने के लिए प्रेरित कर रही है। परन्तु कुछ विश्वास के कदम उठाने के बावजूद आपकी आर्थिक स्थिति बदली नहीं है। उसी समय शैतान अपनी सेना के साथ इस परिस्थिति में प्रवेश लेता है और आपके विचारों में इस झूठ को डाल देता है – कि आप ऐसा सोचने लगे – मैंने परमेश्वर को एक हफ्ते का समय दिया था कि वह मेरी आर्थिक आवश्यकता को पूरी करे परन्तु अब तक परमेश्वर ने कुछ नहीं किया। शायद उसे मेरी सुध नहीं इसलिये अब मैं आप ही इस मुश्किल का हल, (परमेश्वर के बिना) निकालने की कोशिश करता हूँ।

याद रखियेः जब भी शैतान/दुष्ट शक्तियाँ आपके विचारों को प्रभावित करेंगे तो आपके विचारों में आप, मैं, मेरा ही ऊपर रहेगा और आप अपनी आवाज़ ही सुन पाएँगे।

यदि आप उन विचारों को अपना स्वामित्व देंगे तो आप शत्रु की युक्ति को सफल होने देंगे। आप उसे उसके प्रयास में सफल करेंगे जो वह आपके जीवन में कर रहा है कि आपको परमेश्वर पर नहीं बल्कि खुद पर निर्भर होने के लिए उकसा रहा है। परन्तु आप यह चुनाव कर सकते हैं कि आप इसमें परमेश्वर को शामिल करोगे और विश्वास की इस लड़ाई को लड़ेंगे कि शैतान को पराजय मिले। यहाँ एक उदाहरण दिया गया है जो इस उदाहरण का उपयोग करने की तरह दिख सकता हैः लड़ाई लड़ाई

विश्वास की लड़ाईः ''प्रभु, मैं जानता हूँ कि शत्रु मुझे प्रलोभित कर रहा है कि मैं पराजित हो जाऊँ और अपनी इस आर्थिक परेशानी के लिये आप पर निर्भर न होकर, स्वयं पर निर्भर जो जाऊँ। मैं आप पर और आपकी सामर्थ पर भरोसा करता हूँ। आप इस मोह से मुझे बाहर निकालिए और निरंतर मुझे यह याद दिलाते रहिए कि आपका नियंत्रण सब बातों पर है और आपके पास इस परेशानी का हल है।''

उदाहरण #2: आप अपने क्रोध से निरंतर पराजित है। जब आप अपने क्रोध का शिकार होते हैं तो शैतान आपके मन में यह विचार ड़ालता है कि ''मैं एक तरफ तो खुद को मसीही कहता हूँ पर दूसरी ओर मेरा क्रोध को देखूँ तो कितना गलत है। इस विचार से वह आप पर दोष लगाता है। शायद ही मैं कभी इस पर विजय पा सकूँगा/सकूँगी।''

हमें परमेश्वर का सत्य जानना अति आवश्यकत है जो रोमियों 8:1 में मिलता है – ''सो अब जो मसीह में हैं, उन पर दंड की आज्ञा नहीं'' इसलिए यदि परमेश्वर आप पर दंड की आज्ञा नहीं देता तो आप खुद को दोषी मान कर उन शैतानी विचारों को खुद पर प्रभुता न करने दें। इसलिए इस उदाहरण को देखते हुए यह विश्वास की लड़ाई आपके लिए कैसी होगी?

विश्वास की लड़ाईः ''प्रभु, सत्य वह है जो रोमियों 8:1 में मिलता है कि मुझे खुद पर दोष नहीं लगाना है। इसलिये मैं आप पर जो सत्य है, भरोसा करके इन बुरे विचारों को खुद पर प्रभुता नहीं दूँगा परन्तु आपकी सामर्थ से इन विचारों को त्यागकर आपके विचारों को खुद में बढ़ने दूँगा।''

प्रश्नः क्या आप निरंतर नकारात्मक व दोष लगाने वाले विचारों से जूझ रहे हो? क्या यह संभव है कि शैतान या दुष्टात्मा की शक्तियाँ आप में इन विचारों को डाल रहे हैं?

परमेश्वर को शामिल करनाः परमेश्वर से उन विचारों की उत्पत्ति को प्रकट करने के लिए माँगें। उन विचारों को बंदी बनाने और उनपर स्वामित्व लेने या उन विचारों को छोड़ने के लिए परमेश्वर से उनकी सामर्थ में तलाश करें।

शैतान / दुष्टात्माओं से निपटने में विश्वास के मार्ग में याद रखने की सच्चाईयाँ

1. शैतान की युक्ति यह है कि आपको भ्रमित करें और इन नकारात्मक विचारों को आप में डालकर आपको यह भ्रम दें कि यह विचार आपके अपने हैं।
2. शुरुआती दौर में इन विचारों को आप समझ नहीं पाएंगे और उनको स्वामित्व भी देंगे क्योंकि आपकी परख अभी परिपक्व नहीं हैं।

3. हालांकि जैसे जैसे आप अपनी विश्वास की दौड़ में आगे बढ़ेंगे आपके अंदर परख का आत्मा आपको ज्यादा संवेदनशील बनाएगा और आप पहचानने लगेंगे कि ये विचार किसके हैं।

शत्रु # 4: आपका वैचारिक जीवन

"क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।" रोमियों 8:7

आपके विश्वासी जीवन का सबसे बड़ा बाधक है आपकी विचारधारा। जैसे कि आपने उपर्युक्त उदारहण में देखा कि आपके विचारों को शैतान/दुष्टात्माएँ भ्रमित कर सकता है। इसके अलावा, आपका मन झूठ बोलने, अविश्वास, और अपने आप में और विचारों में निंदा कर सकता है। ये विचार लगातार आपके मन में आते रहेगे और आपको उनके बंधन में फँसाएँगे। आइये उन चार प्रकार के विचारों को देखें जो आपको विश्वास की दौड़ से वंचित रख सकते हैं।

भयभीत करने वाले विचार:

*"क्योंकि परमेश्वर ने हमें **भय की नहीं** पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।" 2 तीमुथियुस 1:7*

मुझे लगता है कि हमारी विश्वास की दौड़ में **भयभीत** करने वाले विचार सबसे बड़ी बाधा है। वह इसलिए है कि भय हमें आसानी से निर्बल कर सकता है और हमें दौड़ से वंचित कर सकता है। आइये, हम कुछ ऐसे भय के विषय में जानें जो हमारे विश्वास की दौड़ में सामने आएंगे और हम कैसे परमेश्वर की सहायता से उनसे छुटकारा पा सकते हैं।

1. अज्ञात भय

जो प्रश्न मैं अक्सर सुनता हूँ वह यह है "क्या होगा जब मैं विश्वास का कदम उठाऊँगा?' यह भय को लेकर एक वैध सवाल है क्योंकि हम सचमुच नहीं जानते कि जब हम विश्वास का पहला कदल उठाएंगे तो क्या होगा? यह अज्ञात भय हमें विश्वास का कदम लेने से हमेशा रोकेंगा। इस भय का स्त्रोत यह है कि जब हम यह कदम उठाएंगे तो क्या सबकुछ हमारी पकड़ से बाहर तो नहीं हो जाएगा?

महत्वपूर्ण सत्य

सच तो यह है कि परमेश्वर भली-भांति जानते हैं कि आगे क्या होगा जब हम विश्वास के कदम बढ़ाएँगे। जैसे जैसे हमारा विश्वास परमेश्वर के चरित्र और उसके वायदों पर बढ़ता जाएगा, हमारा भय खत्म होता चला जाएगा। असली बात यह है कि जब तक हम विश्वास के कदम उठाएंगे नहीं, तब तक हमारा विश्वास परमेश्वर की सामर्थ और उसकी योग्यता पर कभी बढ़ नहीं पाएगा।

विश्वास की लड़ाई

"प्रभु, इस विश्वास के कदम को बढ़ाते समय जो अज्ञात भय मुझ में है कि आगे क्या होगा, मैं क्या उम्मीद रखूँ इसके लिए आप अपना प्रकाशन मुझे दीजिए कि मुझे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपकी योजना व इच्छा मेरे लिए भलाई की है और आप सब बातों में सामर्थी है। इस भय को मुझमें से निकालिये और मुझे इस विश्वास के कदम बढ़ाने की प्रबल इच्छाशक्ति दीजिए।"

2. असफलता का भय

दूसरा प्रश्न जो मैं अक्सर सुनता हूँ वह यह है कि... "यदि मैं विश्वास का कदम लूँ और कुछ भी न हो या परमेश्वर उसमें सहायता के लिए न आए, तो क्या होगा?" इस विश्वास की दौड़ में (और जीवन में भी) असफलता का भय बहुत ही आम भय है। हम इस भय से इसलिए ग्रसित हो जाते हैं क्योंकि हम डरते हैं कि इस कदम को लेने के समय या बाद में हम परमेश्वर को निराश न कर दें या परमेश्वर हमें असफल न कर दें।

<u>मूल सत्यः</u> सत्य यह है कि परमेश्वर कभी आपको असफल नहीं करेगा और आप असफल हो नहीं सकते जब तक आप विश्वास के कदम बढ़ाते रहेंगे। हाँ, आप अक्सर शारीरिक व्यवहार की ओर पलटेंगे पर उसे असफलता के रूप में मत लीजिए। बस याद रखिये कि शारीरिक व्यवहार का आना इस परिवर्तन प्रक्रिया का एक भाग ही है और वह आपको असफल नहीं बनाता। क्योंकि बदलाव या परिवर्तन लाना आपके वश में नहीं है इसलिए आप इस विश्वास की दौड़ में असफल भी नहीं हो सकते।

<u>विश्वास की लड़ाईः</u> ''प्रभु मैं भयभीत हूँ कि मैं यदि यह विश्वास का कदम उठाऊँगा तो असफल हो जाऊँगा। मैं अपने इस भय को आपको सौंपता हूँ और आपसे ये बिनती करता हूँ कि आप मेरे अंदर यह विश्वास बढ़ाइये कि इस विश्वास की दौड़ में यह कदम बढ़ाने से मैं असफल नहीं होऊंगा।''

विश्वास की लड़ाईः ''प्रभु मैं अंगीकार करता हूँ कि मैं अपने शारीरिक दौड़ में लौटने लगा। मुझे याद दिलाइये कि न तो आप न ही मैं इसे असफलता के रूप में देखें। आप अपनी सामर्थ में मुझे आगे बढ़ते रहने की इच्छा दीजिए।''

3. <u>पीड़ा व क्लेश का भय</u>

इस विश्वास की दौड़ के विषय में एक और बात जो अक्सर सुनने में आती है वह है – ''मैं विश्वास की दौड़ इसलिए नहीं दौड़ना चाहता क्योंकि इसमें क्लेश और दुख का अनुभव करना पड़ सकता है।''

<u>मूल सत्यः</u> सच यह है कि हम एक पापी संसार में रहते हैं जहाँ क्लेश और दुख भरा है। हो सकता है आप आज दुखी न हो पर संभव है भविष्य में आपको दुख और क्लेश का सामना करना पड़े चाहे आप विश्वास में हो या न हो। सत्य यह है कि यह विश्वास के कदम आपको दुख और क्लेश नहीं देंगे क्योंकि इनका रचनेवाला परमेश्वर नहीं है। जब आप विश्वास के कदम उठायेंगे तो आप अनुभव करेंगे कि परमेश्वर आपको आने वाले दुख और क्लेशों से उभारेंगे और आप को उस तूफान के मध्य में परिवर्तित दृष्टिकोण देंगे।

<u>विश्वास की लड़ाई</u>

''प्रभु, मुझे डर है कि विश्वास के कदम उठाने से मुझ पर दुख और क्लेश आ सकते हैं। मुझे सिखाईए कि दुख और क्लेश पापी संसार का हिस्सा हैं। जब भी दुख और क्लेश मुझपर आये, तो आप मुझे उभारिए और उनके बीच मेरे जीवन के दृष्टिकोण को परिवर्तित कीजिए। मुझे यह भी सिखाएँ कि उन क्लेशों के समय मुझे आपकी अधिक आवश्यकता रहेगी।''

<u>परमेश्वर को शामिल करना</u>

विश्वास के मार्ग के बारे में आप किन बातों से डर रहे हैं? विश्वास के कदम उठाना शुरू करें और परमेश्वर से उसकी शांति और आत्मविश्वास के साथ अपने भय पर विजय पाने की प्रार्थना करें।

जब आप इस भय को स्वामित्व देंगे तो वे आपकी विश्वास की दौड़ से भी आपको वंचित कर देंगे।

<u>आत्म-निंदक विचार</u>

हम इस चर्चा से यह तो समझ ही गये होंगे कि शैतान हमारे मन में ये आत्म-निंदक विचार डालता है। और यह भी संभव है कि हम खुद भी बिना शैतान की सहायता से इन विचारों को उत्पन्न कर सकते हैं। शिष्यता के कई वर्षों के अनुभव के पश्चात मैंने यह जाना कि कई विश्वासी पाप में जितना समय व्यतीत नहीं करते उससे अधिक तो आत्म-निंदा में बिता देते हैं।

<u>मूल सत्यः</u> आत्म-निंदा का कारण है सत्य का न जानना – यह सत्य कि यीशु मसीह ने मेरी सारी निंदाओं को खुद अपने ऊपर ले लिये और क्रूस पर चढ़ गये। यीशु मसीह ने जो हमारे लिए किया उसका परिणाम है कि अब हम पर कोई दंड की आज्ञा नहीं – रोमियों 8:1को याद रखेंः

''सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं; क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।''

क्योंकि आप सारे दंड से यीशु मसीह के कारण छुड़ा लिए गये हो। अब आप को किसी आत्म-निंदा में रहने की कोई आवश्यकता नहीं है, न दंड का भय अपने अंदर रखना चाहिए।

हालांकि यह करने से बोलना आसान है। इसलिए आइये देखें कि परमेश्वर की सामर्थ में इन आत्म-निंदक विचारों से लड़ना कैसा होता है?

उदाहरणः आप अपने जीवन के किसी क्षेत्र में निरंतर पराजय का अनुभव कर रहे हैं। आप यह निश्चय करते हैं कि अब से मैं इन विचारों से निबटने के लिए परमेश्वर की सहायता लूँगा।

विश्वास की लडाईः ''प्रभु, मैं इन आत्म-निंदक विचारों को लेकर आप को समर्पित कर रहा हूँ। आप इन्हें बन्दी बना कर मुझे इस आत्म निंदा से मुक्त कीजिए और मुझे पूर्णतः बाहर निकालिये। मेरे मन को नया कीजिए जो यह विश्वास करे कि मुझ पर दंड की कोई आज्ञा नहीं है।''

परमेश्वर को शामिल करनाः क्या आपके जीवन में ऐसे कोई भी क्षेत्र हैं जहाँ आप आत्म निंदा के विचारों से पराजित हैं? परमेश्वर को खोजिए और इन विचारों को बंदी बना कर परमेश्वर को दें और अपने मन को रोमियों 8:1 से नया कीजिए।

पाँचवा दिन

अविश्वासी सोच

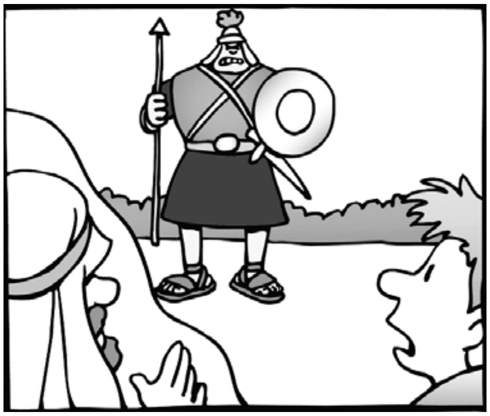

''बालक के पिता ने तुरन्त गिड़िगड़ाकर कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ, **मेरे अविश्वास का उपाय कर**।'' मरकुस 9:24

*''सो हम देखते हैं, कि वे **अविश्वास** के कारण प्रवेश न कर सके।'' - इब्रानियों 3:19*

इब्रानियों 3:19 के अनुसार, यहूदियों को 'वायदे के देश' की प्रतिज्ञा मिली। परन्तु अपने अविश्वास में उन्होंने यह निर्णय लिया कि वे उसमें प्रवेश नहीं करेंगे। वह प्रदेश परमेश्वर की असीम व बहुतायत के प्रावधान और सुरक्षा का देश था। परन्तु उन्होंने उसमें प्रवेश के लिए 'न' कह दिया - क्यों, क्योंकि उस देश में उनको जो दानव दिखे वे उनको परमेश्वर की प्रतिज्ञा से बड़े दिखें - सबसे बड़ा दानव जो हमें विश्वास करने से और परिवर्तित जीवन के अनुभव को रोकता है, वह है **अविश्वास**। क्यों?

अविश्वास हमको झूठे विचारों में बंदी बना कर रखता है और हमें शारीरिक व्यवहारों पर केंद्रित करके रखता है।

मैंने पहले भी कहा है कि हम अविश्वासी विश्वास करने वाले लोग हैं। इस बात का अर्थ यह है कि हमने उद्धार के लिये तो परमेश्वर के सत्य के विषय में अब भी अन्जान है और उस पर पूर्ण विश्वास नहीं करते। याद रखिये, परमेश्वर के सत्य को जानना और उसके सत्य को मानना या विश्वास करना ये दोनों बातें अलग है। जब हम विश्वास की दौड़ का आंरभ करते हैं तो कई विषयों को लेकर एक बड़ा अविश्वासी दृष्टिकोण हम रखते हैं, पर मेरा यह मानना है कि प्राथमिक रूप से हम इन्हें दो भागों में बाँट सकते हैं।

#1 अविश्वास - कि ईश्वर कौन है।

#2 अविश्वास कि वह हमारे जीवन में क्या कर सकता है या करना चाहता है।

इसीलिए जब अविश्वास के विचार हम में आने लगते हैं तब हमें परमेश्वर की सहायता से इस युद्ध को लड़ना है।

उदाहरणः आइये देखें कि यह मान लें कि आप इस बात पर विश्वास करना बहुत कठिन लग रहा है कि परमेश्वर सचमुच आपके जीवन में कार्य करना चाहता है। आप इस विचार से संघर्ष कर रहे हैं।

<u>विश्वास की लडाईः</u> प्रभु, मैं इस बात से या इस विचार को लेकर सघंर्ष कर रहा हूँ कि आप सचमुच मेरे जीवन को परिवर्तित करना चाहते हैं। आप मेरे इन विचारों को बंदी बनाइये और खंड़ित कीजिए और मेरे मन को नया कर दीजिए कि यह सत्य मैं समझ सकूँ कि आप सचमुच मेरे जीवन को परिवर्तित करने के इच्छुक है।

<u>विश्वास की लडाईः</u> 'प्रभु, मैं इन झूठे विचारों के गढ़ को आपके हाथों में देता हूँ कि आप मेरे जीवन को नया नहीं कर सकते। मैं इन झूठे विश्वास और विचारों को आपके हाथों में सौंपता हूँ और आपसे बिनती करता हूँ कि आप इस विश्वास की दौड़ में चलते चलते मुझे सचमुच अपने सत्य से स्वतंत्र कर सकते हैं।'

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> अपने जीवन में अविश्वास से ग्रसित उस भाग को लें जिसमें आप संघर्ष कर रहे हैं और उससे प्रार्थना में यह मांगें कि वह आपको अविश्वास से निकाल कर विश्वास की ओर ले चले।

अविश्वास का कोई भी विचार या भाग आपको इस विश्वास की दौड़ से वंचित कर सकता है।

<u>संदेह भरे विचार</u>

*''यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि **<u>परमेश्वर ने कहा,</u>** कि तुम इस बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?'' – उत्पत्ति 3:1*

*''पर **विश्वास से माँगे, और कुछ <u>सन्देह न करे,</u>** क्योंकि **<u>सन्देह</u> करने वाला समुद्र की लहर के समान** है जो हवा से बहती और उछलती है।''*– याकूब 1:6

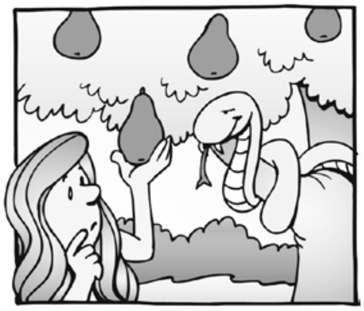

मुझे विश्वास है कि संदेह विश्वास का सबसे बड़ा बाधक है। संदेह अदन की वाटिका में शैतान की सबसे बड़ी युक्ति थी। वह भली रीति से जानता था कि यदि वह हव्वा के मन में संदेह डाल दे तो वह उसको एक स्वतंत्र फैसला लेने के लिए उकसा सकता है और हव्वा को परमेश्वर के विरूद्ध जाकर पाप करने को भड़का सकता है। मेरा अनुभव यह कहता है कि संदेह हमें अतिशीघ्र परमेश्वर पर विश्वास करने से हटा सकता है, भटका सकता है।

मैं अक्सर ही लोगों में परमेश्वर के प्रेम, उसकी सामर्थ, हमें स्वतंत्र करने की उसकी इच्छा को लेकर संदेह की बातें सुनता हूँ। जब तक एक विश्वासी संदेह में रहेगा तब तक वह विश्वास की दौड़ नहीं दौड़ सकता। यह संदेह विचारों में ही आरंभ होती है। इसलिए आइये देखें कि इन विचारों को बंदी बनाने के लिये कैसे परमेश्वर से सहायता मांगनी है?

<u>उदाहरणः</u> मान लीजिए आप विश्वास की दौड़ को कुछ समय से दौड़ रहे हैं लेकिन आप ने अब तक कोई परिवर्तन आते नहीं देखा है। तभी ये संदेह भरे विचार आप में आने लगेंगे।

<u>विश्वास की लड़ाईः</u> ''प्रभु मैं संदेह के विचारों में बढ़ रहा हूँ कि क्या आप सचमुच में जीवन में कोई कार्य कर रहे हैं या नहीं! क्योंकि मुझे कोई परिवर्तन नहीं दिख रहा। आप इन विचारों को ले लीजिए और मेरा धीरज बन जाइये कि मैं अगला विश्वास का कदम बढ़ा सकूँ।''

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> आप के जीवन के किस क्षेत्र में आप संदेह कर रहे हैं कि परमेश्वर आपको बदलना चाहता है या नहीं? या उसका कार्य हो भी रहा है या नहीं? उससे माँगियें कि वह इन संदेहों को हटाकर अपने हियाव को आप में डालें।

शंका भरा जीवन, विश्वास के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ता।

<u>विश्वास की लडाई पर अंतिम विचार</u>

इस अध्याय को समाप्त करने से पहले मैं आपसे कुछ अंतिम या सुनिश्चित सत्य बाँटना चाहता हूँ।

1. <u>कुछ युद्ध आपको लम्बे समय तक लड़ने पड़ सकते हैं।</u>

इस विश्वास की लड़ाई की अवधि भिन्न हो सकती है। कुछ बाधाएँ तुरंत खत्म हो जाएंगी जब परमेश्वर की सहायता लेंगे, वहीं कुछ बाधाएँ समय ले सकते हैं जो हमारे विश्वास की दौड़ में आएगी। आइये एक उदाहरण से समझाता हूँ।

मान लीजिए आप में बहुत अधिक खाने की आदत बड़े लम्बे समय से हैं या अश्लील फिल्में या शराब पीने या कोई और बुरी आदत है। जब आप इनसे छुटकारे की यात्रा की बाधाओं का सामना करेंगे, आपके शरीर की लालसा आपको फिर उस बुरी आदत की ओर खींचेगे। शैतान और उसकी सेना निरंतर प्रलोभन में डालेंगे। परन्तु जब आप परमेश्वर की सहायता से इस युद्ध को लडेंगे तो वह आपको स्वतंत्र करेगा, हाँ, यह युद्ध लम्बा और मुश्किल और थकानेवाला हो सकता है। हो सकता है कि उन बाधाओं से जो आसानी से नहीं टलती, आप को लम्बे समय तक लगातार इस युद्ध को परमेश्वर को साथ लेकर लड़ना पड़े।

2. आप युद्ध को छोड़ने के लिए प्रलोभित होंगे।

*"हे परमेश्वर तू **कब तक**? क्या सदैव मुझे भूला रहेगा? तू **कब तक** अपना मुखड़ा मुझ से छिपाए रहेगा? मैं कब तक अपने मन ही मन में युक्तियाँ करता रहूँ, और दिन भर अपने हृदय में दुखित रहा करूँ, कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा?" भजन 13:1,2*

आप ने कभी दाऊद के जैसा अनुभव पाया है जो उसने भजन 13 में पाया। क्या आपको उसके शब्दों में उसका संघर्ष सुनाई दिया? सच यह है कि आपको भी कई बार युद्ध को छोड़ने के विचार प्रलोभित करेंगे, खासतौर पर जब यह विश्वास का युद्ध लम्बा हो और कभी खत्म न होते हुए दिखे? हालांकि यही वह समय होगा जब आप को परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता निरंतर लेनी पड़ेगी ताकि उसकी सामर्थ में इस युद्ध को लड़ सके।

"जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें। और धीरज, और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे..।" रोमियों 15:4,5अ

आपको यह जानने की आवश्यकता है कि वह सुदृढ़ता आप उपलब्ध नहीं कर सकते। केवल परमेश्वर कर सकते हैं!! इसलिए लड़ाई में बने **रहने के लिए परमेश्वर से आपकी सुदृढ़ता बनने को** कहें।

*"परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उस की **आशा** रखते हैं, तो धीरज से उस की बाट जोहते भी हैं।" रोमियों 8:25*

रोमियों 8:25 में इस प्रकार से लिखा है कि यदि हम परमेश्वर के वायदों के विषय में आशा रखें, जो वह कर सकता है तब हम इस विश्वास की दौड़ को दृढ़ता से और धीरज से दौड़ेंगे। जैसे जैसे हम स्वतंत्रता, छुटकारा, और विजय और चंगाई का अनुभव पाएँगे, वह हमारे अंदर मसीह का हियाव उत्पन्न करेगा कि हम इस दौड़ को दौड़ते रहें और इस विश्वास की लड़ाई को लगातार लड़ते रहें।

मुख्य बिंदु

जैसे-जैसे आप विश्वास की लड़ाई में दृढ़ बने रहते हैं और अंत में परमेश्वर द्वारा अलौकिक रूपांतरण का अनुभव करते हैं, तो आपका मसीह-आत्मविश्वास बढ़ता है और आपको विश्वास का एक और कदम उठाने की इच्छा प्रदान करता है।

---

3. याद रखें कि अगर आप लड़ाई छोड़ देते हैं तो आप वहाँ खत्म हो जाएँगे।

*"कि **कुत्ता अपनी छाँट की ओर** और धोई हुई **सुअरनी कीचड़ में लोटने** के लिये **फिर** चली जाती है।" 2 पतरस 2:22*

सच्चाई यह है कि यदि हम संघर्ष छोड़ देते हैं, तो हमारे पास अपने स्रोत के रूप में शरीर की ओर मुड़ने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है। हम वापस अपनी क्षमता और अपने जीवन को रूपांतरित करने और समस्याओं को सुलझाने के लिए खुद पर निर्भर होकर उस "उड़ाऊ सूअरबाडे" की ओर जाते हैं। अगर हम उस विकल्प पर जाते हैं, तो याद रखें कि इसका परिणाम केवल वही अवस्था या इससे बदतर होगा।

महत्वपूर्ण सत्यः

यदि आप विश्वास की लड़ाई में लड़ने के लिए परमेश्वर को शामिल नहीं करते हैं, तो आप पहले ही हार चुके हो। हालांकि, अगर आप परमेश्वर से लड़ने के लिए कहते हैं, और आप लड़ाई में बने रहते हैं, तो अंत में आप विश्वास के मार्ग की सभी बाधाओं पर परमेश्वर के विजय का अनुभव करेंगे।

सारांश

मुझे भरोसा है कि अब आपके पास विश्वास की लड़ाई का अर्थ और आपके विरूद्ध बिना रूके काम कर रहे दुश्मनों के विषय में एक बेहतर समझ प्राप्त हो गई होगी। अच्छी खबर यह है कि युद्ध जीता जा सकता है और इसका नतीजा स्वतंत्रता, विजय, चंगाई और रूपांतरण होगा। इसलिए, आपके लिए मेरा प्रोत्साहन यह है कि विश्वास की लड़ाई को लड़ना जारी रखें ताकि आप भी पौलुस की तरह कह सकेः

"मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूँ मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है।"

–

2 तीमुथियुस 4:7

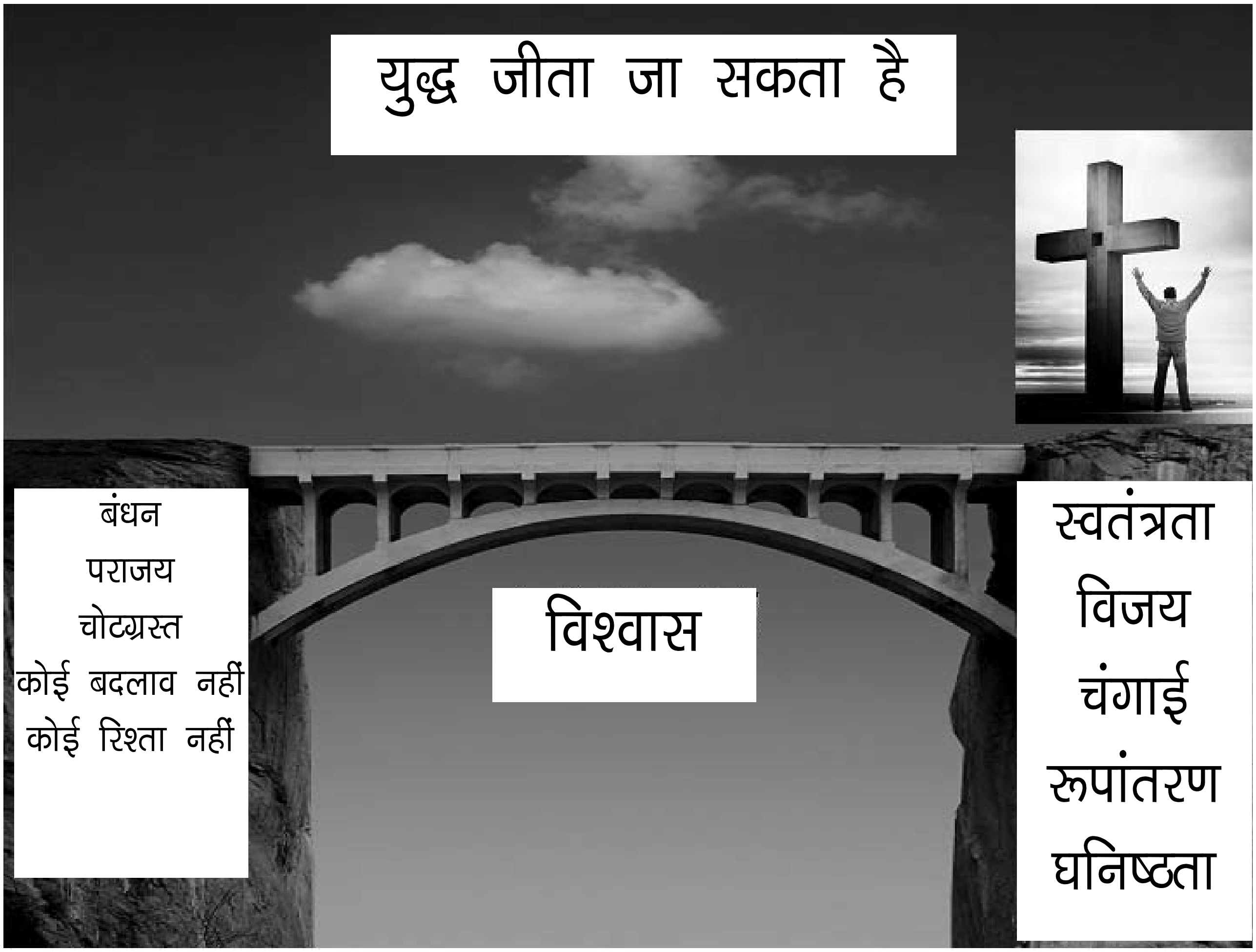

अध्याय 6

विश्वास के मार्ग के विषय में अपेक्षाएं
विश्वास में चलने के बारें मे आखरी सच

पहला दिन

अध्याय छह का अवलोकन

इस अंतिम अध्याय में मुझे लगता है कि कुछ अपेक्षाओं को देखना महत्वपूर्ण है कि हम विश्वास के मार्ग का सामना कैसे करेंगे। नीचे कुछ अपेक्षाएं हैं जिन पर हम चर्चा करेंगे।

विश्वास के हमारे मार्ग के विषय में अपेक्षाएँ

- **विश्वास के मार्ग में निरंतर चलते रहना**
- **विफलता का अनुभव**
- **विश्वास बनाम भावनाएँ**
- **परमेश्वर का समय**
- **दर्द और पीड़ा**
- **यह समझना कि परमेश्वर क्या कर रहा है**
- **संघर्ष न होने के बिंदु तक पहुँचना**

परिचय

विश्वास से चलने से आपको यह प्राप्त होगा कि आपको इसके विषय में अपेक्षा होगी कि यह कैसा दिखना चाहिए। हमारे पास यथार्थवादी और अवास्तविक उम्मीदे होंगी। इस अध्याय में हम सात सबसे आम अवास्तविक अपेक्षाओं को देखने जा रहे हैं जिन से मैं गुजरता हूँ। मैं सच्चाई के साथ अवास्तविक अपेक्षाओं का अंतर बताऊँगा। मैं विश्वास के मार्ग के विषय में कुछ अंतिम सच्चाइयों को साझा करके इस अध्याय को समाप्त करूँगा।

अपेक्षा # 1 – आप परमेश्वर में विश्वास से चलने के लिए लगातार प्रयास करेंगे।

अवास्तविक अपेक्षाः आप लगातार परमेश्वर में विश्वास से चलना चुनेंगे।

सच्चाई (यथार्थवादी अपेक्षा): विश्वास के अपने मार्ग के शुरुआती दिनों में, आप अपनी समस्याओं से निपटने, समाधान खोजने और अपना जीवन बनाने के स्रोत के रूप में कई बार अपने स्वयं (देह) पर वापस लौट जाना चुनेंगे। हालांकि, जब आप विश्वास से चलना जारी रखते हैं, तब आप स्वयं को देह की ओर कम से कम वापस ले जायेंगे।

यह नाश करने की सबसे महत्वपूर्ण अवास्तविक अपेक्षा है। विश्वास के अपने मार्ग के शुरुआती दिनों में, आप अपनी समस्याओं को हल करने या अपनी समस्याओं का सामना करने के स्रोत के रूप में कई बार अपने स्वयं (देह) पर वापस जाएँगे। क्यों? सबसे पहले, याद रखें कि आपकी देह अभाव की स्थिति में है। इसका अर्थ है कि देह से जीना वह है जिससे आप परिचित हैं। यह आपकी प्राकृतिक प्रवृत्ति है कि परमेश्वर से स्वतंत्र होकर जीवन जीने के लिए आप अपनी बुद्धि, क्षमता और इच्छाशक्ति का उपयोग करना चाहते हैं।

इसके अलावा, जब आप विश्वास से चलना शुरू करते हैं, आपके पास एक 'कमजोर' विश्वास होता है या वह जिसे यीशु ने 'अल्प' विश्वास कहा है। आपका कमजोर विश्वास आपके अविश्वास के स्तर का परिणाम है जो परमेश्वर में है और कि वह क्या कर सकता

है और क्या करेगा। आपके कमजोर विश्वास के साथ आपकी 'मजबूत' देह है। आपकी देह की आप पर बहुत जल्दी ही एक मजबूत पकड़ होगी, लेकिन जब आप अपने विश्वास का अभ्यास करना जारी रखते हैं, यह आपकी देह की शक्ति से मजबूत हो जाएगी।

इसके अलावा, जब आप परमेश्वर में विश्वास से चलना सीखते हैं, तब आप अपने जीवन को बदलने के लिए उसके जीवन और सामर्थ का अनुभव करना शुरू कर देंगे, और आपको यह सत्य पता चल जाएगा कि स्वयं (अहम्) के पास कोई वास्तविक समाधान नहीं होता है, कोई सामर्थ नहीं होता है, और जीवन की समस्याओं का हल निकालने की कोई क्षमता नहीं होती है। जब पवित्र आत्मा आपको बताता है कि आप अपनी देह के अनुसार चल रहे हैं, तो बस परमेश्वर के सामने अंगीकार करें और उस पल उसके पास वापस आ जाएँ। जब आप अपने विश्वास का अभ्यास करते हैं, आप देह पर स्वयं को कम समय के लिए वापस ले जायेंगे और वहाँ कम से कम रहेंगे।

याद रखेंः
सच्चाई यह है कि आप कई बार स्रोत के रूप में स्वयं (देह) में वापस लौटेंगे,
लेकिन याद रखें कि अगले ही पल आप अपने देह से पश्चाताप् कर सकते हैं
और अपने स्रोत के रूप में परमेश्वर के पास वापस आ सकते हैं।

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> यदि आप अपने जीवन के किसी क्षेत्र को बदलने के लिए परमेश्वर की खोज में हैं, तो क्या आपने पाया है कि परमेश्वर से दूर जाना और देह में वापस आना कितना आसान है? यदि ऐसा है, तो परमेश्वर से आपको विश्वास से चलने की इच्छा देने के लिए कहें।

अपेक्षा # 2 – असफलता कोई विकल्प नहीं है!

<u>अवास्तविक अपेक्षाः</u> मैं विश्वास के अपने मार्ग में असफल होने का जोखिम नहीं उठा सकता। अगर मैं ऐसा करता हूँ, तो मुझे असफल होने के लिए स्वयं की निंदा करनी चाहिए और यह विश्वास करना चाहिए कि मैं असफल हूँ।

<u>सत्य (यथार्थवादी अपेक्षा)</u>: आप विश्वास के अपने मार्ग में कई बार असफल होंगे। लेकिन, यह आपको असफल नहीं बनाता है या आपको आत्म-निंदा करने का अधिकार नहीं देता है।

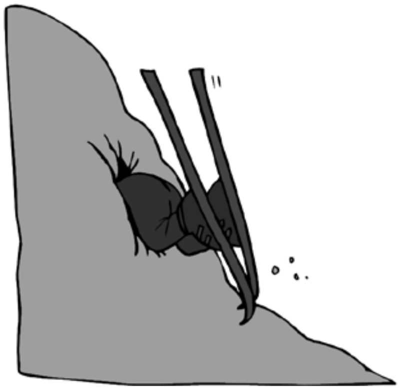

मूल सत्यः
परमेश्वर आपके असफल होने की अपेक्षा करता है!

बाइबल में कई महान संत थे जो कई बार असफल रहे, लेकिन परमेश्वर ने उन्हें सामर्थी ढंग से इस्तेमाल किया। हमें यह समझने के लिए दाऊद के अलावा किसी और को देखने की जरूरत नहीं है कि हम अपने मार्ग में कई बार असफल हो सकते हैं और असफल होंगे। हालांकि, दाऊद के विषय में परमेश्वर ने क्या कहा? वह परमेश्वर के मन के अनुसार एक व्यक्ति था। इसलिए, अक्सर असफल होने की अपेक्षा है। (मैं असफल होने को बस स्रोत के रूप में स्वयं पर वापस जाने के रूप में परिभाषित करता हूँ।) आप देखें, परमेश्वर आपके असफल होने की अपेक्षा करता है क्योंकि वह आपके जीवन के अविश्वास, आपके देह की शक्ति, पाप की शक्ति, और शैतान की शक्ति के विषय में अच्छी तरह से जानता है।

भले ही आप कई बार असफल हुए होंगे, लेकिन यह आपको असफल नहीं बनाता है और आत्म-निंदा करने का कोई कारण नहीं देता है। क्यों? रोमियों 8:37 कहता है कि आप परमेश्वर की दृष्टि में विफल नहीं हैं लेकिन मसीह में 'जयवंत से भी बढ़कर' हैं। जब आप असफल होते हैं, तो आप केवल परमेश्वर के सामने अपनी असफलता को अंगीकार करें, और अगले पल में उस पर निर्भर होने के लिए पश्चाताप करें (वापस मुड़ें)।

याद रखने का एक और महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि परमेश्वर उसे असफलता नहीं देखता जिसे आप असफलता बुलाते हैं। वह आपके देह में वापस आने को एक 'अवसर' के रूप में देखता है ताकि आपको आपकी देह की मृत्यु और उसके पास वापस आने की आवश्यकता को दिखाएँ। मुझे आशा है कि जब आप असफल होते हैं, तो आप परमेश्वर की आवाज यह कहते हुए सुनेंगेः

*'हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें **विश्राम** दूँगा।' मत्ती 11:28*

याद रखने के लिए महत्वपूर्ण सत्य यह हैः

महत्वपूर्ण सत्यः
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितनी बार असफल हो जाते हैं। यह होगा।
हालांकि, परमेश्वर आपकी असफलताओं का उपयोग अवसर के रूप में करेगा ताकि आपको आपकी शरीर की मृत्यु दिखायें और हर पल में अपनी जरूरतों के लिए उस पर निर्भर रहना सिखायें।

<u>मनन करें</u>ः इस सच्चाई पर कि जब आप देह में वापस आते हैं तो परमेश्वर आपको असफलता के रूप में नहीं देखता है।

<u>परमेश्वर को शामिल करना</u>ः यदि आप विश्वास के मार्ग में अपने आप को असफलता की तरह महसूस करते हैं, तो परमेश्वर को यह समझाने के लिए कहें कि यह असफलता नहीं हैं। इसके बजाय यह आपकी देह की मृत्यु को देखने और परमेश्वर के पास वापस जाने का अवसर है।

<u>अपेक्षा#3 – आप रूपांतरण को महसूस या अनुभव करेंगे</u>

*''क्योंकि हम **रूप को देखकर <u>नहीं</u>, पर विश्वास से चलते हैं**।'' 2 कुरिन्थियों 5:7*

<u>अवास्तविक अपेक्षा</u>ः जब आप विश्वास के कदम उठाते हैं या विश्वास में चलते हैं, तो आप अपने जीवन में काम करने वाले परमेश्वर को महसूस या अनुभव करेंगे।

महत्वपूर्ण सत्य (यथार्थवादी अपेक्षा)ः विश्वास के अपने मार्ग के अधिकांश भाग में, आप तब तक उस प्रक्रिया के परिणामों का अनुभव नहीं करेंगे, जब तक आप अपने जीवन को बदलने की परमेश्वर की प्रक्रिया को महसूस या अनुभव नहीं करेंगे (यानि स्वतंत्रता, विजय, चंगाई आदि)। आप इसे 'विश्वास' करेंगे जितना आप अनुभव करेंगे या महसूस करेंगे।

मुझे पता है कि हमने पहले इस विषय में बात की थी, लेकिन क्योंकि यह अपेक्षा विश्वास के मार्ग में इतना बड़ा संघर्ष है, कि मैं इसके विषय में थोड़ी और चर्चा करना चाहता हूँ। यह एक ठोकर है क्योंकि हम अपने मानव इंद्रियों के माध्यम से हर पल जीवन को महसूस करते हैं या अनुभव करते हैं। हालांकि, जब विश्वास से जीने की बात आती है, तो हम अपने जीवन में काम करने वाले परमेश्वर को महसूस या अनुभव नहीं कर पाते हैं।

मैं आपके जीवन में परमेश्वर के कार्य की तुलना IV (अन्तःशिरा) से करता हूँ। आइये मान लें कि आप अस्पताल में हैं, और आपको IV के माध्यम से एंटीबायोटिक (प्रतिजैविक) दिया जाता है। जब आप बैठते हैं और IV की बूँद-बूँद देखते हैं, तो आप शुरुआत में एंटीबायोटिक (प्रतिजैविक) को काम करता हुआ नहीं देख सकते हैं। हालांकि, आप मानते हैं कि यह काम कर रहा है क्योंकि आपको उस डॉक्टर पर विश्वास है जिसने आपको वायदा किया था कि यह आपको ठीक करेगा। आखिरकार, जब आप ठीक हो रहे होते हैं, तब आप अपने शरीर में उस चंगाई के प्रभाव को महसूस करेंगे।

वैसे ही, जब आप विश्वास से चलना शुरू करते हैं, तो आप में परमेश्वर का कार्य IV (अन्तःशिरा) की तरह ही होता है कि आप उसे काम करता हुआ नहीं देख सकते हैं, लेकिन आप विश्वास से जानते हैं कि वह कार्य कर रहा है क्योंकि यही वह वायदा करता है। यदि आप काफी देर तक चलते हैं, तब आप स्वतंत्रता, विजय, चंगाई, परिवर्तन और घनिष्ठता के रूप में परमेश्वर के कार्य के प्रभावों को महसूस करना शुरू कर देंगे। मुख्य 'आत्मिक IV' को लंबे समय तक परमेश्वर के वायदों का अनुभव करने के लिए पर्याप्त रखना है।

मनुष्य के रूप में हम पूरे जीवन को महसूस करते हैं और अनुभव करते हैं। हालांकि, जब विश्वास की बात आती है, तब हम परमेश्वर के परिवर्तनकारी कार्य को महसूस या अनुभव नहीं कर पाते हैं।

<u>परमेश्वर को शामिल करना</u>ः जब आप अपने विश्वास में संदेह या निराशा को महसूस कर रहे होते हैं, तो परमेश्वर को यह याद दिलाने की खोज करें कि यह एक प्रक्रिया है। उसे आपको और अधिक विश्वास के स्थान पर ले जाने के लिए कहें कि वह कार्य कर रहा है, भले ही आप उसके कार्य को महसूस न करें या अनुभव न करें।

दूसरा दिन

अपेक्षा # 4 – परमेश्वर की समय–सारिणी बनाम आपकी समय–सारिणी (टाईमटेबल)

अवास्तविक अपेक्षाः जब मैं विश्वास से चलना शुरू करता हूँ, तो परमेश्वर उन परिवर्तनों के लिए मेरे समय–सारिणी को पूरा करेगा जिन्हें मैं अनुभव करना चाहता हूँ।

मूल सत्य (यथार्थवादी अपेक्षा): परमेश्वर का आपके जीवन में अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए एक पूर्ण समय–सारिणी है (और वह आपको यह नहीं बता रहा है कि वह समय–सारिणी क्या है)।

मैं आपके विषय में नहीं जानता, लेकिन मुझे किसी भी चीज के लिए लंबे समय तक इंतजार करने की आदत नहीं है। जब मैं इग्निशन (ज्वलन) में मुख्य डालता हूँ और उसे चलाना शुरू करता हूँ, तो मुझे उम्मीद है कि कार तुरंत शुरू हो जाएगी। जब मैं कार को 'ड्राइव' में डालता हूँ और गैस पेडल को नीचे डाल देता हूँ, तो मुझे उम्मीद है कि यह तुरंत प्रतिक्रिया देगी।

आपके बारे में क्या? दुर्भाग्यवश, अधिकांश भाग के लिए, यह परमेश्वर के साथ ऐसे काम नहीं करता है। जब आप विश्वास के इस मार्ग पर चलते हैं, तब आपकी इच्छा परमेश्वर को आपको स्वतंत्रता, विजय और जल्दी से आपके घावों को चंगाई देने के लिए होगी। हालांकि, आपको जल्द ही पता चलेगा कि परमेश्वर की समय–सारिणी और आपकी समय–सारिणी समान नहीं हो सकती है।

आइये मान लें कि आप कुछ समय से परमेश्वर को आपके किसी क्षेत्र को बदलने के लिए अपेक्षा कर रहे हैं, लेकिन कुछ भी नहीं बदलता है। आपको लगता है कि आपने विश्वास से इतना पर्याप्त समय लगा लिया है कि आपको कुछ बदलाव का अनुभव करना चाहिए। जब परमेश्वर आपके समय–सारिणी के अनुसार काम नहीं करते हैं, तो आप अपने विश्वास से हटने या उसके साथ निराश होने की परीक्षा में आ जाते हैं। इनमें से कोई भी विकल्प उस बदलाव को लाने वाला नहीं है जिसे आप तेजी से लाना चाहते हैं। मुख्य यह है कि अपनी इच्छा अनुसार परिवर्तन का अनुभव करने के लिए लंबे समय तक विश्वास के कदम उठाते रहे जब आप परमेश्वर के समय–सारिणी से खुश नहीं हैं तो याद रखने की महत्वपूर्ण बात ये हैः

भले ही परमेश्वर आपके लिए उतना तेजी से काम नहीं कर रहा हो, लेकिन वह काम कर रहा है!

---

*"**हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का,** जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है।" सभोपदेशक 3:1*

हम परमेश्वर से प्रश्न पूछते हैं, '**परिवर्तन का अनुभव करने में इतना समय क्यों लग रहा है**?' हमें यह समझने की जरूरत है कि हमारे जीवन के कुछ क्षेत्रों में हम दूसरों की तुलना में 'तेजी' से बदल जाएंगे। क्यों? निम्नलिखित कुछ कारण हैं कि दूसरों की तुलना में आपके जीवन के कुछ क्षेत्रों में परिवर्तन धीरे-धीरे क्यों आता हैः

- उन झूठों पर विश्वास करने के उन वर्षो के कारण आपकी झूठ की धारणा बहुत उलझी हुई हैं।
- उस समय की अवधि की वजह से आपके मजबूत गढ़ों या बुरी आदतों की आपके ऊपर मजबूत पकड़ है जब उन्होंने आपको बंधन में रखा है।
- आपके घावों की गहराई और घावों के साथ रहने वाली समय की अवधि के परिणामस्वरूप धीमी चंगाई प्रक्रिया हो सकती है।
- दूसरों की तुलना में परमेश्वर के कार्य के लिए आपकी देह के कुछ क्षेत्र मजबूत हैं और अधिक प्रतिरोधी हैं।
- आपके अविश्वास, संदेह और भय से आप अपने जीवन में परमेश्वर के परिवर्तनकारी कार्य का विरोध कर सकते हैं और देरी कर सकते हैं।

मेरा मानना है कि जब विश्वास की बात आती है तो मुख्य प्रश्न यह होः

"आप अपने जीवन में बदलाव का अनुभव किए बिना परमेश्वर पर कितने समय तक भरोसा कर सकते हैं?"

<u>प्रश्नः</u> यदि परमेश्वर आपके समय–सारिणी को पूरा नहीं कर रहा है तो किन चीजों को करने के लिए आप परीक्षा में पड़ेंगे?

<u>परमेश्वर को शामिल करना</u>ः यदि आप किसी मुद्दे के साथ कुछ समय तक विश्वास में चल रहे हैं, और आपने किसी भी बदलाव का अनुभव नहीं किया है, तो उसे परिवर्तन का अनुभव होने तक आपको धैर्य और दृढ़ता में बनाए रखने के लिए माँगें।

याद रखियेः
विश्वास इस पर भरोसा करना है कि परमेश्वर काम कर रहा है भले ही हमारे जीवन में उस काम का कोई दृश्य या अनुभवी सबूत न हो।
विश्वास ही वह महत्वपूर्ण बात है जो परमेश्वर आपको सिखा रहा है जब आप उसकी प्रतीक्षा करते हैं।

<u>अपेक्षा # 5 – कोई दर्द या पीड़ा नहीं होगी।</u>

*"क्योंकि **जैसे मसीह के दुख हम को <u>अधिक</u> होते हैं,** वैसे ही हमारी शान्ति भी मसीह के द्वारा अधिक होती है।" 2 कुरिन्थियों 1:5*

*"हे प्रियों, **जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इस से यह समझ कर अचम्भा न करो** कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिस से **उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो**।" 1 पतरस 4:12,13*

<u>अवास्तविक अपेक्षाः</u> यदि मैं विश्वास से चलकर अपना भाग पूरा करता हूँ, तो परमेश्वर मेरे जीवन में दर्द, पीड़ा और संघर्ष को रोक देगा।

सच्चाई (यथार्थवादी अपेक्षा): दर्द, पीड़ा या संघर्ष होगा, लेकिन जब वह समय आपके जीवन में आता है तो परमेश्वर आपकी जरूरतों को पूरी करेगा और आपको अपने समय में 'दैवीय अच्छाई' को प्रकट करेगा कि वह आपके दुखों के माध्यम से काम कर रहा है।

मुझे दर्द, पीड़ा या संघर्ष पसंद नहीं है (न ही वे मुझे कभी पसंद आएँगे)। मुझे पता है कि आप भी ऐसे ही महसूस करते हैं। हालांकि, परमेश्वर कभी यह वायदा नहीं करता कि विश्वास के हमारे मार्ग में दर्द या पीड़ा नहीं होगी। क्यों? हम एक गिरे हुए संसार में रहते हैं, और इस पतित संसार में हमेशा कुछ स्तर पर पीडाएं रहेगी।

तीन प्रकार के लोग होते हैंः जो पीड़ाओं से गुजरे हैं, जो पीड़ाओं से गुजर रहे हैं, और जो पीड़ाओं से गुजरेंगे। कभी न कभी हम सभी इन तीन श्रेणियों में आ जाएँगे। हालांकि, उन मसीहियों के लिए जो पीडाओं के दौरान विश्वास में चलते हैं, परमेश्वर आपकी जरूरतों को पूरा करने का वायदा करता है (फिलिप्पियों 4:19), इसके माध्यम से एक दैवीय अच्छा उद्देश्य पूरा करेगा (रोमियों 8:28), और इसका उपयोग करने के द्वारा उस पर आपकी गहरी निर्भरता को लाएगा (यूहन्ना 15:5)।

*"और हम जानते हैं, कि **जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर <u>भलाई</u> ही को उत्पन्न करती है** अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" रोमियों 8:28*

जो मुझे अपने व्यक्तिगत मार्ग में सच लगता है वह यह है किः

रूपांतरण की मेरी सबसे बड़ी अवधि तब हुई जब मैं दर्द में या पीड़ा में था।

यहाँ फिर से इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं दर्द और पीड़ा को आमंत्रित करता हूं। हालांकि, जब मैं अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य पर वापस देखता हूं, दर्द या पीड़ा के परिणामस्वरूप 'दैवीय अच्छाई' मेरे जीवन में बदलाव लाती है। मुझे समझाने के लिए एक व्यक्तिगत कहानी साझा करने दें।

मेरे पास एक पुरानी स्वास्थ्य स्थिति है जो कभी नहीं जा सकती। जब मैं इस स्थिति का सामना कर रहा था, तब मैंने परमेश्वर से यह 'कांटा' दूर करने के लिए आग्रह किया। जब मैंने विश्वास से सचमुच चलना शुरू किया, तो मैंने तर्क दिया कि परमेश्वर इस कांटे को हटा देगा। हालाँकि, इसे लिखते हुए मैं अभी भी इस स्थिति से पीड़ित हूँ। अंतर यह है कि मुझे अपने कांटे से होने वाले दैवीय अच्छाई समझ आ गई है। परमेश्वर मुझे निर्भरता, करुणा और दृढ़ता सिखाने के लिए मेरी पीड़ा का उपयोग कर रहा है। अब मैं कांटे को हटाने के लिए परमेश्वर को नहीं कहता। इसके विपरीत, अब मैं अपने 'काँटे' को गले लगाता हूँ क्योंकि इसके माध्यम से मैं परमेश्वर पर अधिक निर्भरता का और परिवर्तन का अनुभव कर रहा हूं जो पौलुस कहता है, 'जितना मैं कहता या सोच सकता हूँ उससे काफी अधिक है।'

पीड़ा के बीच में इससे भागना, असंवेदना उत्पन्न करना या इसे अस्वीकार करने का प्रयास करने की कोशिश करना बहुत आसान है। सच्चाई यह है कि परमेश्वर के पास आने के अलावा और कोई जगह नहीं है। वह अकेला ही है जो आपकी पीड़ा के बीच में विश्राम, धीरज और आशा है। काश, मैं आपको यह वायदा कर सकता कि विश्वास से चलने के कारण आपको कोई पीड़ा नहीं होगी, लेकिन मैं यह वायदा नहीं कर सकता। हालांकि, मैं महान मसीह-विश्वास के साथ यह कह सकता हूँ कि आपके विश्वास से चलने के कारण जो पीड़ा होगी उसका हमेशा एक दैवीय अच्छा उद्देश्य होगा।

'दैवीय अच्छाई'

परमेश्वर आपके दर्द और पीड़ा का उपयोग करके आपको आपके जीवन को बदलने के लिए महान निर्भरता की ओर आकर्षित करेंगे, और आप पर यह प्रकट करने के लिए कि पीड़ा के समय के दौरान उसकी कृपा और दया कैसी दिखती है।

<u>महत्वपूर्ण टिप्पणीः</u> यदि आप अपनी देह में चलने का चुनाव करते हैं, तो परमेश्वर आपको अनुशासित करने के रूप में पीड़ा का उपयोग करेगा और आपको उस पर निर्भरता पर वापस लाएगा।

<u>परमेश्वर को शामिल करनाः</u> आपके जीवन के किस क्षेत्र में आप किसी संघर्ष या पीड़ा का अनुभव कर रहे हैं जो कभी समाप्त न होने वाला दिखता है? परमेश्वर से इस पीड़ा से आपको गहरी निर्भरता की ओर आकर्षित करने के लिए कहें। उसे आपको यह प्रकट करने के लिए कहें कि 'दैवीय अच्छाई' क्या काम कर रही है। यदि दर्द दूर नहीं जाता है तो उस दर्द के बीच में आपका दृष्टिकोण बदलने के लिए कहें।

<u>तीसरा दिन</u>

<u>अपेक्षा # 6 - परमेश्वर परिवर्तन प्रक्रिया में क्या कर रहा है आप यह समझेंगे।</u>

*''क्योंकि यहोवा कहता है, **<u>मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है</u>**, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और **तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है**।'' यशायाह 55:8,9*

''उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते है। फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य बूझ नहीं सकता।'' सभोपदेशक 3:11

अवास्तविक अपेक्षाः मैं यह समझूँगा कि परमेश्वर मेरे जीवन में क्यों और क्या कर रहा है।

महत्वपूर्ण सत्य (यथार्थवादी अपेक्षा): कई बार आप यह समझ नहीं पाएँगे कि परमेश्वर आपके जीवन में क्या कर रहा है। आखिरकार, परमेश्वर, मसीह की समानता में परिवर्तित होने की आपकी आत्मिक नियति को पूरा कर रहा है। यह परमेश्वर निर्धारित करेगा कि आपको यह जानने की जरूरत है या नहीं कि वह आपके जीवन में क्यों या क्या कर रहा है। उसका आपको बताने या नहीं बताने का हमेशा एक उद्देश्य होता है कि वह क्या कर रहा है।

पौलुस 2 कुरिन्थियों 4:8 में यह कहता हैः

*'हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; **<u>निरुपाय</u> तो हैं, पर निराश नहीं होते**।'*

मेरा मानना है कि हम सभी पौलुस के साथ यह समझ सकते हैं। मुझे पता है कि मैं निरुपाय होता हूँ कि परमेश्वर कुछ क्यों कर रहे हैं या क्यों वह कुछ नहीं कर रहे हैं। सच्चाई यह है कि हम सभी अपनी यात्रा के विभिन्न बिंदुओं पर, हमारे जीवन में परमेश्वर के कार्य करने की बात करते समय निरुपाय हो जाते हैं।

हमारे लिए परमेश्वर की योजना का भाग निरुपाय होना है क्योंकि निरुपाय होना/हैरान होना परमेश्वर पर निर्भरता की आवश्यकता को पैदा करता है। मेरे निरुपाय होने के माध्यम से परमेश्वर मुझे यह सिखा रहा है कि मुझे यह समझने की जरूरत नहीं है कि वह क्या कर रहा है। उसने यह पता लगा लिया है। वह आदि से अंत को जानता है, और वह सिर्फ आपसे और मुझसे यह कह रहा है कि उस पर भरोसा करें और यह पता लगाने की कोशिश करना छोड़ दें कि वह क्यों और क्या कर रहा है। (क्या यह संभव है कि हमें 'क्या' और 'क्यों' पता होना चाहिए क्योंकि हम सबकुछ नियंत्रण में रखना चाहते हैं?)

आप अपने निरुपाय होने के समय में विश्राम कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर जानते हैं कि वह क्यों और क्या कर रहे हैं, और सब उसके नियंत्रण में है।

अन्य प्रश्न जो हमने सभी से पूछा है, 'क्यों? ऐसा क्यों हो रहा है या यह क्यों नहीं हो रहा है? आप इसे क्यों नहीं रोकेंगे या आप ऐसा क्यों नहीं करते?' हम सभी के पास 'क्यों' प्रश्न हैं और हम उन प्रश्नों के उत्तर चाहते हैं। हालांकि, हमारे कई 'क्यों' प्रश्न अनुत्तरित होते हैं। क्योंकि हम इन समयों के दौरान भूल जाते हैं कि परमेश्वर स्वयं परमेश्वर है, और वह हमें बताएगा कि वह क्यों चुनता है या वह क्या चुनता है। हमें यह बताने के लिए यह परमेश्वर का विशेषाधिकार है कि वह हमारे जीवन में क्यों या क्या कर रहा है। आपको उत्तर देने के लिए परमेश्वर के पास हमेशा एक दैवीय उद्देश्य होता है (या नहीं)।

जब आप बेहोशी की दवाई ले सकते हैं और एक मस्तिष्क के सर्जन पर भरोसा कर सकते हैं जो मस्तिष्क सर्जरी में ठीक से क्या करना है, जानता है, तो क्या हम अपने 'स्वर्गीय सर्जन' पर भरोसा नहीं कर सकते हैं, जो जानता है कि हमें क्या चाहिए और हमें इसकी आवश्यकता क्यों है? जब हम उस पर भरोसा करना सीखते हैं, हम इस तथ्य में आराम करेंगे कि वह वास्तव में जानता है कि वह क्या कर रहा है और यह हमारे अनंत लाभ के लिए होगा।

मैं जानता हूँ कि उत्तर संतोषजनक नहीं हो सकता है, लेकिन मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ:

अगर परमेश्वर का यह मानना है कि आपको पता होना चाहिए कि क्यों या क्या, तो वह आपको बताएगा।
अन्यथा, आपका भाग यह है कि आप भरोसा करें कि वह क्यों और क्या जानता है और उसमें विश्राम करना है।
विश्वास = विश्राम!

<u>परमेश्वर को शामिल करना</u>: आपके जीवन में क्या हो रहा है, जब आप नहीं समझते कि परमेश्वर क्यों कर रहे हैं या क्या कर रहे हैं? परमेश्वर से आपको यह बताने के लिए कहें कि आपको तब तक जानने की जरूरत नहीं है जब तक कि वह आपको बताने के लिए न चुनता हो। विश्राम और शांति से संबंधित मुद्दों के विषय में आपको प्रवृति देने के लिए कहें।

<u>अपेक्षा # 7 – हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचेंगे जहाँ आंतरिक संघर्ष खत्म हो जाएगा।</u>

<u>अवास्तविक अपेक्षा</u>: मैं विश्वास के अपने मार्ग में एक बिंदु पर पहुँच जाऊँगा जहाँ आंतरिक संघर्ष नहीं होंगे।

मूल सत्य (यथार्थवादी अपेक्षा): जब तक आप यीशु के साथ आमने-सामने नहीं आते तब तक अविरल आंतरिक संघर्ष होगा। हालांकि, आप में मसीह ने उन सभी आंतरिक और बाहरी संघर्षों को दूर कर दिया है जिनका आप कभी सामना करेंगे। जब आप परमेश्वर में विश्वास से चलते हैं, आप अपने आंतरिक (और बाहरी) संघर्षों के माध्यम से अधिक जीत, अधिक स्वतंत्रता और अधिक परिवर्तन का अनुभव करेंगे।

कई मसीही इस झूठी धारणा में हैं कि यदि वे विश्वास में काफी लम्बे समय तक चलते हैं, तो वे एक ऐसे स्थान तक पहुँच जाएँगे जहाँ कोई और संघर्ष नहीं होगा। मैं आपको यह बताने में सक्षम होना चाहूँगा कि यह सत्य है। लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं होगा जब तक हम स्वर्ग तक नहीं पहुँच जाते। हमारी देह, पाप की सामर्थ, और हमारे शारीरिक व्यवहार के साथ आंतरिक संघर्ष पूरे जीवनकाल तक चलेगा।

हालांकि, इससे पहले कि आप उदास हो जाएँ, मैं आपको आश्वस्त करता हूँ कि आप अपनी देह पर अविश्वसनीय जीत और अपने पाप के तरीकों पर वास्तविक स्वतंत्रता अनुभव कर सकते हैं जिसने आपको लगातार हराया है। आप

अपने घावों की महान चंगाई का अनुभव कर सकते हैं। इसके अलावा, जब आप मसीह में विश्वास से चलते रहते हैं, आप स्वाभाविक परिवर्तन का अनुभव कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर आपके शारीरिक व्यवहार को मसीह के व्यवहार में बदल देता है। वास्तव में, आप उस स्थान पर पहुंच जाएंगे जहां पौलुस ने इफिसियों 3:20 में कहा थाः

*"**अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक** काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है।"*

अच्छी खबर यह है कि जब आप विश्वास के अपने मार्ग में दृढ़ रहते हैं:

परमेश्वर आपको कई स्थानों पर ले जाएगा जहाँ आप ऐसे अवर्णनीय आनंद (1पतरस 1:8) और शांति का अनुभव करेंगे जो समझ से बिलकुल परे है (फिलिप्पियों 4:7)।

<u>परमेश्वर को शामिल करना</u>: परमेश्वर को आपको आत्मविश्वास देने के लिए ढूँढ़ें जो आप किसी भी बिंदु पर वास्तव में उसके स्वतंत्रता, विजय, चंगाई और परिवर्तन के वायदों का अनुभव करेंगे।

सारांश

मेरे मित्रों, मैंने इन सभी अपेक्षाओं को बहुत अधिक अनुभव किया है। मैं कई बार देह में वापस लौटा। हालांकि, हर बार जब मैं अपने 'प्रोडिगल पिगपेन' (उड़ाऊ सूअर-बाड़ा) में लौट आया, तो मुझे जल्द ही एहसास हुआ कि कुछ भी सुधरने वाला नहीं था (और यह आमतौर पर खराब होता गया)। मुझे एहसास हुआ कि मेरा एकमात्र वास्तविक विकल्प परमेश्वर के पास वापस आना और विश्वास के कदम उठाना था। मैं आज भी समय-समय पर 'लडखडाता' हूँ, लेकिन मैं अपनी देह की मृत्यु को और तेजी से देखता हूँ, और यह मुझे विश्वास के कदम पर फिर से ले आता है।

चौथा दिन

विश्वास के आपके मार्ग के विषय में अंतिम सत्य

मूल सत्य # 1 - विश्वास का मार्ग अधिक स्वाभाविक बन जाएगा।

हमने पहले से ही इस तथ्य के विषय में बात की है कि आपके शुरुआती दौर में विश्वास के मार्ग के विषय में आपको इच्छानुरूप होना चाहिए। आपको विश्वास से कैसे जीना है यह सीख रहे हैं, और जैसा कि मैंने पहले कहा था कि यह एक नए देश में जाने और एक नई भाषा और संस्कृति सीखने जैसा है। मुझे आशा है कि आप इस बिंदु पर यह जानते हैं कि यह एक यात्रा है जिसे आपने पहले कभी अनुभव नहीं किया है। यह मुश्किल है। प्रतिरोध होगा, लेकिन परिवर्तित होने का प्रतिफल इसके योग्य है। अच्छी खबर यह है कि विश्वास से चलना सीखना उतना ही आसान हो जाएगा जितना आप विश्वास में चलना जारी रखते हैं।

एक उदाहरण जो मैं इसका वर्णन करने के लिए उपयोग करता हूँ वह तब होता है जब मैं मानक या स्टिक शिफ्ट ट्रांसमिशन वाहन कैसे चलाया जाता है सीख रहा था। जब मैंने पहली बार सड़क पर चलाना शुरू किया, तो मुझे समझ में आया कि क्लच और गैस पेडल कैसे काम करता था, लेकिन मैंने वास्तव में पहले उस चलाने की कोशिश नहीं की थी। पहले जब मैं इंजन चलाता था तो मैं लगभग दस फीट तक चला जाता था। फिर अगली बार मैं लगभग 20 फीट तक चला गया। जितना अधिक मैंने चलाया, क्लच का उपयोग करना और गियर को स्थानांतरित करना आसान हो गया था। यह मसीही मार्ग में भी ठीक वैसा ही है। शुरुआत में आपको विश्वास के कदम उठाने के विषय में इच्छानुरूप होना चाहिए। आप कई बार देह में जाकर अपने 'आत्मिक' इंजन को मार देंगे। हालांकि, किसी बिंदु पर विश्वास से चलना सांस लेने के समान बन जाएगा। यह और अधिक स्वाभाविक हो जाएगा। आप स्वयं पाएंगे:

- **अक्सर देह में वापस जाना कम होगा।**
- **जब आप देह में वापस जाते हैं तो अपने शारीरिक 'उड़ाऊ सूअर-बाड़ा' में कम समय बिताएँगे।**
- **अपनी देह की मृत्यु को और जल्दी पहचानना और परमेश्वर के पास वापस जाना।**
- **विश्वास से चलने के लिए और अधिक इच्छुक होंगे।**

परमेश्वर को शामिल करनाः जब आप अपने विश्वास के मार्ग से निराश हो जाते हैं, तो धीरज और दृढ़ता के लिए परमेश्वर को खोजें और जब आप ऐसा करते हैं, तो आपको पता चलेगा कि आपका विश्वास का मार्ग 'आत्मिक' रूप से और स्वाभाविक हो जाएगा।

मूल सत्य # 2 – आपका परिवर्तन जीवनभर चलने वाली शल्य संबंधी प्रक्रिया है।

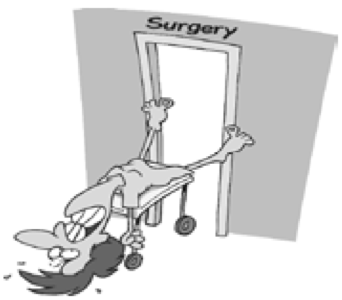

*''क्योंकि ह**म जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु** का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो।'' 2 कुरिन्थियों 4:11*

जिस क्षण आपने मसीह पर भरोसा किया, परमेश्वर ने आपके जीवन को बदलने की जीवन भर शल्य सम्बन्धी प्रक्रिया शुरू की। वह आपको आपकी देह, आपके झूठ बोलने, और आपके शारीरिक व्यवहार से दूर करने की प्रक्रिया में है। हालांकि, इस प्रक्रिया से जुड़े दर्द के लिए कोई बेहोशी की दवा नहीं है। इस शल्य-चिकित्सा के साथ अलग-अलग बिंदुओं पर आप शल्य-चिकित्सा तालिका से कूदकर देह पर वापस जाना चाहेंगे (और आप करेंगे)। हालांकि, परमेश्वर आपको इतना प्रेम करता है कि वह आपको निरंतर शल्य-चिकित्सा के लिए स्वयं की ओर लगातार आकर्षित करेगा।

पवित्र आत्मा आपकी शल्य-चिकित्सा प्रक्रिया के सटीक तरीके को जानता है। दैवीय शल्य चिकित्सक के रूप में, वह समझता है कि आपकी रूपांतरण प्रक्रिया में आगे क्या होना चाहिए। जब आप विश्वास की अपने मार्ग को जारी रखते हैं, तब आप स्वयं को मेज पर अधिक से अधिक पाएंगे क्योंकि आप स्वतंत्रता, विजय और चंगाई का अनुभव कर रहे हैं जिसका वह वायदा करता है। आपको और भी अधिक से अधिक राजी किया जाएगा कि परमेश्वर जानता है कि वह क्या कर रहा है और वह जो भी कर रहा है वह आपके लिए उसके प्रेम से प्रेरित होकर कर रहा है।

परमेश्वर की दैवीय शल्य-चिकित्सा बिना बेहोशी के होती है।
हालांकि, शल्य-चिकित्सा की मेज पर रहें और परमेश्वर को कार्य करने दें।

परमेश्वर को शामिल करनाः आज आप किस आत्मिक सर्जरी (शल्य-चिकित्सा) से गुजर रहे हैं जो आपको शल्य-चिकित्सा की मेज से कूदने के लिए मजबूर करेगा? परमेश्वर से आपको मेज पर रहने की इच्छा देने के लिए कहें ताकि वह इस क्षेत्र में शल्य-चिकित्सा (सर्जरी) पूरी कर सके।

मूल सत्य # 3 – प्रवृत्ति आपकी प्रगति को मापने के लिए होगी। न करें!

मुझे डर है कि हम नहीं जानते कि हमारी 'प्रदर्शन' मानसिकता क्या है। इसका अर्थ है कि हमारे जीवन के कई क्षेत्रों में हम कुछ मानक या किसी और के खिलाफ स्वयं को मापने या तुलना करने के लिए प्रवृत्त होते हैं। आपके विश्वास के मार्ग में, आप अपनी प्रगति को मापने और दूसरों के साथ अपने आत्मिक मार्ग की तुलना करने के लिए प्रेरित होंगे। कृपया ऐसा मत करें। कारण दो गुना हैः

1. आप वास्तव में अपनी आत्मिक प्रगति को माप नहीं सकते हैं। केवल परमेश्वर कर सकते हैं।
2. प्रत्येक व्यक्ति की यात्रा उसके लिए अनोखी होती है। इसलिए, आपके पास अपनी यात्रा की तुलना करने के लिए कोई आधार नहीं है।

दुर्भाग्यवश, आप शुरुआत में संभवतः अपने विश्वास के मार्ग की दूरी को मापने और तुलना करने के लिए प्रलोभित होंगे। यदि आपको लगता है कि आप दूसरों की तुलना में तेजी से प्रगति कर रहे हैं तो परिणाम यह होगा कि आप अपने समय-सारिणी के अनुसार प्रगति नहीं कर रहे हैं तो आप स्वयं की निंदा करेंगे या अन्यथा आपको आत्म-प्रशंसा (यानि गर्व) का अनुभव होगा। आप जल्द ही पता लगाएंगे कि मापना और तुलना करना आपको केवल शारीरिक रूप से निंदा या गर्व की ओर ले जाएँगे। इसलिए, अपने 'आत्मिक' नापने के फीते को नीचे रखें और यात्रा का आनंद लें।

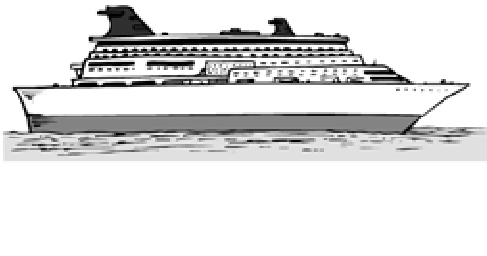

भले ही आप अपनी प्रगति को मापने में सक्षम नहीं होंगे, फिर भी अपनी आत्मिक यात्रा के विषय में ऐसे सोचें जैसे कि वह क्रूज़ जहाज की यात्रा हो। यदि आप एक क्रूज़ जहाज पर हैं जो बंदरगाह छोड़ रहा है, और आप जहाज के सामने हैं, तो आप यह नहीं बता सकते कि आपने कितनी दूर यात्रा की है। हालांकि, अगर आप जहाज

के पीछे आते हैं, तो आप स्पष्ट रूप से देखेंगे कि आपके द्वारा आने वाले बंदरगाह से कितना दूर है। इसलिए, जब आप विश्वास से चलते हैं, वहाँ देखें कि आपने कहाँ से शुरुआत की थी, और आप यह देखना शुरू कर देंगे कि आपने परिवर्तन के मार्ग पर कितनी दूर यात्रा की है। आप आश्चर्यचकित होंगे कि परमेश्वर आपको कितनी जल्दी बंदरगाह से दूर ले जाता है।

ध्यान दें: किसी बिंदु पर, जब आप वापस देखेंगे तो यह देखने में सक्षम होंगे कि परमेश्वर आपको कहाँ ले आया है।

परमेश्वर को शामिल करना: क्या आप अपनी आत्मिक प्रगति को मापने के लिए प्रलोभित हुए हैं? यदि ऐसा है, तो परमेश्वर से आपको यह बताने के लिए कहें कि आप कभी भी इसे मापने में सक्षम नहीं होंगे। जब आप विश्वास से चलते हैं, अपनी नाव के पीछे जाएं और आप देखना शुरू कर देंगे कि आपने परिवर्तन की अपनी यात्रा में कितनी दूर यात्रा की है।

मूल सत्य # 4 – जब आप विश्वास से चलना जारी रखते हैं, आपके पास देखने के लिए आत्मिक आंखें होंगी कि परमेश्वर आपके जीवन में क्या है।

*''और **हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं** को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई **वस्तुएँ थोड़े ही दिन** की हैं, परन्तु **अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं**।'' 2 कुरिन्थियों 4:18*

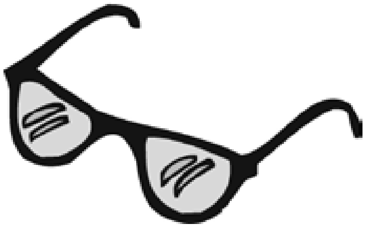

अंधे आदमी ने कहा, 'मैं अन्धा था और अब देखता हूँ' (यूहन्ना 9:25)। जब हम विश्वास के इस मार्ग को शुरू करते हैं, तो हम काफी हद तक अंधे आदमी की तरह होते हैं। हम सब देख सकते हैं कि हमारी पाँच इंद्रियाँ हमें क्या बताती हैं। हालांकि, चश्में से हमें स्पष्ट दृष्टि मिलती है, तो जब हम विश्वास से चलते रहते हैं परमेश्वर हमें ''आत्मिक'' चश्मा देता है जिससे हम अपने जीवन को देख सकते हैं। इन ''आत्मिक'' चश्मों के माध्यम से हम किन चीजों को देखने लगते हैं?

हम ''दैवीय अच्छाई'' को देखना शुरू करते हैं जब हम दर्द और संघर्ष के बीच में होते हैं। हम परमेश्वर के उद्देश्यों को और अधिक स्पष्ट रूप से देखने लग जाते हैं और यह कि वह कैसे हमारे रूपांतरित होने की आत्मिक नियति को पूरा कर रहा है। जब हम परमेश्वर की सामर्थ में चलते हैं तो हम अपने दुश्मनों को शक्तिहीन के रूप में देखते हैं। हम हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम को भी देखते हैं, भले ही हमारी परिस्थितियां सबकुछ अन्यथा कहती है।

मैं एक और समरूपता का उपयोग करके 30,000 फीट से परमेश्वर के दृष्टिकोण से आपका जीवन देख रहा हूँ। शुरुआत में आपका विश्वास का मार्ग जमीन के स्तर पर होता था। हालाँकि, जब आप अपने विश्वास में बढ़ते हैं, आप ऊंचाई प्राप्त करते हैं और परमेश्वर को और अधिक रूप से देख सकते हैं कि वह क्या कर रहा है और क्यों कर रहा है। आपके जीवन में क्या चल रहा है 30,000 फीट पर देखने से बहुत स्पष्ट होगा।

परमेश्वर आपको वह देखने के लिए आत्मिक आँखें देगा जिसके लिए एक भौतिक व्यक्ति अंधा है।

अभ्यास: वर्तमान में आप किस समस्या का सामना कर रहे हैं जिसे आपको 30,000 फीट से देखने की जरूरत है? परमेश्वर को आपकी समस्या से संबंधित सभी सच्चाई को वास्तविकता बनाने के लिए कहें।

मूल सत्य # 5– आप कल परिवर्तन का अनुभव करने के लिए विश्वास के कदम से नहीं जुड़ सकते हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण सत्य जिसे हमें समझने की जरूरत है कि हम कल परिवर्तन का अनुभव करने के लिए विश्वास के कदम से नहीं जुड़ सकते हैं। यह एक संघर्ष है क्योंकि हम 'आत्मिक' बिंदुओं से जुड़ना चाहते हैं और यह पता लगा सकते हैं कि हमारे जीवन में जो कुछ भी चल रहा है वह कैसे जुड़ा हुआ है। सच्चाई यह है कि परमेश्वर जानता है, और हमारा भाग उस पर भरोसा करना और उस तथ्य में विश्राम करना है। विश्वास यात्रा का भाग यह जानना है कि कैसे इस तथ्य में विश्राम करना है कि परमेश्वर जानता है कि बिंदु कैसे जुड़े हुए हैं, और हमें यह जानने की आवश्यकता नहीं है।

<u>पाँचवां दिन</u>

<u>मूल सत्य # 6 – विश्वास का आपका मार्ग गति का निर्माण करेगा जैसे जैसे आपका मसीह–विश्वास बढ़ता जाता है।</u>

*''हम **मसीह के <u>द्वारा</u>** परमेश्वर पर ऐसा ही **<u>भरोसा</u>** रखते हैं।'' 2 कुरिन्थियों 3:4*

जैसा कि मैंने पहले कहा है, मैं 'मसीह–आत्मविश्वास' की कमी में रहने वाले बहुत से मसीहियों को देखता हूँ। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख भी किया था, ऐसा इसलिए है क्योंकि बहुत से लोग विश्वास में काफी लंबे समय तक चल चुके हैं ताकि वे अपने मन को सत्य में नवीनीकृत करने में परमेश्वर के अलौकिक कार्य का अनुभव कर सकें जो उन्हें स्वतंत्र कर रहा है।

हालांकि, जब आप विश्वास से चलना जारी रखते हैं, आपका आत्मिक मार्ग ढलान की ओर झुकने वाले बर्फ के गोले की तरह होगा। जैसे–जैसे आपका मसीह–आत्मविश्वास बढ़ता है, आप आत्मिक गति प्राप्त करते हैं क्योंकि आपकी इच्छा और स्वेच्छा परमेश्वर के परिवर्तन को अधिक से अधिक अनुभव करने के लिए बढ़ती है।

चुनौतीः

परमेश्वर की क्षमता में अपने मसीह–विश्वास और अपने जीवन को बदलने की उसकी इच्छा को बनाने के लिए अलौकिक परिवर्तनों का अनुभव करने के लिए विश्वास के पर्याप्त कदम को उठाना।

<u>मूल सत्य # 7 – परिवर्तन अनिवार्य रूप से आ जाएगा।</u>

क्योंकि परिवर्तन की प्रक्रिया मुख्य रूप से वृद्धि सम्बन्धी होती है, मुझे कैसे पता चलेगा कि परिवर्तन हो रहा है? रोमियों 15:8 में, पौलुस हमें बताता है कि परमेश्वर अपने वायदो की पुष्टि करेगाः

'मैं कहता हूँ, कि जो प्रतिज्ञाएँ बाप–दादों को दी गई थीं, उन्हें दृढ़ करने के लिये मसीह, परमेश्वर की सच्चाई का प्रमाण देने के लिये खतना किए हुए लोगों का सेवक बना।'

हम विश्वास से जानते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवन में काम कर रहा है। हालांकि, परमेश्वर आपकी सोच, आपके विकल्पों, व्यवहारों और आपकी भावनाओं में बदलावों की पुष्टि करना चाहता है। इसलिए, मैंने कुछ तरीकों को सूचीबद्ध किया है जो परमेश्वर आपके जीवन में अपने कार्य की पुष्टि करने के लिए उपयोग कर सकता हैः

1. **आपका मन आपके झूठें पर विश्वास करने के बजाय परमेश्वर की सच्चाई पर विचार करना और विश्वास करना शुरू कर देता है।**
2. **आपकी इच्छा उसकी सच्चाई के आधार पर चुनाव करना शुरू कर देती है जो आप सोच रहे हैं और महसूस कर रहे हैं। इससे आप के अन्दर परमेश्वर के पास आने की और अधिक इच्छा पैदा होगी कि वह आपके मन को उसकी सच्चाई के लिए और अधिक नवीनीकृत करे।**
3. **आप अपने दृष्टिकोण और व्यवहार में अलौकिक परिवर्तन का अनुभव करना शुरू कर देते हैं।**
4. **आप अपने घावों की चंगाई का अनुभव करना शुरू कर देंगे।**
5. **आप उन क्षेत्रों में स्वतंत्रता और विजय का अनुभव करना शुरू कर देंगे जहां पहले आपने केवल बंधन अनुभव किया था और हार मान ली थी।**
6. **परमेश्वर में विश्वास से चलने की आपकी इच्छा बढ़ेगी, और स्वयं की ओर लौटने की आपकी इच्छा कम हो जाएगी।**
7. **आप पाएंगे कि परमेश्वर के लिए आपका प्रेम और इच्छा बढ़ेगी।**
8. **आप स्वयं को और अधिक से अधिक चकित, अभिभूत, और आश्चर्यचकित पाएंगे कि परमेश्वर कौन है और उसने आपके जीवन में क्या किया है।**

जब ये चीजें आपके जीवन में होने लगती हैं, तो आपका परमेश्वर-विश्वास बढ़ेगा जो आपकी गति और विश्वास से चलने की इच्छा को बढ़ाएगा।

मूल सत्य # 8 – आपकी आत्मिक यात्रा क्षण भर के चुनाव के लिए उबलती रहती है।

अपने पूरे जीवन के हर पल, आप अपने आप में विश्वास करने या परमेश्वर पर भरोसा रखने के लिए हर पल चुनाव लेते जाएँगे।

अपने आप पर विश्वास। अपने स्त्रोत के रूप में, जीवनरहित, सामर्थरहित, अपरिवर्तित जीवन (लगभग एक समान ही)

अपने स्त्रोत के रूप में परमेश्वर पर विश्वास – जीवन, सामर्थ, रूपांतरण

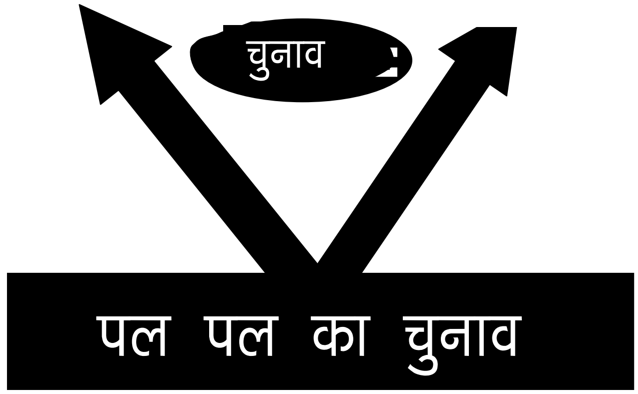

आप कौन सा चुनाव करेंगे?

अपने आप में विश्वास का परिणाम होगाः

- कोई विजय नहीं
- कोई स्वतंत्रता नहीं
- कोई चंगाई नहीं
- कोई रूपांतरण नहीं
- कोई खुशी नहीं
- कोई घनिष्ठता नहीं

परमेश्वर में विश्वास का परिणाम होगाः

- विजय
- स्वतंत्रता
- चंगाई
- रूपांतरण
- खुशी
- घनिष्ठता

<u>याद रखें कि आपकी यात्रा में ऐसे समय होंगे जहां आपः</u>

- **परमेश्वर की क्षमता पर संदेह करेंगे और अपने जीवन को रूपांतरित करने की इच्छा होगी।**
- **निराश होकर परमेश्वर से गुस्सा होंगे।**
- **अपने आप की निंदा करेंगे।**
- **हार मान लेना चाहेंगे**

दुःख की बात है, मैंने देखा है कि कई लोग विश्वास के मार्ग को छोड़ देते हैं। यह मुझे बहुत दुखी करता है क्योंकि जब वे ऐसा करते हैं, तो वे एकमात्र ऐसे व्यक्ति से दूर हो जाते हैं जो उनके जीवन में अंतर ला सकता है। जब हम परमेश्वर से दूर हो जाते हैं, तब सिर्फ जीवन का 'सामना करना' बचता है। मैं 'सामना करने' को ऐसे परिभाषित करता हूँ कि जब मनुष्य अपने जीवन में समस्याओं को ठीक करने के प्रयासों में असफल होता है तो वह उस दौरान दर्द को अस्वीकार करने, छिपाने, या असंवेदना उत्पन्न करने की कोशिश करता है। इसलिए, जब आप हार मानने के लिए प्रलोभित होते हैंः

विश्वास का एक और कदम उठाएँ।

जब आप के भीतर का सबकुछ यह कहता है, 'वापस मुड़ें,' विश्वास का एक और कदम उठाएँ। तब आप परमेश्वर से उत्तर माँगेंगे, और जब आप उन्हें नहीं प्राप्त करेंगे, तब विश्वास का एक और कदम उठाएँ। जब आप सहन कर के बाहर दर्द में होते हैं, तो विश्वास का एक और कदम उठाएँ। जब आप परेशान होते हैं, उलझन में रहते हैं, और घबराए हुए होते हैं, तो विश्वास का एक और कदम उठाऍ। जब आप ऐसा करते हैं, तो आप उन सभी का अनुभव करेंगे जिसका वायदा परमेश्वर ने किया है, उससे भी कहीं अधिक। रोमियों 5:17 में 'बहुत अधिक' का हिस्सा पाया गया हैः

*'... तो जो लोग अनुग्रह और धर्म रूपी वरदान **<u>बहुतायत</u>** से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात यीशु म**सीह के द्वारा अवश्य ही <u>अनन्त</u>** <u>जीवन</u> **में राज्य करेंगे**।'*

जीवन पर शासन करना, मसीह के जीवन द्वारा अपने आप को बदलना, चित्रण करना और जीना है।

<u>क्या आप यूहन्ना 6:66 या यूहन्ना 6:68 के मसीही बनेंगे?</u>

मैं यूहन्ना 6:68 के मसीही के साथ यूहन्ना 6:66 के मसीही की तुलना करके इस अध्ययन को समाप्त करना चाहता हूँ। सबसे पहले यूहन्ना 6:66-68 देखें।

'इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे <u>उल्टे फिर गए</u> और उसके बाद <u>उसके साथ न चले</u>। तब यीशु ने उन बारहों से कहा, क्या तुम भी चले जाना चाहते हो? शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु, हम किस के पास जाएं? अनन्त <u>जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं</u>।' यूहन्ना 6:66-68

<u>यूहन्ना 6:66 के मसीही क्या है?</u>

इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके (यीशु) साथ न चले।

दुर्भाग्य से, कई मसीही मसीह से दूर हो जाते हैं और स्रोत के रूप में स्वयं पर वापस चले जातें हैं। यह मैं 'यूहन्ना 6:66' मसीहियों के विषय में कहता हूँ। एक व्यक्ति का यूहन्ना 6:66 मसीही बनने का क्या कारण है?

- वे इस सच्चाई को नहीं जानते कि मसीह अपना जीवन उनमें जीता है, इसलिए वे मसीह द्वारा जीने के बजाए अपनी देह से जीते रहते हैं।
- वे नहीं जानते कि वास्तव में मसीह में विश्वास से कैसे चलना है, इसलिए वे परमेश्वर की सहायता से अपनी क्षमताओं पर विश्वास से चलते रहते हैं।
- वे मसीह में विश्वास से चले हैं, लेकिन वे किसी भी परिवर्तन का अनुभव करने के लिए लंबे समय तक नहीं चले हैं और वे निराश हो गए और स्रोत के रूप में स्वयं पर वापस आ गए।

यूहन्ना 6:66 मसीही वे हैं जिसने आखिरकार यह निष्कर्ष निकाला है कि विश्वास का मार्ग काम नहीं करता है और विश्वास से चलना छोड़ देते हैं और स्वयं पर स्रोत के रूप में वापस आ जाते हैं।

यूहन्ना 6:68 मसीही क्या है?

'शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु हम किस के पास जाएँ? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।'

पतरस और बाकी के बारह शिष्यों ने क्या निष्कर्ष निकालाः

मसीही जीवन जीने का एकमात्र तरीका यीशु ही है।
'मार्ग मैं ही हूँ...' यूहन्ना 14:6

शिष्यों ने महसूस किया कि यीशु पर निर्भर रहने के अलावा और कोई दूसरा तरीका नहीं था। उन्होंने मसीह में विश्वास के पर्याप्त कदम उठाए थे क्योंकि उनका मानना था कि जीवन जीने का वही एकमात्र स्रोत था।

इसलिए, मैं यूहन्ना 6:68 मसीही को परिभाषित करता हूँ जोः

- **यह सच्चाई जानता है कि मसीही जीवन इस विषय में है कि मसीह उनमें होकर जीवन जीता है।**
- **जो मसीह में विश्वास से चल रहा है।**
- **जो चल रहे आत्मिक परिवर्तन का अनुभव कर रहा है।**
- **जो यह समझता है कि जीवन जीने के लिए मसीह के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है।**

यूहन्ना 6:68 मसीही वह है जहाँ वे पर्याप्त रूपांतरण का अनुभव
करते हैं कि जो वे चाहते हैं वह केवल यीशु है।
उस समय वह उनका सबकुछ होगा।

अंतिम बिंदु महत्वपूर्ण है क्योंकि आपकी यात्रा में एक ऐसा समय होगा जब आपको पता चलेगा कि मसीही जीवन जीने का एकमात्र तरीका मसीह के द्वारा है। यही वह स्थान है जहाँ पौलुस फिलिप्पियों 3:8 में आया था, जब वह कहता हैः

'वरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ: जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूँ।'

मुझे इस बिंदु पर भरोसा है कि आप यूहन्ना 6:66 मसीही और यूहन्ना 6:68 मसीही के बीच स्पष्ट रूप से अंतर देखते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर आपको उसी निष्कर्ष पर लाए कि पतरस और पौलुस ने तब किया जब उन्हें समझाया गया कि ''मार्ग'' जो मसीह है, के अलावा और कोई दूसरा मार्ग नहीं था।

प्रोत्साहन के अंतिम शब्द

मैं इस अध्ययन से होकर गुजरने के लिए आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। मुझे विश्वास है कि पवित्र आत्मा इन सच्चाईयों को ले रहा है और आपके जीवन को प्रकाशित और रूपांतरित कर रहा है। आपके लिए मेरी निरंतर इच्छा और प्रार्थना वे शब्द हैं जिन्हें पौलुस ने फिलिप्पियों 3:14 में इस्तेमाल किया हैः

“दौड़ा चला जाता हूँ”

आपके लिए मेरी प्रार्थना यह है कि आप दौड़ेंगे और विश्वास का एक और कदम उठाएँगे। दौड़ते रहो और हार मत मानो और न कभी शरीर की ओर मुड़ो। दौड़ते रहो और परमेश्वर के अद्भुत और प्रेमपूर्ण अलौकिक कार्यों को अनुभव करें जो आपमें निवास करता है। उस स्थान की ओर दौड़ते रहो जहाँ आप पौलुस के साथ फिलिप्पियों 1ः 21 में कहेंगेः

‘मेरे लिए जीना मसीह है’

तुम यहाँ से कहाँ जाते हो ?

आपने लिविंग ए ट्रांसफॉर्मेड लाइफ इन क्राइस्ट नामक चार भागीय शिष्यता श्रृंखला में से एक पुस्तक अभी समाप्त कर ली है। इस श्रृंखला में दूसरी पुस्तक का नाम है - क्या आप अपनी सच्ची पहचान जानते हैं। यदि आप इस अध्ययन को पाने का आर्डर देना चाहते हैं, तो कृपया हमारी सेवकाई की वेबसाइट पर जाएं जो है- www.christislifeministries.com और स्टोर 1= के अंतर्गत देखें।

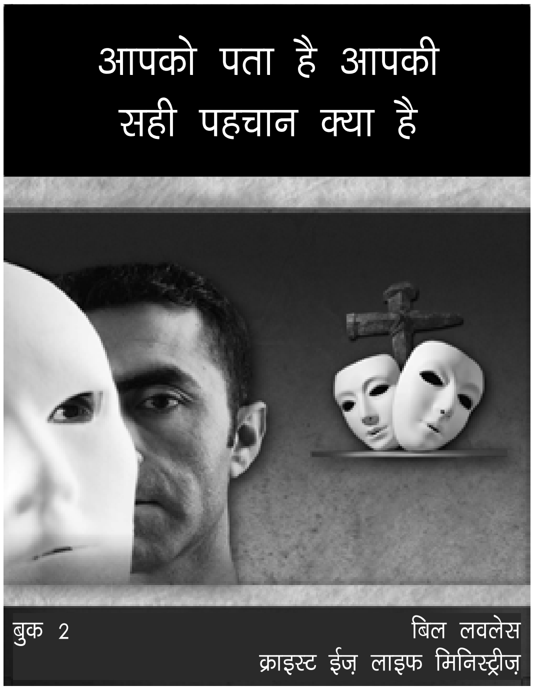

स्टोर 1= आपको लिविंग ए ट्रांसफॉर्मेड लाइफ इन क्राइस्ट नामक श्रृंखला मिल जाएगी। आप इस 1= के तहत देखेंगे पाठ्यक्रम को जिसका शीर्षक है क्या आप अपनी सच्ची पहचान जानते हैं? आप इस अध्ययन को ऑनलाइन खरीद सकते हैं या नीचे दिए गए हमारे ईमेल पते पर अपना ऑर्डर ईमेल कर सकते हैं। या, आप इन सामग्रियों को मुफ्त में डाउनलोड कर सकते हैं और जितनी चाहें उतनी प्रतियाँ बना सकते हैं। इस अध्ययन के लिए एक डीवीडी भी है जिसे कि आप स्टोर 1= से ऑर्डर भी कर सकते हैं या हमारी वेबसाइट के वीडियो सत्र के तहत इसे ऑनलाइन देख सकते हैं।

एक व्यक्तिगत नोट के लिएः परमेश्वर ने इस अध्ययन की सच्चाईयों का इस्तेमाल मुझे अपने बारे में कई झूठी मान्यताओं से मुक्त करने के लिए किया। यह वास्तव में एक जीवन-रूपांतरण करने वाला अध्ययन है।

क्या आप जानते हैं कि आपकी सच्ची पहचान निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करेगीः

- **झूठी मान्यताएँ जो हम अपने बारे में विश्वास करते हैं।**
- **हमारी पुरानी पहचान कैसे बनाई गई थी।**
- **हमें एक नई पहचान देने के लिए क्रूस पर परमेश्वर ने क्या किया।**
- **मसीह में हमारी असली पहचान क्या है।**
- **आपकी वास्तविक पहचान का अनुभव करने के लिए आपके जीवन को बदलने की परमेश्वर की प्रक्रिया।**

क्राइस्ट ईज़ लाइफ मिनिस्ट्रीज़

(1-1-14)